धनबाद, रविवार
27 अप्रैल 2025
वर्ष : 10 अंक : 327
पृष्ठ : 12
मूल्य : 3/-

हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

नई पत्र वार्ता

सोच आगे की ...

आतंकी संगठन 'हिज्ब उत तहरीर' से जुड़े वासेपुर धनबाद के तार, एटीएस ने की छापेमारी

एक महिला समेत 4 संदिग्ध गिरफ्तार, हथियार समेत कई आपत्तिजनक समान बरामद

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

धनबाद/ रांची : झारखंड एटीएस ने शनिवार को धनबाद के एक बड़े आतंकी संगठन के झारखंड विंग का खुलासा करते हुए चार संदिग्ध आतंकियों को गिरफ्तार किया है. सभी गिरफ्तार संदिग्ध प्रतिबंधित आतंकी संगठन 'हिज्ब उत तहरीर' से जुड़े हुए हैं. पहलगाम की घटना के बाद मिले साक्ष्य के आधार पर झारखंड एटीएस ने की छापामारी.

झारखंड में प्रतिबंधित आतंकी संगठन हिज्ब उत तहरीर के झारखंड मॉड्यूल का खुलासा किया गया है. झारखंड एटीएस की टीम ने गुप्त सूचना के आधार पर धनबाद जिले में छापेमारी कर इस मॉड्यूल का खुलासा किया है. झारखंड एटीएस की तरफ से दी गई जानकारी में बताया गया है कि हट , हिज्ब उत तहरीर को विधि-विरूद्ध क्रिया कलाप निवारण अधिनियम-1967 के तहत दिनांक-10.10.2024 को भारत सरकार द्वारा प्रतिबंधित किया गया है. इस संगठन के प्रतिबंधित होने के पश्चात यह देश का पहला

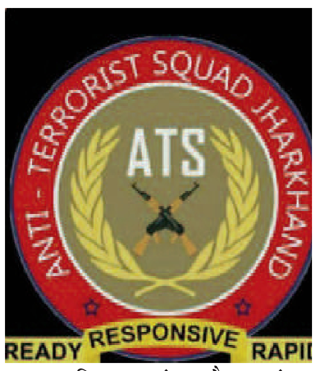

आपराधिक कांड है.झारखंड एटीएस के द्वारा दी गई जानकारी में यह बताया गया है कि झारखंड एटीएस को गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि हिज्ब उत तहरीर अलकायदा और आईएसआईएस और कुछ अन्य प्रतिबंधित आतंकवादी संगठनों से जुड़े कुछ व्यक्ति राज्य के अन्य युवकों को अपने नेटवर्क से जोड़कर सोशल मीडिया और अन्य माध्यमों के द्वारा गुमराह कर रहे हैं.साथ ही साथ धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा देते हुए राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का संचालन कर रहे हैं.इसी सूचना के आधार पर इन संगठनों से संबंधित व्यक्तियों के द्वारा धनबाद जिला में अवैध आर्म्स

के व्यापार के साथ साथ राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है. इस मामले में कार्रवाई करते हुए एक महिला समेत चार संदिग्ध आतंकियों को गिरफ्तार किया गया है. पहलगाम आतंकी हमले को लेकर टीम ने वासेपुर के नूरी मस्जिद के आसपास दबिश दिया. बाद में गफ्फार कॉलोनी के अमन सोसायटी, वासेपुर बाईपास रोड पहुंची. जहां जांच में जुटी की.शहर के बैंक मोड़ और भूली थाना क्षेत्र में एटीएस टीम कार्रवाई में जुटी हुई है. जबकि भूली ओपी में डीएसपी लॉ एंड आर्डर नौशाद आलम के नेतृत्व में छापेमारी की गई.स्थानीय लोगों की माने तो इस दौरान एटीएस टीम ने एक महिला समेत तीन लोगों को गिरफ्तार किया है. विदित हो कि जम्मू कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को टूरिस्ट को निशाना बनाते हुए आतंकी हमला हुआ था, जिसमें 26 पर्यटक को धर्म पूछ कर गोली मारी गई थी. जिसके बाद से ही देश भर में अवांछित लोगों की धर पकड़ शुरू हो गई है. वासेपुर से यूसुफ, कौसर को गिरफ्तार गया है. पुलिस ने शमशेर नगर से अयान की पत्नी शबनम को अपने साथ ले गए, शबनम गोविंदपुर की रहने वाली है.बताया जा रहा है अयान आधार कार्ड में सुधार का काम किया करता था.

गिरफ्तार लोगों में गुलफाम हसन उम्र, करीब 21 वर्ष, पे0-फैयाज हुसैन, सा०-अलीनगर थाना-बैंकमोड़ जिला-धनबाद. आयान जावेद, उम्र करीब 21 वर्ष, पे०-जावेद आलम, सा०-अमन सोसाईटी थाना-भूली ओपी जिला-धनबाद. मो. शहजाद आलम, उम्र करीब 20 वर्ष, पे०-मो० मिनहाज आलम, सा०-अमन सोसाईटी गेट नंबर -04 नियर भूली बाईपास ओपी-भूली थाना-बैंक मोड़ जिला-धनबाद.शबनम परवीन, उम्र करीब 20 वर्ष, पति-आयान जावेद, सा०-शमशेर नगर गली नंबर-03 थाना-बैंकमोड़, ओपी-भूली जिला-धनबाद.

गिरफ्तार लोगों के पास से हथियार सहित कई डिजिटल एविडेंस मिले हैं.गिरफ्तार संदिग्ध आतंकियों के पास से दो पिस्टल, 12 कारतूस, कई इलेक्ट्रॉनिक्स डिवाइस जैसे मोबाइल फोन, लेपटॉप के साथ साथ भारी मात्रा में प्रतिबंधित संगठनों से संबंधित दस्तावेज और पुस्तक बरामद किए गए हैं. इस संबंध में एटीएस, रांची में आपराधिक कांड दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी गई है.

ब्रीफ न्यूज

झारखंड में रह रहे 10 पाकिस्तानी नागरिकों को वापस फिलहाल नहीं भेजा जाएगा

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

रांची, : झारखंड में पाकिस्तान के 10 नागरिक निवास कर रहे हैं, जिनमें तीन नाबालिग हैं। ये नागरिक झारखंड की राजधानी रांची, धनबाद, जमशेदपुर और हजारीबाग में मौजूद हैं।

सूत्रों के अनुसार 10 में से सात पाकिस्तानी नागरिकों को लॉन्ग टर्म वीजा प्राप्त है जबकि तीन पाकिस्तानी नागरिक नाबालिग हैं। तीनों फिलहाल वीजा पर अपने ननिहाल में रह रहे हैं।

विदेशी नागरिकों का मामला देखने वाले एक सीनियर पुलिस अधिकारी ने नाम नहीं छापने की शर्त पर बताया कि केंद्रीय गृह मंत्रालय ने यह निर्देश दिया है कि लॉन्ग टर्म वीजा वाले पाकिस्तानी नागरिकों को वापस पाकिस्तान फिलहाल नहीं भेजा जाएगा। उन्होंने बताया कि जो सात पाकिस्तानी नागरिक लॉन्ग टर्म वीजा पर यहां रह रहे हैं। वे फिलहाल पाकिस्तान वापस नहीं जाएंगे। **शेष पृष्ठ-4.....**

झारखंड के 10 जिलों में 28 को होगी ओलावृष्टि और वज्रपात

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

रांचीः झारखंड के 10 जिलों में रविवार को ओलावृष्टि, वज्रपात और 40 से 50 किलोमीटर की गति से तेज हवा चलने की आशंका है।

इसे लेकर मौसम विभाग ने ऑरेंज अलर्ट जारी किया है।

विभाग के अनुसार 28 अप्रैल से दी तीन मई तक राज्य भर में तेज हवा, गर्जन, वज्रपात और ओलावृष्टि होने की आशंका है। यह स्थिति बंगाल की खाड़ी से झारखंड में नमी के प्रवेश करने से बनी है। मौसम में होनेवाले इस बदलाव की वजह से झारखंड के अधिकांश जिलों में लोगों को प्रचंड गर्मी से राहत मिलेगी और तापमान में 5 से 10 डिग्री तक की गिरावट होगी।

मौसम खराब होने पर बरते ये सावधानी मौसम विभाग ने गर्जन और वज्रपात की स्थिती में लोगों से बिजली के खम्भों के पास नही रहने, ऊंचे स्थानों पर चढ़ने से बचने, टूटे- फूटे मकान के पास नही रहने तथा पेड़ के नीचे खड़ा नहीं रहने की अपील की है।

शेष पृष्ठ-4.....

झारखंड निवेश के नए अवसर को है तैयार

झारखंड ने स्पेन व स्वीडेन के निवेशकों को खनिजों की नीलामी व उपकरण निर्माण में निवेश के लिए दिया न्यौता

पीपीटी के माध्यम से बताया पूरे देश के खनिज का 40 प्रतिशत हिस्सेदारी झारखंड की

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

रांची : मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व में स्पेन व स्वीडेन के दौरे पर गये प्रतिनिधिमंडल ने निवेशकों को खनन क्षेत्र में विशेषकर खनिज उपकरण निर्माण व खनिज ब्लॉक की नीलामी में निवेश का न्यौता दिया. खान सचिव अरवा राजकमल व निदेशक राहुल कुमार सिन्हा ने निवेशकों के समक्ष पीपीटी के माध्यम से विस्तृत जानकारी दी.

झारखंडः खनिज संपदा का धनी राज्य, निवेश और विकास के नये अवसर

बताया गया कि झारखंड राज्य देश के उन क्षेत्रों में से एक है, जो प्राकृतिक खनिज संपदा से समृद्ध है. यह राज्य भारत के कुल खनिज संसाधनों का लगभग 40% हिस्सा

समेटे हुए है. झारखंड खनिज उत्पादन के क्षेत्र में देश में पांचवें स्थान पर है और इसकी खनिज संपदा भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करती है. राज्य कोयला, लोहा, तांबा, बॉक्साइट, चूना पत्थर, डोलोमाइट, क्वाट्र्जाइट, मैंगनीज, यूरेनियम, चाइना क्ले, ग्रेफाइट, सोपस्टोन, फायर क्ले, फॉस्फोराइट, एपेटाइट, क्वाट्र्ज, फेल्ड्सपार, सोना और पाइरोक्सीनाइट जैसे अनेकों बहुमूल्य खनिजों से परिपूर्ण है.झारखंड को कोकिंग कोल का एकमात्र उत्पादक होने का गौरव प्राप्त है. इसके अलावा राज्य देश में कोयला भंडार में दूसरा, लौह अयस्क में दूसरा, तांबा अयस्क में तीसरा और बॉक्साइट में सातवां स्थान रखता है. इन सभी तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि झारखंड देश के खनिज मानचित्र में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.

झारखंड में खनिज संसाधनों का विभाजन

झारखंड के विभिन्न प्रमंडलों में खनिज संसाधनों का व्यापक वितरण है. राज्य के कई जिलों में खनिजों का विपुल भंडार मौजूद है, जिससे राज्य को न केवल खनिज उत्पादन में बढ़त मिलती है, बल्कि उद्योगों के लिए भी बड़े अवसर उपलब्ध होते हैं.

खनन उपकरण निर्माण में निवेश के अवसर **शेष पृष्ठ-4.....**

एटीएस ने कोडरमा में की छापेमारी, एक युवक हिरासत में

कोडरमा, (एजेंसी) : । जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले के बाद केंद्रीय एजेंसियां अलर्ट पर है। आतंकी गतिविधियों पर पैनी नजर रखी जा रही है। इसी सिलसिले में एटीएस की टीम ने शनिवार की सुबह प्रतिबंधित संगठनों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए कोडरमा में छापेमारी की। बताया जाता है कि कोडरमा थाना अंतर्गत दर्जीचक से भी एक युवक को हिरासत में लिया गया है। उक्त युवक का नाम सहजाद बताया जा रहा है जिसे एटीएस की टीम अपने साथ ले गई।

उक्त युवक धनबाद का रहनेवाला है जो शुक्रवार की शाम ही कोडरमा दर्जीचक स्थित अपने फूफा के घर आया था। छापेमारी के दौरान धनबाद में दंपति के घर से कई धार्मिक किताबें और अन्य दस्तावेज भी बरामद किये गये हैं।

एटीएस की टीम ने आयान और उसकी पत्नी शबनम को हिरासत में लिया है। कोडरमा के दर्जी चक में एटीएस की छापेमारी और गिरफ्तारी के बाबत कोडरमा थाना प्रभारी अरविन्द कुमार ने बताया कि एटीएस की छापेमारी की जानकारी मिली है।

मंत्री हाफिजुल हसन को सामाजिक कल्याण एवं राजनीति के लिए डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

रांची। आज भारत वर्चुअल ओपन एजुकेशन यूनिवर्सिटी के कन्वोकेशन समारोह में झारखंड सरकार के अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री श्री हाफिजुल हसन को सामाजिक क्षेत्र में जनहित के उत्कृष्ट कार्यों के लिए डॉक्टरेट की मानद उपाधि (ढंऊ) से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके लिए, उनके परिवार और समस्त झारखंडवासियों के लिए गर्व का क्षण है। यह प्रतिष्ठित उपाधि माननीय मंत्री जी को आदरणीय बाबा दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी के दिखाए मार्ग और उनके पिता मरहूम हाजी साहब की आम लोगों की सेवा की सीख पर चलते हुए प्राप्त हुई है। उनके आदर्शों ने श्री हसन को समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान और सामाजिक न्याय के लिए निरंतर प्रेरित किया है।

झारखंड सरकार में अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री और पूर्व में खेलकूद, कला, संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री के रूप में, श्री हसन ने समावेशी विकास और सभी समुदायों के कल्याण के लिए उल्लेखनीय कार्य किए हैं। इस सम्मान के बारे में श्री हसन ने कहा, ह्लयह उपाधि मेरे लिए एक सम्मान होने के साथ-साथ मेरी जिम्मेदारी को और **शेष पृष्ठ-4.....**

प्रधानमंत्री मोदी ने 51 हजार युवाओं को नियुक्ति पत्र बांटते हुए कहा, आपके हाथों में है देश का भविष्य

नई दिल्ली,(एजेंसी) : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये हजारों युवाओं को नियुक्ति पत्र बांटे और कहा कि आज भारत सरकार ने विभिन्न विभागों में 51 हजार से अधिक युवाओं को पक्की नौकरियां दी हैं। ये महज नियुक्तियां नहीं हैं, बल्कि ये देश के भविष्य निर्माण की बड़ी शुरूआत है।

पीएम मोदी ने आयोजित रोजगार मेला में देश के 51,000 से अधिक युवाओं को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए सरकारी नियुक्ति पत्र सौंपे हैं। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने युवाओं को बधाई देते हुए उन्हें देश के भविष्य का निमार्ता बताया और भारत की युवा शक्ति की सराहना की। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, कि आज भारत सरकार के विभिन्न विभागों में 51,000 से अधिक युवाओं को पक्की सरकारी नौकरियां दी गई हैं। ये सिर्फ नियुक्ति

पत्र नहीं हैं, ये राष्ट्र निर्माण के बड़े संकल्पों की शुरूआत हैं। उन्होंने अपने संबोधन में आईएमएफ की रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बना रहेगा। उन्होंने कहा, कि आज का समय भारत के युवाओं के लिए अभूतपूर्व अवसरों का समय है। हमारी सरकार हर कदम पर यह सुनिश्चित कर रही है कि युवाओं को अधिक से अधिक रोजगार और स्वरोजगार के अवसर मिलें।

रोजगार के लाखों नए अवसर

प्रधानमंत्री मोदी ने मेक इन इंडिया को मजबूती देने के लिए शुरू किए गए नए मैन्युफैक्चरिंग मिशन का जिक्र भी किया। यहां उन्होंने कहा कि इससे एमएसएमई सेक्टर और लघु उद्यमियों को बल मिलेगा, साथ ही रोजगार के लाखों नए अवसर भी उत्पन्न होंगे।

नारीशक्ति की सराहना

प्रधानमंत्री मोदी ने यूपीएससी परिणामों में महिलाओं की शानदार उपलब्धियों की प्रशंसा करते हुए कहा, कि हमारी बेटियां आज हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। नौकरशाही से लेकर अंतरिक्ष और विज्ञान के क्षेत्र तक, नारीशक्ति नई बुलंदियों को छू रही है। उन्होंने बताया कि सरकार ग्रामीण महिलाओं के लिए विशेष योजनाएं चला रही है, जैसे बैंक सखी, कृषि सखी और 90 लाख से अधिक स्वयं सहायता समूह जो देशभर में 10 करोड़ से ज्यादा महिलाओं को सशक्त बना रहे हैं।

विश्व मंच पर भारतीय युवाओं को मिलेगा अवसर

प्रधानमंत्री ने बताया कि जल्द ही भारत में वेव्स 2025 (विश्व दृश्य-श्रव्य एवं मनोरंजन शिखर सम्मेलन) का आयोजन होगा, जिसका केंद्र बिंदु भारत के युवा क्रिएटर्स होंगे। यह पहल भारत की रचनात्मक प्रतिभा को वैश्विक मंच पर लाने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

संक्षिप्त खबर

सलूजा गोल्ड इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों ने किया स्थानीय पंचायत का शैक्षणिक भ्रमण

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

गिरिडीह : सलूजा गोल्ड इंटरनेशनल स्कूल के कक्षा छठी से दसवीं तक के कुल 189 विद्यार्थियों ने शिक्षक रजनीकांत,चंद्रमल्लिका घोष , जीतेन्द्र साहू के नेतृत्व में शनिवार को स्थानीय पंचायत मोतिलेदा का शैक्षणिक भ्रमण किया और पंचायत के काम काज के बारे में जानकारी प्राप्त की। इस शैक्षिक भ्रमण का उद्देश्य विद्यार्थियों को स्थानीय शासन के बारे में जानकारी देना था। सेल्फ गवर्नेंस क्या है और इसका क्या महत्व हैं। जिनको बच्चे पुस्तकों में पढ़ते हैं, उसकी जानकारी प्राप्त करवाना था। इस भ्रमण की सूचना पूर्व में ही विद्यार्थियों को दे दी गयी थी और सामाजिक विज्ञानं शिक्षक सुप्रियो घोष एवं देबदीप तिवारी ने उन्हे समझा दिया गया था कि किन अलग अलग विषयों पर प्रश्नोत्तर के माध्यम से पंचायत अधिकारीयों से संवाद करना हैं और जानकारी प्राप्त करनी है। विद्यार्थियों को इस संवाद से यह समझने का मौका मिला कि कैसे पंचायत स्थानीय स्तर पर विकास और ग्रामीण जीवन में सुधार के लिए कैसे काम करती है और स्थानीय स्तर पर अलग अलग स्तर के लोगों के लिए क्या क्या योजनाएं और सुविद्याएं सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गयी है।इस भ्रमण का मुख्य उद्देश्य छात्रों को वास्तविक परिस्थितियों से जोड़कर उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करना था। जिससे उन्हें सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होने का मौका मिला एवं सीखे ज्ञान को वास्तविक दुनिया से जोड़ने का अवसर मिला। भ्रमण के दौरान छात्रों को टीम वर्क, संवाद और समस्या समाधान जैसे व्यक्तिगत कौशल विकसित करने का मौका मिला।

नि:शुल्क मोतियाबिंद शिविर का आयोजन किया जाएगा:जेएमएम

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

गिरिडीह : नया परिषदन भवन में झामुमो के जिलाध्यक्ष संजय सिंह द्वारा एक बैठक आहूत की गई। इस बैठक के द्वारा शंकर नेत्रालय, बोक्सा ट्रस्ट बोकारो एव मंत्री नगर विकास सुदिव्य कुमार के सहयोग से एक निःशुल्क मोतियाबिंद शिविर का आयोजन दुर्गा माता शिशु विधा मंदिर, मोहनपुर, टुंडी रोड, गिरिडीह में किया जाएगा।इसी संबंध में श्री सिंह ने कहा कि ये शिविर में मोतियाबिंद का इलाज देश के अच्छे चिकित्सकों द्वारा निशुल्क किया जाना है। देश के प्रतिष्ठित शंकर नेत्रालय ने बोक्सा ट्रस्ट बोकारो और मंत्री सुदिव्य के सहयोग से ही कैम्प लगाया जा रहा है।

व्यवहार न्यायालय परिसर में मासिक लोक अदालत का आयोजन किया गया

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

गिरिडीह : मासिक लोक अदालत का आयोजन झालसा के निदेर्शानुसार तथा प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार गिरिडीह अरविंद कुमार पांडेय के आदेशानुसार तथा सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकार गिरिडीह (प्रभार) के नेतृत्व में व्यवहार न्यायालय परिसर में मासिक लोक अदालत का आयोजन किया गया जिसमें कुल 5 बेंचो (पीठों) का गठन किया गया । बेंचों में अपराधिक मामलो, वन विभाग के मामलो, उत्पाद विभाग के मामलो, एन आई एक्ट (चेक बाउंस) एवं बिजली से संबंधित मामलों एवं अन्य मामलों का निष्पादन किया गया। जिसमें कुल 17 मामले निष्पादित हुए एवं कुल 19,000 रू. राजस्व की प्राप्ति हुई। इस मासिक लोक अदालत में अपर न्यायाधीश, अपर कुटुंब न्यायालय अमित कुमार, जिला एवं सत्र न्यायाधीश चतुर्थ हरिओम कुमार, अन्य न्यायिक दंडाधिकारीगण, लीगल एंड डिफेंस काउंसिल के सदस्य एवं पैनल अधिवक्ता गण की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

मुफसिल थाना पुलिस ने 3 अभियुक्त को किया गिरफ्तार

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

गिरिडीह : परमेश्वर यादव उर्फ परमेश्वर महतो कांड सं0-109 /2025 दिनांक-23.04.2025 धारा-334 (1)/303 (2) बीएनएस के अप्राथमिकी अभियुक्त 1. इरसाद अली, उम्र 62 वर्ष, पे. स्व. मोहम्मद अली, 2. हसरत अली, उम्र 32 वर्ष, पे. इरसाद अली, दोनो सा.बरवाडीह, गाजीनगर, थाना-मुफ्फसिल, जिला-गिरिडीह को गिरफ्तार कर न्यायालय में उपस्थापन हेतु उचित मार्गरक्षी दल के साथ भेजा गया। न्यायालय का जीआर एनओ -858/14 धारा-341/323/447/324/325/34 भादवि के वारंटी अभियुक्त परमेश्वर यादव उर्फ परमेश्वर महतो, उम्र 57 वर्ष पिता-दशरथ यादव उर्फ दशरथ महतो, साकिन- महुआटांड, थाना-मुफ्फसिल, जिला-गिरिडीह को 26 अप्रैल को गिरफ्तार कर न्यायालय में उपस्थापन हेतु उचित मार्ग रक्षी दल के साथ भेजा जा रहा है।

पहलगाम में आतंकवादी घटना पर गिरिडीह में आक्रोश

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

गिरिडीह : झामुमो कार्यकताओं ने गृहमंत्री और रक्षामंत्री का किया पुतला दहन। पाकिस्तान मुदार्बाद के नारे लगाए। पहलगाम की घटना पर देश के गृहमंत्री और रक्षामंत्री इस्तीफा दें।झारखंड मुक्ति मोर्चा ने गिरिडीह टावर चौक पर पहलगाम में आतंकवादी घटना पर आक्रोश मार्च निकालकर देश के गृहमंत्री और रक्षामंत्री का पुतला दहन किया।कार्यक्रम का नेतृत्व कर रहे जिला अध्यक्ष संजय सिंह ने कहा कि आतंकवादी हमले में मारे गए सभी लोगों के प्रति झारखंड मुक्ति मोर्चा शोक संवेदना प्रकट करती है। कैंडल जलाकर मारे गए सभी लोगों को भावभीनी श्रद्धांजलि भी दी गई। जिलाध्यक्ष ने कहा कि देश की सुरक्षा करने में गृहमंत्री और रक्षामंत्री फेल हैं। इसलिए दोनों को नैतिकता के आधार पर घटना की जिम्मेदारी लेते हुए तुरंत इस्तीफा दे देना चाहिए। उन्होंने कहा कि पुलवामा के बाद पहलगाम में आतंकवाद की घटना ने देश की सुरक्षा व्यवस्था

पर सवाल खड़ा कर दिया है। भाजपा के शासन में ही संसद पर हमला हुआ , अक्षरधाम मंदिर पर हमला हुआ।

कारगिल युद्ध, पठानकोट हमला जैसे कई उदाहरण हैं। जिससे यह पता चलता है कि देश कमजोर हाथों में है। संजय सिंह ने कहा कि नरेन्द्र मोदी देश का संवेदनशून्य प्रधानमंत्री है। 24 घंटा भी नहीं हुआ और वो चुनावी सभा को संबोधित करने बिहार पहुंच गए। झामुमो ने मांग की कि देश की सुरक्षा के जिम्मेदार लोगों को तुरंत इस्तीफा देना चाहिए। कार्यक्रम में जिला उपाध्यक्ष अजीत कुमार पप्पु, दिलीप मंडल, राकेश कुमार रॉकी, कृष्ण मुरारी शर्मा, तेज लाल मंडल, दिलीप रजक, सुमित कुमार, प्रमिला मेहरा, ज्योति सोरेन, मो. तूफान, हरिमोहन कंधवे,मो. हसनैन अली,अशोक राम, अनिल राम, मो. सरफुद्दीन,मो. नूर,मो. नसीम, मो. नौशाद, संजय वर्मा, रूपेश रजक , मेहताब मिर्जा,मो. आदिल, मो. राज, मो. शेरू , अभय सिंह, राकेश गुप्ता , राजेश बंसल, टुना सिंह, सचिन शर्मा , अनुभव सिंह, विद्याभूषण सिंह सहित सैकडों लोग मौजूद थे।

गिरिडीह सनशाइन द्वारा सिविल कोर्ट परिसर में वाटर कूलर किया स्थापित

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

गिरिडीह : इनर व्हील क्लब ऑफ गिरिडीह सनशाइन द्वारा इस भीषण गर्मी को ध्यान में रखते हुए सिविल कोर्ट परिसर में एक वाटर कूलर स्थापित किया गया। यह जनहित में उठाया गया एक सराहनीय कदम है जिससे कोर्ट परिसर में आने-जाने वाले लोगों को ठंडा पानी उपलब्ध हो सकेगा। इस जल शीतल मशीन का उद्घाटन प्रधान जिला न्यायाधीश एके पांडे एवं क्लब की अध्यक्ष सोनाली तारवे ने संयुक्त रूप से किया। यह प्रोजेक्ट पूनम सहाय की देखरेख में सफलतापूर्वक संपन्न हुई। इस अवसर पर क्लब की सचिव राखी झुनझुनवाला, सदस्य मनीषा कपीस्वे एवं बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अधिवक्ता प्रकाश सहाय भी उपस्थित रहे। इनर व्हील क्लब ऑफ गिरिडीह सनशाइन समाज सेवा में निरंतर सक्रिय रहते हुए जनकल्याण के लिए प्रेरणादायक कार्य कर रहा है।

विधानसभा समिति ने किया खूंटी जिले का दौरा

खूटी, (एजेंसी)। झारखंड विधानसभा की अनागत प्रश्न क्रियान्वयन समिति ने शनिवार को खूंटी जिले का दौरा किया। इस अवसर पर समिति के सदस्य सह माननीय विधायक कोलेबिरा नमन विक्सल कोनगाड़ी ने परिसदन भवन के सभागार में जिले के विभिन्न विभागों के अधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक में समिति के सदस्य सह विधायक खूंटी विधानसभा क्षेत्र, राम सूर्या मुंडा मुख्य रूप से उपस्थित थे। बैठक की कार्रवाई प्रारंभ होने से पूर्व उपायुक्त लोकेश मिश्रा, पुलिस अधीक्षक अमन कुमार, उप विकास आयुक्त श्याम नारायण राम ने समिति के सदस्यों का स्वागत किया। बैठक में समिति की ओर से जिले में लंबित अनागत प्रश्नों के समाधान और विभिन्न विकासात्मक योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गई। इनमें मुख्य रूप से ग्रामीण कार्य विभाग के तहत सड़क निर्माण, विशेष प्रमंडल के तहत पुल निर्माण, शिक्षा विभाग के तहत विद्यालय भवन का जीर्णोद्धार, अबुआ आवास के लाभुकों को ससमय किस्त की राशि का भुगतान, स्वास्थ्य विभाग प्रबंध समिति की नियमित बैठक सहित अन्य मामलों से जुड़े अनागत प्रश्नों के आलोक में किए गए कार्रवाई की जानकारी ली गई। समिति की ओर से कहा गया कि इन दिनों हाथियों का प्रकोप बढ़ गया है। हाथियों की ओर से खाद्यान्न के कारण लोगों के घरों को क्षतिग्रस्त किया जा रहा है। इसे रोकने के लिए खाद्यान के रख रखाव कें लिए गोदाम निर्माण कराने की आवश्यकता है। साथ हीं लोगों को दी जाने वाली मुआवजा राशि में वृद्धि करने और हाथियों के खाने पीने के लिए अलग से कॉरिडोर निर्माण करने पर वन प्रमंडल पदाधिकारी कें साथ चर्चा की गई।

सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में दादा-दादी,नाना-नानी सम्मान समारोह का आयोजन

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

गिरिडीह : विद्या भारती योजनानुसार सरस्वती शिशु विद्या मंदिर,बरगंडा में शनिवार को दादा-दादी,नाना-नानी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।समिति उपाध्यक्ष सतीश्वर प्र. सिन्हा,प्रधानाचार्य आनंद कमल एवं अभिभावक श्याम नारायण पांडे ने संयुक्त रूप से दीप जलाकर पुष्प अर्पित किया। कार्यक्रम में उपस्थित दादा-दादी,नाना-नानी को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। मंच संचालन अरविंद त्रिवेदी एवं धन्यवाद ज्ञापन सिन्हा ने किया।मौके पर प्रधानाचार्य आनंद कमल ने कहा कि दादा-दादी, नाना-नानी हमारे जीवन के सबसे

महत्वपूर्ण स्तंभ होते हैं। उनके प्रेम मार्गदर्शन और आशीर्वाद हमें जीवन के कठिन रास्तों पर आगे बढ़ने की ताकत देते हैं।हमें उनके साथ दिखाए गए हर पल को संजोकर रखना चाहिए और उनके अनुभवों से सीख लेकर अपने जीवन को और भी बेहतर बनाना चाहिए। मौके पर बच्चों ने दादा-दादी पर भाव नृत्य एवं गीत प्रस्तुत किया।तत्पश्चात भैया बहनों ने अपने दादा-दादी,नाना-नानी के चरण धोकर उनका तिलक, वंदन कर मिठाई खिलाया एवं पैर छूकर आशीर्वाद प्राप्त किया। सतीश्वर प्रसाद सिन्हा ने कहा कि यह कार्यक्रम बच्चों में भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों के प्रति रुचि व अपने से बड़ों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव विकसित करता है। अभिभावक सत्यनारायण पांडेय ने कहा कि आधुनिक युग में बच्चे संस्कार व संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं ऐसे में सरस्वती शिशु विद्या मंदिर के विद्यालयों में उनमें संस्कार भरने के लिए इस प्रकार का आयोजन किए जाते हैं जो प्रशंसनीय हैं।कार्यक्रम को सफल बनाने में राजेंद्र लाल बरनवाल,मनीषा पांडेय, रूपम, अन्नु कुमारी,कल्पना कुमारी, नम्रता गुप्ता,निलेश कुमार एवं समस्त आचार्य दीदी का सराहनीय योगदान रहा।

झारखंड की पारंपरिक पाटकर चित्रकला की बारीकियों से अवगत हुए विद्यार्थी

डीपीएस बोकारो में 'चित्रांजलि' कार्यशाला आयोजित, प्रसिद्ध कलाकार विजय चित्रकार ने सिखाए गुर

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

बोकारो : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ विभिन्न विधाओं में अपने विद्यार्थियों के समग्र विकास की कटिबद्धता के तहत शनिवार को डीपीएस बोकारो में एक विशेष कार्यशाला आयोजित की गई। चित्रांजलि नामक इस कार्यशाला में विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने झारखंड की पारंपरिक पाटकर चित्रकला की बारीकियां सीखीं। जमशेदपुर (पूर्वी सिंहभूम) के अमाडुबी पानीजिया ग्रामीण पर्यटन केंद्र से आमंत्रित पाटकर पेंटिंग के लब्ध-प्रतिष्ठित कलाकार विजय चित्रकार ने बच्चों को इस लोक-कला के गुर सिखाए। किस प्रकार कागज की शीटों को जोड़कर लंबे स्क्रॉल, एकल शीट अथवा कपड़े पर प्राकृतिक रंगों की मदद से विभिन्न तरह के चित्र बनाए जाते हैं, इसके बारे में सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक जानकारी उन्होंने दी। विद्यार्थियों ने नदी तट के पत्थरों, हल्दी, पेड़ों की पत्तियां, पुटुस के फूल आदि से प्राकृतिक रंग तैयार

करने का प्रशिक्षण लिया। उन्हें बताया गया कि पाटकर पेंटिंग को कपड़े या कागज पर बनाया जा सकता है। चित्रों को लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए प्राकृतिक रंगों में नीम या बबूल की गोंद मिला दी जाती है। इसके बाद बच्चों ने श्री चित्रकार के निर्देशन में रामायण, महाभारत, आदिवासी जनजीवन, करम पर्व आदि विषयों पर चित्रांकन कर अपनी रचनात्मक प्रतिभा दिखाई। तत्पश्चात उनके द्वारा तैयार चित्रों की आकर्षक प्रदर्शनी भी लगाई गई। इस क्रम में विजय चित्रकार ने सृष्टि की उत्पत्ति, प्रकृति व मानवीय जीवन-चक्र पर आधारित अपनी एक स्क्रॉल पेंटिंग दिखाते हुए क्रमवार उसकी व्याख्या की।

नई पीढ़ी को जोड़ने से ही जीवित रहेगी कला : विजय चित्रकार

कार्यशाला के प्रशिक्षक 55 वर्षीय विजय चित्रकार ने बताया कि पाटकर चित्रकला स्थानीय संताली कथाओं, प्रकृति, ग्रामीण जीवन और पौराणिक कथाओं पर आधारित होती है। पश्चिम बंगाल, ओडिशा और झारखंड में विकसित हुई पाटकर पेंटिंग किस्सागोई, गीत-गायन और रोचक चित्रों के मिश्रण की कला है। धार्मिक कथाएं, पौराणिक कहानियां और दैनिक सामाजिक जीवन लोक-कथाओं के तत्वों के जरिए दशार्ने का यह माध्यम है। खासकर, हिंदू महाकाव्यों, जैसे-रामायण और महाभारत आदि की झलक इसमें मिलती है। 10 साल की उम्र से ही अपने दादा से सीखकर पाटकर पेंटिंग कर रहे विजय चित्रकार ने ऐसी विधाओं में बच्चों की जागरुकता को जरूरी बताया। कहा कि नई पीढ़ी को जब ऐसी लोक-कलाओं से जोड़ेंगे, तभी इसे आगे बढ़ाया और जीवित रखा जा सकता है। विदित हो कि विजय राष्ट्रीय स्तर की कई कार्यशालाओं में भी शामिल होकर झारखंड की इस कलात्मक धरोहर को एक खास पहचान दिलाने की दिशा में संघर्षरत हैं।

लोक-कलाओं और कलाकारों का प्रोत्साहन जरूरी : प्राचार्य

इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य डॉ. ए एस गंगवार ने आमंत्रित कलाकार विजय चित्रकार को स्मृति-चिह्न भेंटकर एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

उन्होंने कहा कि विद्यालय में इस तरह के आयोजनों के जरिए एक तरफ जहां छात्र-छात्राओं में कलात्मक गुणों का विकास कर उन्हें देश की गौरवपूर्ण परंपरा व कला-संस्कृति से अवगत कराया जाता है, वहीं दूसरी लोक-कलाओं और संबंधित कलाकारों को प्रोत्साहित भी किया जाता है। वास्तव में यह प्रोत्साहन जरूरी है। इस दिशा में सभी को आगे आना चाहिए। तभी हमारी पुरानी लोक-कलाएं संरक्षित, सुरक्षित और संवर्द्धित हो सकेंगी। विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए प्राचार्य ने कहा कि कला शब्दों की सीमाओं से परे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की भाषा है। बच्चे अच्छा सीखें तथा रचनात्मक और अच्छा कलाकार भी बनें।

निदेशक डीआरडीए ने की विभिन्न योजनाओं की समीक्षा

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

गिरिडीह : लक्ष्य अनुरूप प्रगति नहीं होने पर निदेशक डीआरडीए ने नाराजगी जताई, कई अधिकारियों से पूछा गया स्पष्टीकरण। बिरसा हरित ग्राम योजना और बिरसा सिंचाई कूप संवर्धन योजना में लक्ष्य के अनुरूप शत-प्रतिशत प्रगति सुनिश्चित करें। गिरिडीह प्रखंड सभागार में निदेशक डीआरडीए रंथू महतों ने मनरेगा, पीएम आवास योजना, बिरसा हरित ग्राम योजना, अबुआ आवास योजना समेत विभिन्न विकासात्मक योजनाओं की बारी-बारी समीक्षा कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। समीक्षा के क्रम में

कार्यों में कोताही बरतने वाले कर्मियों को सख्त निर्देश दिया गया कि सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं में प्रगति सुनिश्चित करें और लोगों को इसका लाभ दें। बैठक के दौरान निदेशक डीआरडीए ने बारी-बारी से सभी महत्वकांक्षी योजनाओं की समीक्षा की तथा मनरेगा के सभी आयामों में प्रगति सुनिश्चित करने का सख्त निर्देश दिया। बैठक के दौरान निदेशक डीआरडीए ने अलगुंदा पंचायत के पंचायत सचिव के अनधिकृत रूप से अनुपस्थित रहने के कारण उनके आज का वेतन स्थगित किया गया। इसके साथ ही करहरबारी पंचायत में योजनाओं की प्रगति की समीक्षा के क्रम में पाया गया कि मात्र 11 योजनाएं ही पूर्ण है और 80 योजनाओं में जियो टैग नहीं किया गया है। इस संबंध में निदेशक डीआरडीए ने नाराजगी जाहिर करते हुए तत्कालीन ग्राम रोजगार सेवक और वर्तमान पंचायत सचिव से स्पष्टीकरण की मांग की गई। इसके अलावा अकदोनीकला पंचायत में पीएम आवास योजना ग्रामीण वर्ष 2024-25 में सैंक्शन गैप अधिक रहने के कारण स्पष्टीकरण किया गया। अलगुंदा पंचायत के समीक्षा के क्रम में पाया गया कि अम्बेडकर आवास योजना के तहत 16 आवास पेंडिंग है, इस संबंध में संबंधित पंचायत सचिव का वेतन रोकने का निर्देश दिया गया। इसके अलावा अबुआ आवास में वर्ष 2023- 24 में तृतीय किस्त मिलने के उपरांत 60 दिन से अधिक होने के उपरांत भी करहरबारी, खावा, चुंजका, तेलोडीह, उदनाबाद में सबसे अधिक आवास लंबित पाया गया, इस संबंध में सभी संबंधित अधिकारियों को एक सप्ताह में प्रगति सुनिश्चित करने का सख्त निर्देश दिया गया। इसके अलावा मनरेगा के तहत संचालित योजनाओं की समीक्षा के क्रम में जियो टैग एवं एमआर जेनरेट नहीं करने के आलोक में संबंधित ग्राम रोजगार सेवक से स्पष्टीकरण की मांग की गई। साथ ही बिरसा हरित ग्राम योजना तथा बिरसा सिंचाई कूप संवर्धन योजना में प्रगति लाने का निर्देश दिया गया। बैठक में प्रमुख, गिरिडीह पूनम देवी, जिला परियोजना पदाधिकारी, प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी, जेई, ऐई, सभी पंचायत सचिव, रोजगार सेवक के अलावा अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे.

गिरिडीह में आतंकवादी एवं पाकिस्तान के खिलाफ पुतला दहन

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

गिरिडीह: उपस्थित विभाग मंत्री अनुप यादव, विश्व हिन्दू परिषद जिला सह मंत्री शिवपुजन कुमार, बजरंग दल सह संयोजक नागेश्वरविशकरमा , जिला प्रशासनिक प्रमुख अरूण वर्णवाल,कोसा अध्यक्ष अनिल चंद्रवंशी जिला संयोजक उज्जवल तिवारी,समस्ता प्रमुख गौतम कुमार, सह सत्संग प्रमुख दिपक कुमार,प्रयोजना प्रमुख जय प्रकाश सिंह, नगर उपाध्यक्ष ज्योति शाह,मिथुनचंद्रवंशी,पवन कंधवे,शिव शक्ती शाह, सुदेशसाव,अंशित गुप्ता प्रकाश मंडल,अजय चैहान, सावन कुमार, रविन्द्र स्वर्णकार, , विक्की कुमार साव,शिव गौरव पाण्डेय, मनीष कुमार, कृष्ण कुमार स्वर्णकार,संजय साव,सोनु गुप्ता,संघ परिवार से मुकेश रंजन जी,भाजप से प्रफेसर विनीत जी,हरविंद्र सिंह बगहा,आशिस चटर्जी, विशाल यादव, समीर राज,पुरुषोत्तम वर्मा गायत्रीपरिवारसे पुनम वर्णवाल, अजित भदानी,सैकड़ो कार्यकरता सामिल थे.

Page 3_Page 3.qxd 4/26/2025 10:22 PM Page 1

संक्षिप्त खबर

पहलगाम आतंकी घटना में मारे गए पर्यटकों के खिलाफ भाकपा माले ने मुगमा में निकाला कैंडल मार्च

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

निरसा : पहलगाम में आतंकी हमले में मारे गए लोगों के विरोध में भाकपा माले के एग्याकुण्ड प्रखंड कमिटी की ओर से 26 अप्रैल को देर शाम मुगमा कार्यालय से ईसीएस रिजनल हास्पीटल तक कैंडल मार्च निकाला गया और नुक्कड़ सभा की गई.मौके पर माले के निरसा विधायक कामरेड अरूप चटर्जी ने कहा कि 22 अप्रैल को पहलगाम में आतंकी हमले मे केन्द्र व राज्य सरकार की चूक है. इस घटना से पूरा देश मर्माहत है और भारत के लोग आतंकवादियों को सबक सिखाना चाहते हैं.आतंकवादियों को कड़ी से कड़ी सजा देना होगा.सुरक्षा चुक की जिम्मेदारी गृह मंत्री अमित शाह को लेना होगा.पहलगाम आतंकी हमले में मारें गए नागरिकों को विनम्र श्रद्धांजलि दी गई.

मौके पर जिप सदस्य सह एग्याकुण्ड प्रखंड के सचिव कामरेड बादल बाउरी, नागेन्द्र कुमार, मनोरंजन मल्लिक, नागेन्द्र कुमार, मनोरंजन मलिक,पीएल मुर्मू, जगदीश शर्मा, रामजी यादव, रोशन मिश्रा, असीम घोष, जोगेन्दर सिंह, सतेन्द्र चौहान, संजीत राऊत, जयंत बाउरी,राजू बाउरी, मोनिका मंडल, शिवानी दास, जमुना देवी, इन्दु देवी,सुरेश मरांडी, दिनेश हांडी, मुकेश बाउरी, स्वरुप बाउरी, राकेश बाउरी, सुभाष रविदास, गुरु रविदास, कैलाश महतो,केके गौरव आदि लोग शामिल थे.

नेशनल हाइवे पर मिला हिरण का शव

पलामू, (एजेंसी)। डालटनगंज-रांची एनएच 39 पर सदर थाना क्षेत्र के लहलहे पोलपोल में भारत पेट्रोल पंप के समीप एक हिरण का शव मिला। अज्ञात वाहन के धक्के से हिरण की मौत होने की संभावना जतायी गयी है। घटना शनिवार शाम की है। हिरण का शव सड़क पर पड़ा हुआ था। रास्ते से गुजर रहे लोगों ने इस संबंध में जानकारी दी। वन विभाग को भी सूचना देने की बात कही गयी है। घटना को लेकर चर्चा है कि किसी अज्ञात वाहन ने हिरण को टक्कर मारी और फरार हो गया। यह भी चर्चा है कि भागने के क्रम में फोरलेन के फ्लाइओवर से हिरण ने छलांग लगा दी। उंचाई से गिरने के कारण उसकी मौत हो गयी। हालांकि पुष्ट जानकारी अबतक नहीं मिली है। इधर, घटना की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची एवं मामले की जानकारी ली। स्थानीय वन सुरक्षा समिति को हिरण के शव की देखभाल में लगाया गया है। वन विभाग के पहुंचने पर पोस्टमार्टम के बाद हिरण के शव को दफनाया जाएगा।

धनबाद के लॉ एंड ऑर्डर पीयूष सिन्हा निरसा समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचे

लॉ एंड आर्डर ने पंडरा रेफरल अस्पताल में शिफ्ट करने हेतु निरीक्षण किया,विरोध के सुर उठना शुरू

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

निरसा : समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र को पंडरा रेफरल अस्पताल में शिफ्ट करवाने और अविलम्ब चालू करवाने को लेकर शनिवार को लॉ एंड ऑर्डर पीयूष सिन्हा पंडरा पहुंचे. अस्पताल का निरीक्षण किया. निरीक्षण के दौरान निरसा बीडीओ इंदरलाल ओहदार , निरसा समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र प्रभारी डॉ संजय कुमार पासवान , बीपीएम धनेश्वर राम सहित अन्य कर्मचारी मौजूद थे. वहीं निरीक्षण के पश्चात एडीएम श्री सिन्हा ने निरसा केंद्र प्रभारी डॉ संजय कुमार को निर्देश देते हुए कहा कि जल्द से जल्द पंडरा रेफरल अस्पताल चालू कराया जाए. डॉ संजय ने कहा कि आदेश का पालन होगा मगर पानी और सुरक्षा की समस्या है.प्रश्न उठता है कि निरसा समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र राष्ट्रीय उच्च पथ पर वर्षों से अस्थित है. बाजार स्कूल कालेज बैंक से घिरा हुआ है.दुर्भाग्य बस हुई दुर्घटनाओं में तत्काल लोगों को अस्पताल नजदीक होने का लाभ मिलता रहा है. गंभीर हालत होने पर प्राथमिक उपचार के बाद तत्काल धनबाद अस्पताल भेजा जाना संभव है. फिर निरसा स्वास्थ्य केंद्र को यहां से सात किलोमीटर पंडरा रेफरल अस्पताल शिफ्ट करने का क्या औचित्य है. दूसरी बात की पंडरा अस्पताल निरसा जामताड़ा रोड पर सात किलोमीटर दूर है. इस सड़क पर एमपीएल की हाइवा चलती है. आएदिन हाइवा से सड़क दुर्घटना में सड़क जाम रहती है , ऐसे हालात में गंभीर रूप से घायल को बचा पाना क्या सम्भव होगा ?.जब पंडरा में अस्पताल भवन बन ही चुका है तो वहां के लोगों के लिया दूसरा अस्पताल का यूनिट क्यों नही बना दिया जाता ? यह एक गम्भीर प्रश्न है.सरकार को इस पर विचार करना चाहिये.

क्या कहते है निरसा के जनप्रतिनिधि

निरसा प्रखंड प्रमुख आशा देवी ने कहा कि पंडरा रेफरल असल चालू हो इससे हमें कोई दिक्कत नहीं है, परंतु वहां पर नये सिरे से अस्पताल को संचालित किया जाए.नए सिरे से डॉक्टर ,स्टाफ, नर्स सारी सुविधाएं वहां पर होंगे . अगर यहां की व्यवस्था को बंद कर रेफरल ले जाया जाता है तो इनका मैं घोर विरोध करती हूं. वही 20 सूत्री उपाध्यक्ष इहशाक बेग ने कहा कि निरसा से पूरा विधि व्यवस्था को बदलकर पंडरा किया जाता है तो इस पर हमारा पुरजोर विरोध रहेगा. निरसा एक घना आबादी वाला क्षेत्र है यहां से स्वास्थ्य केंद्र चले जाना निरसा के लिए दुर्भाग्य पूर्ण बात होगी. चाहिये तो यह निरसा केंद्र को ट्रामा सेंटर बना दिया जाए.निरसा प्रखंड कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डीएन प्रसाद यादव का कहना है कि हमलोग किसी भी हाल में निरसा स्वास्थ्य केंद्र को पंडरा में जाने नहीं देंगे. अगर ले जाना ही है तो नए सिरे से वहां व्यवस्था किया जाए. अगर यहां से पूरा व्यवस्था चल गया तो इसका हम लोग पुरजोर विरोध करेंगे. हमलोग सड़क से लेकर सदन तक जाने के लिए तैयार हैं.अभी जो स्थिति है जीटी रोड में बराबर रोड एक्सीडेंट की दुर्घटनाएं होती रहती है और निरसा में एकमात्र सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बना हुआ है. प्रतिदिन एक्सीडेंट की घटनाएं होती रहती है न जाने कितने आदमी के जान स्वास्थ्य केंद्र रहने से बचा है.उन्होंने कहा कि पांडरा रेफरल अस्पताल जाते-जाते एक्सीडेंट हुए व्यक्ति अपना दम तोड़ देगा.इसका हम लोग पुरजोर विरोध करने को लेकर तत्पर रहेंगे. निरसा समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र को नहीं हटाने के लिये एक ज्ञापन प्रखंड विकास पदाधिकारी को जल्द से जल्द दूंगा.एनसीपी के जिला अध्यक्ष उमेश गोस्वामी ने कहा कि अस्पताल के चले जाने से निरसा की जनता प्रभावित होगी ।निरसा के साथ-साथ अन्य दूर दराज के गांव के लोगों को भी दिक्कत होगा.अगर यहां से स्वास्थ्य केंद्र गया तो हम लोग विरोध प्रदर्शन करते हुए स्वस्थ केंद्र के बाहर धरना पर बैठ जाएंगे.

अभाकाम ने हजारीबाग में पहलगाम के आतंकी घटना के विरोध में निकाला कैंडल मार्च

रैली में शामिल कायस्थ परिवार ने काली पट्टी बांधकर जताया आक्रोश,पीएम मोदी से कार्रवाई की मांग की

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

हजारीबाग : अखिल भारतीय कायस्थ महासभा हजारीबाग के तत्वावधान में जिलाध्यक्ष अरुण प्रभात सिन्हा के नेतृत्व में पहलगाम में हुई आतंकी हमले व नरसंहार के विरोध में एक विशाल कैंडल के साथ हांथ में काली पट्टी बांधकर रैली निकाली गई. रैली में शामिल तमाम लोगों ने अपने - अपने सीने में तख्तियां टांग कर पाकिस्तान के खिलाफ तथा आतंकवादियों को सजा देने की मांग की गई. रैली में अभाकाम के जिला ईकाई हजारीबाग के चित्रांश एवं पदाधिकारीगण सहित उतरी मंडल के के अनेकों पदाधिकारीगण सम्मिलित हुए. जिलाध्यक्ष अरुण प्रभात ने कहा कि आतंकवादियों ने यह हमला उन सैलानियों पर नहीं पूरे भारत के 140 करोड़ जनता के दिलों पर की है.उन्होंने भारत सरकार से मांग किया की इस हमले और नरसंहार के जबाव में पाकिस्तान सैनिकों के उपर प्रहार किया जाना चाहिए. पाकिस्तान को सबक सिखाया जाना चाहिए. रैली में शामिल लोगों में पाकिस्तान के खिलाफ काफी आक्रोश देखा गया. रैली में भारी संख्या में चित्रांशों सहित कार्यकारी जिलाध्यक्ष बृज मोहन प्रसाद,जिला महामंत्री शशिकांत,भैया संतोष कुमार सिन्हा, डा.अरुण कुमार, विभूति सिन्हा, संजय सिन्हा, श्रीमती अर्चना सिन्हा,डा.सरिता सिन्हा, सुशील प्रसाद,अनूप सिन्हा, रूपेश बिहारी लाला, नवीन सिन्हा,संजय कुमार,संदीप सिन्हा सहित सैकड़ों ने भाग लिया.

धनबाद सांसद ढुल्लू महतो ने कपूरिया फुटबॉल मैदान में फिजिकल ट्रेनिंग ले रहे युवाओं से मिले

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

महुदा : धनबाद सांसद ढुल्लू महतो शनिवार की सुबह कपूरिया के फुटबॉल मैदान पहुंचे.मैदान में ग्रामीण फिजिकल ट्रेनिंग सेंटर के द्वारा युवाओं के डिफेंस सेक्टर में निःशुल्क तैयारी एवं सेंटर की उपलब्धियों से रूबरू हुए. उन्होने सेंटर में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे युवक युवतियों से मिलकर जानकारी ली एवं उन्हें प्रोत्साहित किया. उन्होंने युवाओं से कहा कि ईमानदारी पूर्वक मेहनत करें, मंजिल आपके कदम चूमेगी. उन्होंने कहा कि वे 24 घंटे आपके साथ खड़ा है.उन्होंने सेंटर के संचालन में हर प्रकार की सहयोग करने का आश्वासन दिया.स्मरण रहे कि इनके प्रशिक्षक रंजीत दसौंधी टाटा स्टील के पूर्व खिलाड़ी है और सेवानिवृत होने के पश्चात ग्रामीण बच्चो को डिफेंस सेक्टर में जाने के लिए प्रेरित करते है.

इसको लेकर उन्होने गांव गांव घुमकर युवक युवतियों को प्रशिक्षित करने का बीड़ा उठाया है. प्रशिक्षक रंजीत दसौंधी ने बताया कि सेंटर से प्रशिक्षण प्राप्त 50 से ज्यादा युवक-युवतियों का चयन डिफेंस सेक्टर व पुलिस विभाग में हुआ है, जो देश के विभिन्न कोने कोने में पदस्थापित है.मैं हमेशा बच्चों को निःशुल्क प्रशिक्षण देता हूं.मौके पर मुख्य रूप से विधायक प्रतिनिधि सोनू श्रीवास्तव, पंसस संजय भट्ट, जिप प्रतिनिधि जितेश रजवार सहित दर्जनों लोग मौजूद थे.

मैथन बीएसके कॉलेज में फ्रेशर्स डे के साथ सत्र पर छात्र छात्राओं का किया गया स्वागत

मैथन : मैथन स्थित बीएसके कॉलेज में शनिवार को फ्रेशर्स डे यानी नए सत्र के छात्र-छात्राओं का स्वागत समारोह का आयोजन किया गया. उद्घाटन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉक्टर डीपी सिंह एवं पूर्ववर्ती छात्र रहे रुद्र प्रताप सिंह ने दीप प्रज्वलित कर किया.इस दौरान छात्र छात्राओं ने अपने नृत्य संगीत एवं मनमोहन अभिनय से उपस्थित लोगों के मन मोह लिया. छात्रों ने एक से बढ़कर एक नृत्य एवं संगीत का प्रदर्शन किया साथ ही महाविद्यालय में पहुंचे नए छात्रों का दिल खोलकर स्वागत भी किया. इस मौके पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉक्टर डीपी सिंह ने कहा कि विद्यालय के अध्यनरत छात्रों द्वारा नए सत्र के छात्रों का स्वागत समारोह से महाविद्यालय के शैक्षणिक वातावरण में मधुरता आएगी. उन्होंने कहा कि यह एक नई यात्रा की शुरूआत है जहां नए

छात्र ज्ञान दोस्ती और अनुभवों को साझा करेंगे.

बेहतर माहौल में शिक्षा ग्रहण कर पाएंगे. वहीं पूर्ववर्ती छात्र रहे रुद्र प्रताप सिंह ने कहा कि नए छात्र महाविद्यालय में पहुंचकर एक नए शैक्षणिक माहौल में अध्ययन करते हैं और आगे अपने भविष्य के सीढीओ पर बढ़ते रहते हैं. महाविद्यालय में शैक्षणिक माहौल बेहतर मिले इसके लिए यह आयोजन काफी उत्साहवर्धक है. इससे नए एवं अध्यनरत छात्रों में समन्वय एवं शिक्षा के गुणात्मक सुधार होगा. कार्यक्रम मैं डॉक्टर अंजली कुमारी, डॉक्टर इशिता भट्टाचार्या, डॉक्टर एसके सिंह, सुमिता खालखो, डॉ कमलेश कुमार सहित अन्य मौजूद थे. कार्यक्रम को सफल बनाने में रितिक चटर्जी, शहबाज हुसैन, शेख गुलफराज, श्रीतिक कुमार, राकेश कुमार सहित अन्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

भव्य सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ मनाया गया मिथिला एकेडमी पब्लिक स्कूल का 34वां वार्षिक उत्सव इंद्रधनुष

बोकारो के बौद्धिक व सांस्कृतिक विकास में मिथिला सांस्कृतिक परिषद का योगदान प्रशंसनीय : निदेशक प्रभारी बीके तिवारी

अरुण पाठक

बोकारो : मिथिला सांस्कृतिक परिषद, बोकारो द्वारा संचालित व सीबीएसई, नई दिल्ली से प्लस टू तक की शिक्षा प्रदान करने के लिए संबद्धता प्राप्त मिथिला एकेडमी पब्लिक स्कूल, सेक्टर 4 ई का 34वां वार्षिकोत्सव इंद्रधनुष शुक्रवार की शाम भव्य सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ बहुत धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया गया। यह कार्यक्रम स्कूल प्रांगण में आयोजित किया गया, जिसमें छात्रों शिक्षकों, अभिभावकों और अतिथियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम का आरंभ गीता उपदेश से किया गया जिसमें बच्चों ने अध्याय 3 के कर्म योग के श्लोक को गाकर वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

समारोह के मुख्य अतिथि बोकारो स्टील प्लांट (बीएसएल) के निदेशक प्रभारी बी के तिवारी, बीएसएल के मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन) व मिथिला एकेडमी पब्लिक स्कूल के अध्यक्ष हरि मोहन झा, विद्यालय सचिव प्रमोद कुमार झा, संरक्षक प्रभात कुमार, मिथिला सांस्कृतिक परिषद के महासचिव नीरज चौधरी, विद्यालय के प्राचार्य अशोक कुमार पाठक एवं गणमान्य अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। छात्रों द्वारा प्रस्तुत किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रम इस समारोह के मुख्य आकर्षण रहे जिसमें भगवती वंदना जय जय भैरवि असुर भयाउनि का सुमधुर गायन, गणेश वंदना पर मनोहारी नृत्य सहित अन्य प्रस्तुतियों में माटी के रंग, कव्वाली, वामण अवतार, पंचतत्व, झिझिया व नागपुरी लोक नृत्य एवं नन्हे बच्चों द्वारा राज कपूर के अविस्मरणीय यादों को नृत्य में पिरोकर प्रस्तुत कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री तिवारी सहित अन्य अतिथियों ने विद्यालय की शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक गतिविधियों के लिए मेधावी विद्यार्थियों को प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। विद्यालय प्राचार्य अशोक कुमार पाठक ने स्वागत भाषण में विद्यालय की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि श्री तिवारी को मिथिला पेंटिंग, पाग व डोपटा भेंटकर विद्यालय के अध्यक्ष हरि मोहन झा व सचिव पी के झा ने सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि बीएसएल के निदेशक प्रभारी बी के तिवारी ने अपने संबोधन में कहा कि विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम और उनकी रचनात्मकता इस बात का प्रमाण है कि हमारे आने वाली पीढ़ी न केवल प्रतिभाशाली हैं बल्कि अपने मूल्यों और परंपराओं के प्रति भी जागरुक है। श्री तिवारी ने विद्यालय के वार्षिकोत्सव पर मिथिला एकेडमी पब्लिक स्कूल के पदाधिकारियों, शिक्षकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों, विद्यालय की संचालक संस्था मिथिला सांस्कृतिक परिषद के पदाधिकारियों व सदस्यों को बधाई दी और कहा कि मिथिला सांस्कृतिक परिषद हमारे शहर बोकारो की बहुत ही प्रतिष्ठित संस्था है। बोकारो के बहुआयामी विकास में विशेष रूप से बौद्धिक व सांस्कृतिक विकास में इस शहर की संस्थाओं का जिक्र करें तो उनमें यह संस्था (मिथिला सांस्कृतिक परिषद) बहुत ही ऊंचा स्थान रखती है। परिषद द्वारा मिथिला एकेडमी पब्लिक स्कूल का संचालन प्रशंसनीय है।

उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि सफलता के लिए कड़ी मेहनत जरूरी है। शार्टकट व अनैतिक उपायों से प्राप्त सफलता स्थाई नहीं होती है। शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान, गुण व संस्कार का विकास होता है। आप के व्यवहार में शिक्षा झलकनी चाहिए। जिस विद्यालय से आपका नाम जुड़ा है उसमें मिथिला शब्द है और मिथिला अपने आप में एक समृद्ध संस्कृति है, जिसके मूल में त्याग, तपस्या व ज्ञान की गंगा प्रवाहित होती है।

अध्यक्ष हरि मोहन झा ने अपने संबोधन में कहा कि आज बच्चों द्वारा प्रस्तुत अद्भुत सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यालय के विकास को दर्शाता है। उन्होंने बच्चों से अपनी प्रतिभा व रुचि के अनुरूप कैरियर चयन के लिए प्रेरित किया। सचिव प्रमोद कुमार झा ने कहा कि प्रयास और अनुशासन हमें जीवन में बड़ी सफलता प्राप्त करने के लिए

आश्वस्त करते हैं। प्राचार्य अशोक कुमार पाठक ने कहा कि अपने सपनों को साकार करने के लिए निरंतर प्रयास करते रहें और अपने माता-पिता और गुरुजनों का मान बढ़ाएं। मंच का संचालन आर्यन, संजीव, पीयूसी, सानिया एवं एकता ने किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। यह दिन सभी के लिए प्रेरणा और उत्साह से भरा रहा।वार्षिकोत्सव न केवल मनोरंजन का माध्यम बना बल्कि शिक्षा और संस्कार का भी परिचायक रहा। यह दिन लंबे समय तक सभी के स्मृतियों में जीवित रहेगा।

इस मौके पर ए के कर्ण, राजेंद्र कुमार, अविनाश कुमार झा, डॉ यू सी झा, बटोही कुमार, डॉ विश्व कांत पाठक, के सी झा, श्रीमोहन झा, विजय झा, सुनील मोहन ठाकुर, मिहिर मोहन ठाकुर, अविनाश अवि, मिहिर झा, प्रदीप झा, सुदीप कुमार ठाकुर सहित काफी संख्या में बच्चों के अभिभावक उपस्थित थे।

ऑपरेशनल पैरामीटर्स एंड बॉटम मैनेजमेंट इन बीओएफ पर आयोजित एलईओ कार्यक्रम का समापन

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

बोकारो : शनिवार को ऑपरेशनल पैरामीटर्स एंड बॉटम मैनेजमेंट इन बीओएफ पर आयोजित दो दिवसीय एलईओ कार्यक्रम का समापन किया गया। दो दिवसीय एलईओ कार्यक्रम का उद्घाटन दिनाँक 25 अप्रैल को कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निदेशक प्रभारी बीरेंद्र कुमार तिवारी के द्वारा परम्परागत तरीके से दीप प्रज्वलन के साथ किया गया था। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के साथ अधिशासी निदेशक (संकार्य) सी आर महापात्रा, अधिशासी निदेशक (वित्त एवं लेखा) सुरेश रँगानी, मुख्य महाप्रबंधक-प्रभारी (स्टील) अरविन्द कुमार, मुख्य महाप्रबंधक (एसएमएस-न्यू एंड एमआरडी) आर के धवन के साथ विभिन्न विभागों के मुख्य महाप्रबंधक, विभागाध्यक्ष तथा वरीय अधिशासी उपस्थित थे। बोकारो स्टील प्लांट के साथ सेल की सभी सहयोगी इकाइयाँ दुगार्पुर स्टील प्लांट, भिलाई स्टील प्लांट, इस्को बर्नपुर, राउरकेला स्टील प्लांट तथा देश भर के इस्पात संयंत्रों जैसे टाटा स्टील, जिंदल स्टील, एनएमडीसी लिमिटेड, आरआईएनएल के प्रतिभागियों ने अपने प्लांट परफॉर्मेंस, बीओएफ संचालन, कन्वर्टर के लांस का संचालन तथा अनुरक्षण, हुड एंड स्कर्ट के अनुरक्षण जैसे विषय पर प्रस्तुतीकरण के माध्यम से अपने अनुभवों को एक दूसरे के साथ साझा किए। कार्यक्रम का सञ्चालन महाप्रबंधक (ज्ञानार्जन एवं विकास) डी आर टोप्पो के द्वारा तथा धन्यवाद ज्ञापन मुख्य महाप्रबंधक (ईसीएस) डी के सक्सेना के द्वारा किया गया।

आतंकवाद के खिलाफ युवाओं ने निकाली आक्रोश रैली

चतरा, (एजेंसी)। आतंकवाद के खिलाफ युवाओं ने शनिवार को जिले के टंडवा, सिमरिया, पत्थलगडा और अन्य प्रखंडों में आक्रोश रैली निकाली। सरस्वती संगम क्लब तेतरिया पत्थलगडा के युवाओं ने ट्रैक्टर में सवार होकर प्रखंड के कई गांव में आक्रोश रैली निकालकर आतंकवाद के खिलाफ नारा लगाया। सतीश कुमार, अवध कुमार, दुर्गेश, बसंत सहित अन्य के नेतृत्व में तेतरिया से आक्रोश रैली निकाल कर लेंबोईया, सिंघानी, पत्थलगडा होते सुभाष चौक पहुंचे।

संक्षिप्त खबरें

हर पाकिस्तानी नागरिक को बिहार से वापस जाना पड़ेगा : सम्राट चौधरी

पटना, (एजेंसी) : उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 26 हिंदू पर्यटकों की हत्या के बाद भारत सरकार ने आतंकवाद प्रायोजित करने वाले पाकिस्तान के नागरिकों का वीजा रद्द करने का जो फैसला लिया है, वह बिहार में भी पूरी तरह लागू होगा। हर पाकिस्तानी नागरिक को वापस जाना पड़ेगा।

उपमचुख्यमंत्री चौधरी ने कहा कि पाकिस्तानी नागरिकों को 48 घंटे में भारत छोड़ देने को कहा गया है और यह समय सीमा कल 27 अप्रैल को समाप्त हो रही है। उन्होंने कहा कि बिहार में जो पाकिसानी नागरिक रह रहे हैं , उनकी पहचान कर ली गई है और जरूरत पड़ी तो उन्हें डिपोर्ट भी किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वीजा रद्द होने के बाद किसी पाकिस्तानी के यहाँ रहने का कोई सवाल ही नहीं है। जो नहीं जाएंगे, उनके खिलाफ कार्रवाई होगी।

चौधरी ने कहा कि पहलगाम की आतंकी हिंसा भारत पर हमला है। दुःख और आक्रोश के इस समय में पूरा देश एकजुट है। इस पर किसी को राजनीति नहीं करनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि जब बिहार की धरती से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आतंकवाद के आकाओं को मिट्टी में मिला देने का कड़ा संकल्प ले लिया है, तो उसे पूरा करने में बिहार हर कदम पर साथ खड़ा रहेगा।

चौधरी ने कहा कि यदि पाकिस्तान ने पहलगाम नरसंहार में अपनी नापाक संलिप्तता स्वीकार करने के बजाय भारत से टकराव का रुख अपनाया और पिछले युद्ध के बाद हुआ शिमला समझौता रद्द कर दिया है, तो यह अच्छा ही है। अब भारत उनकी सीमा में घुसकर बदला लेगा।

पहलगाम आतंकी हमले के विरोध में कटिहार में भाजपा का कैंडल मार्च

कटिहार,(एजेंसी) :कटिहार में भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष मनोज राय के नेतृत्व में पहलगाम में हुए आतंकी हमले के विरोध में कैंडल मार्च निकाला गया। इस मार्च में बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकताओं ने भाग लिया और आतंकवाद के खिलाफ एकजुटता दिखाई।

जिला अध्यक्ष मनोज राय ने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में पूरा देश एकजुट है और आतंकियों को मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत पाकिस्तान को उसी की भाषा में जवाब देगा और आतंकियों की बची-खुची जमीन को भी मिट्टी में मिला दिया जाएगा।

कार्यक्रम में शामिल अन्य वक्ताओं ने भी आतंकी हमले की निंदा की और कहा कि पहलगाम के आतंकी हमले में अपनों को खोने का दर्द हर भारतीय को है। उन्होंने कहा कि बेगुनाह मासूम लोगों को मारने वाले इन आतंकियों को बिल्कुल बख्शा नहीं जाएगा।

कैंडल मार्च में प्राणपुर विधायक निशा सिंह, कोढा विधायक कविता पासवान, जिला परिषद अध्यक्ष रश्मि सिंह, महापौर उषा देवी अग्रवाल, पूर्व जिलाध्यक्ष चंद्रभूषण ठाकुर, भाजपा जिला महामंत्री सौरभ कुमार मालाकार, गोविंदअधिकारी, उपाध्यक्ष प्रेम प्रकाश चौधरी, शोभा जयसवाल, सीमा झा, पूर्व जिला महामंत्री वीरेंद्र यादव सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकताओं ने भाग लिया और पाकिस्तान मुदार्बाद, पाकिस्तान का अंत भारत का संकल्प जैसे नारे लगाकर विरोध प्रदर्शन किया। इस मौके पर कई भाजपा नेता और कार्यकर्ता उपस्थित थे।

एंकर कंपनी का लाखों रुपए मूल्य के डुप्लीकेट समान बरामद,कंपनी के प्रतिनिधि ने पुलिस के साथ की छापेमारी

अररिया (एजेंसी) : फारबिसगंज के छुआपट्टी स्थित केशरी इलेक्ट्रॉनिक्स नामक प्रतिष्ठान में शनिवार की शाम एंकर कंपनी के प्रतिनिधि ने स्थानीय पुलिस टीम के साथ छापेमारी की,जिसमें लाखों रुपए मूल्य के एंकर कंपनी के डुप्लीकेट इलेक्ट्रॉनिक्स समान बरामद किए गए।एंकर कंपनी के स्विच,बोर्ड सहित इलेक्ट्रिक वायर और अन्य उत्पादों का डुप्लीकेट पकड़ा गया।डुप्लीकेसी की शिकायत पर मुंबई से एंकर कंपनी के प्रतिनिधि मनोज गुप्ता फारबिसगंज पहुंचे और दुकानों में रेकी की तो पता चला कि फारबिसगंज में एंकर के डुप्लीकेट समानों की भरमार है और इन समानों की आपूर्तिकर्ता छुआपट्टी स्थित केशरी इलेक्ट्रॉनिक्स नामक प्रतिष्ठान है,जिसके बाद मनोज गुप्ता ने फारबिसगंज थाना में इसकी शिकायत की और फिर पुलिस अधिकारी और बलों के साथ केशरी इलेक्ट्रॉनिक्स नामक प्रतिष्ठान में छापेमारी की तो मामला सही पाया।छापेमारी में लाखों रुपए मूल्य के स्विच,बोर्ड,वायरिंग तार एवं अन्य समान बरामद किए गए।सबसे मजदूर तथ्य यह रहा कि कई ऐसे उत्पाद भी एंकर के लोगो के साथ मिले,जिनका उत्पादन कंपनी के द्वारा नहीं किया जाता है।मामले को लेकर मुंबई से पहुंचे मनोज गुप्ता ने बताया कि शिकायत के आलोक में पुलिस बलों के साथ की गई केशरी प्रतिष्ठान में छापेमारी में बहुतायत मात्रा में नकली एंकर के उत्पाद मिले हैं।जिनकी पैकिंग से लेकर समानों में डुप्लीकेसी है।समानों को जब्त कर थाना ले जाया जाएगा और मामले में प्रतिष्ठान मालिक के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई जाएगी।

भारत-नेपाल के पुलिस पदाधिकारियो की हुई संयुक्त बैठक

पूर्वी चंपारण,(एजेंसी) : जिला के कुण्डवा चैनपुर थाना परिसर में शनिवार को अनुमंडल पदाधिकारी सिकरहना एवं अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सिकरहना की संयुक्त अध्यक्षता में भारत-नेपाल सीमा समन्वय समिति की बैठक सम्पन हुई। बैठक में दोनों देश के बीच आपसी समन्वय बनाए रखने,मादक पदार्थ, शराब तस्करी सहित प्रतिबंधित समानो की तस्करी पर निगरानी रखने,दोनों देशों के बॉर्डर से जुड़े थानों द्वारा सूचना का ससमय आदान प्रदान करने पर विस्तृत चर्चा की गई। बैठक में थानाध्यक्ष कुंडवा चैनपुर राकेश कुमार,घोड़ासहन थानाध्यक्ष अनुज कुमार पांडेय,झरौखर थानाध्यक्ष अभय सिंह,जितना थानाध्यक्ष अमित कुमार, एसएसबी 71वी बटालियन के असिस्टेंट कमांडेंट आकाश कुमार यादव 20वी बटालियन के इंस्पेक्टर संदीप यादव, बार्डर से जुड़े नेपाल के विभिन्न थाना व चौकियों के प्रभारी के साथ नेपाल आर्म्ड पुलिस फोर्स के पदाधिकारियों ने हिस्सा लिया।

बाल संसद गठन में मोहम्मद वारिश प्रधानमंत्री व रिया बनी उप प्रधानमंत्री

फतेहपुर के प्लस टू हाई स्कूल जयपुर में हुआ बाल संसद का गठन

बच्चों को दी गई कर्तव्य बोध की जानकारी

फतेहपुर (गया): फतेहपुर प्रखंड के प्लस टू हाई स्कूल जयपुर में शुक्रवार को बाल संसद के गठन को लेकर प्रधानाध्यापक सुनील कुमार की अध्यक्षता में बैठक हुई। इसमें सर्वसम्मति से बाल संसद का गठन किया गया। इसमें मोहम्मद वारिश को प्रधानमंत्री और रिया कुमारी को उप प्रधानमंत्री चुना गया। वहीं प्रतिमा कुमारी शिक्षा मंत्री, पूजा शाओ स्वास्थ्य एवं स्वछता मंत्री, शेरू आसम सांस्कृतिक मंत्री, मो. अरबाज खेल मंत्री, सौरभ कुमार पर्यावरण एवं जल मंत्री, आयुष कुमार अनुशासन मंत्री बने। बाल संसद के चयनित सभी सदस्यों को विद्यालय के प्रधानाध्यापक सुनील कुमार ने उनके अधिकार व कर्तव्य का बोध कराया। उन्होंने बताया कि बाल संसद का गठन बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए किया जाता है। इसमें विद्यालय के शिक्षकों का सहयोग आवश्यक है। छात्रों के जीवन कौशल का विकास करने में बाल संसद की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक की कमी की स्थिति में बाल संसद के सदस्य अपने वर्ग कक्ष में बच्चों को अनुशासित रखते हुए अध्ययन कराने में उन्हें सहयोग करेंगे। बाल संसद गठन से बच्चों में नेतृत्व क्षमता का विकास होता है। किसी समस्या के निराकरण या अन्य विषयों पर निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है। विद्यालय भवन विद्यालय, परिसर तथा सरकारी संपत्ति को साफ-सुथरा तथा सुरक्षित रखने में बाल संसद की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। विद्यालय को आनंददाई बनाने तथा इसकी गतिविधियों एवं प्रबंधन में बाल संसद के सदस्य अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेंगे जिसका लाभ विद्यालय में अध्ययनरत सभी छात्र-छात्राओं को मिलेगा। बाल संसद के चयनित छात्रों ने अपनी-अपनी जिम्मेदारियां पूर्ण रूप से उठाने हेतु शपथ भी लिया। इस मौके पर विद्यालय के शिक्षकों द्वारा सभी चयनित बच्चों को माला पहनाकर सम्मानित किया गया। बाल संसद गठन का नेतृत्व सहायक अध्यापिका शोभा कुमारी ने किया। मौके पर विद्यालय के सभी शिक्षक तथा छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

फतेहपुर के ढिबर से सातवीं का छात्र लापता, मामला दर्ज

घर से क्रिकेट खेलने की बात कहकर निकला था छात्र रौनक

छात्र के मामा ने फतेहपुर थाना में कराया गुमशुदगी का मामला दर्ज

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

फतेहपुर (गया): फतेहपुर थाना क्षेत्र के ढिबर गांव से सातवीं कहा का छात्र रौनक कुमार उर्फ गोलू कुमार (12) तीन दिनों से रहस्यमय तरीके से लापता है। वह गुरुवार को शाम में क्रिकेट खेलने की बात कहकर घर से निकला था। रौनक के नहीं मिलने से परिजनों की बेचैनी बढ़ गई है। उनमें तरह-तरह की आशंकाएं पनपने लगी है। इधर, छात्र रौनक के मामा ने थाना में भांजा के गुमशुदगी का मामला दर्ज कराया है। ढिबर गांव निवासी रोहित कुमार ने बताया कि उसका भांजा रौनक का उसके पिता की मौत के बाद नानी घर में ही पालन-पोषण हो रहा है। वह ढिबर में ही एक निजी स्कूल में कक्षा सात में पढ़ता है। वह गुरुवार को स्कूल से पढ़ाई कर घर लौटा। इसके बाद शाम में घर से क्रिकेट खेलने की बात कहकर निकला था,उसके बाद वह घर वापस नहीं लौटा है। उसका सभी परिजनों के यहां तथा इधर-उधर काफी खोजबीन किया गया, लेकिन उसका कहीं पता नहीं चला। इसके बाद उसने अपने भांजा के लापता होने का मामला थाना में दर्ज कराया है। साथ ही उसे खोजने में पुलिस से मदद की गुहार लगाई है। इधर, रौनक के तीन दिन से लापता रहने व उसका कहीं कोई अता-पता नहीं चलने से परिजनों में किसी अनहोनी की आशंका को लेकर बेचैनी बढ़ गई है। बेटे को लापता होने के गम में मां की रो रोकर हाल बेहाल हो गया है। वह बेटे के लिए काफी बेचैन है और उससे घर वापस लौटने की गुहार लगा रही है।

वाल्मीकिनगर में राष्ट्रीय लोक मोर्चा के तीन दिवसीय बैठक का प्रारम्भ उपेंद्र कुशवाहा ने किया

पश्चिम चंपारण ,(एजेंसी) :भारत-नेपाल सीमा पर स्थित वाल्मीकि नगर के अंतरराष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर के वाल्मीकि सभा में राष्ट्रीय लोक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद उपेंद्र कुशवाहा ने शनिवार को पार्टी के तीन दिवसीय राजनीतिक मंथन शिविर का झंडोत्तोलन कर उद्घाटन किया।इस बैठक में राष्ट्रीय और प्रदेश तथा जिलाध्यक्ष समेत लगभग 300 के करीब प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। 26 अप्रैल से 28 अप्रैल तक पश्चिमी चंपारण जिले के वाल्मीकिनगर में चलने वाले इस शिविर के उद्घाटन सत्र से कार्यक्रम की शुरूआत हुई। राष्ट्रगान, दीप प्रज्वलन के साथ शुरू हुए इस सत्र में पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए दिवंगत आत्माओं की शांति हेतु दो मिनट का मौन रखा गया। इसके बाद सभा ने सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पास किया कि यह सभा पहलगाम आतंकी हमले की घोर निंदा करती है।राष्ट्रीय लोक मोर्चा परिवार भारत सरकार के साथ पूरी एकजुटता के साथ खड़ी है।इ शिविर में आज पार्टी के राष्ट्रीय पदाधिकारियों के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेन्द्र कुशवाहा की बैठक भी

हुई। इसके उपरांत पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए शिविर से जुड़े पार्टी के उद्देश्य की चर्चा की।उन्होंने कहा कि उन्हें पूरा विश्वास है कि इन तीन दिनों में होने वाले विचार मंथन के बाद पार्टी को आगे के राजनीतिक फैसलों के लिए दिशा मिलेगी। उन्होंने कहा कि इस शिविर में आगामी विधानसभा चुनाव के विषय के अतिरिक्त पार्टी के मुख्य मुद्दों यथा उच्चतर न्याय व्यवस्था का प्रजातंत्रीकरण (कॉलेजियम प्रणाली की समाप्ति) , शिक्षा में सुधार , जातीय जनगणना , जनसंख्या के आधार पर परिसीमन एवं क्षेत्र का विकेंद्रीकरण, पटना का नाम पाटलिपुत्र करना , सावित्रीबाई फुले की जयंती पर महिला शिक्षा दिवस का आयोजन, सम्राट अशोक की जयंती पर बिहार की तरह पूरे देश में अवकाश की घोषणा, बिहटा हवाई अड्डे का नाम भारत रत्न जननायक कपूरी ठाकुर के नाम पर करना , बिहार में किसानों और युवाओं के हितों मे कृषि उत्पादन पर आधारित उद्योगों की स्थापना जिससे पलायन की समस्या रुकेगी एवं रोजगार सृजन होगा, बिहार में पर्यटन क्षेत्र को विकसित कर रोजगार सृजित करने का काम ,बोधगया के मंदिर अधिनियम में संशोधन करना , सीतामढ़ी में निर्माण हो रहे मेडिकल कॉलेज का नाम अमर शहीद रामफल मंडल के नाम पर करना आदि विषयों पर चर्चा की आवश्यकता है।

वैपर और सोलर लाइट से फारबिसगंज होगा रोशनमय,3736 लाइट लगेंगे

अररिया, (एजेंसी) : फारबिसगंज नगर परिषद का इलाका सोलर लाइट और वैपर लाइट से रोशन होगा।शहर में 3736 लाइट का अधिष्ठापन किया जाएगा।यह निर्णय शनिवार को फारबिसगंज नगर परिषद के सभागार में मुख्य पार्षद वीणा देवी अध्यक्षता में हुए साधारण बोर्ड की बैठक में यह निर्णय लिया गया।बैठक में गत बैठक की संपुष्टि के बाद स्ट्रीट लाइट अधिष्ठापन हेतु गठित कमिटी के प्रतिवेदन,सरकार से प्राप्त आवंटन के आधार पर नाला और सड़क निर्माण,सीसीटीवी कैमरा के अधिष्ठापन,शव वाहन के क्रय, व्यापार अनुज्ञप्ति के दर में बढ़ोतरी,मुख्य स्थल पर प्याऊ लगाने,ई निविदा संख्या 04/2023-24 के संवेदक आरके ट्रेडर्स के एकरनामा नहीं करने पर उन्हें रद्द किए जाने पर विचार किया गया।बैठक में 9 सितंबर 2024 की बैठक में लिए गए निर्णय आंतरिक संसाधन मद से पार्षदों को लैपटॉप मुहैया कराने के लिए ईओ को अधिकृत किया गया।पोस्ट ऑफिस चौक से सदर रोड ज्योति सिनेमा मोड़ तक पीसीसी सड़क निर्माण,पोस्ट ऑफिस चौक से निर्मल के घर तक नाला निर्माण,नप के कोठीहाट चौक से केशरी टोला होते हुए दीनदयाल चौक,मारवाड़ी धर्मशाला से सदर रोड तक जाने वाली सड़क के चौड़ीकरण और नाला निर्माण, एसके रोड से भगवती देवी गोयल हाई स्कूल,अंबेडकर चौक से गोढ़ीहारे चौक तक सड़क चौड़ीकरण एवं दोनों तरफ नाला निर्माण,वार्ड संख्या 25 में अशोक सिंह के घर से नील फैक्ट्री तक सड़क एवं आरसीसी नाला निर्माण,वार्ड संख्या 8 में बैंक ऑफ बड़ौदा से शीतल साह के घर तक आरसीसी नाला निर्माण कार्य,वार्ड संख्या 24,25 एवं वार्ड संख्या चार में नाला निर्माण के निर्णय को पार्षदों ने मुहर लगाया।

डेलवा स्टेशन के निकट पेड़ से लटका मिला युवक का शव

नवादा(एजेंसी) :जिले के रजौली थाना क्षेत्र के हरदिया पंचायत के डेलवा रेलवे स्टेशन के बगल में स्थित एक पेड़ में शनिवार को गमछी से लटका हुआ एक युवक का शव मिला है। शव देखने के बाद आस-पास के गांव के लोग इकट्ठा हुए और सभी लोग शव को पहचान करने लगे। लेकिन युवक की पहचान नहीं हो सकी है।डेलवा स्टेशन पर तैनात आरपीएफ के जवान भी मौके पर पहुंचकर छानबीन किया है और इसकी सूचना रजौली पुलिस को दी है। सूचना मिलने के बाद पुलिस की एक टीम डेलवा के लिए रवाना हुई है।आसपास के ग्रामीणों ने बताया कि युवक इधर का रहने वाला नहीं है ।और नाहीं रेलवे का निर्माण कार्य में लगे कोई मजदूर ही है।

पृष्ठ एक का शेष...

झारखंड ने स्पेन व स्वीडेन के निवेशकों को खनिजों की नीलामी.....

अधिकारियों ने जानकारी दी कि खनन क्षेत्र के विकास के साथ खनन उपकरण निर्माण में भी झारखंड में अपार संभावनाएं हैं. ड्रिलिंग रिग, आर्टिकुलेटिंग ट्रक, बुलडोजर, ड्रैगलाइन, ड्रिल मशीन, हॉल ट्रक, लोडर, मोटर ग्रेडर और एक्सकेवेटर जैसे खनन अन्वेषण वाहनों और उपकरणों का निर्माण एक बड़ा उद्योग क्षेत्र बन सकता है. इसके अलावा, खनिज प्रसंस्करण एवं शुद्धिकरण उपकरण जैसे कि ग्राइंडिंग इक्विपमेंट, मैग्नेटिक सेपरेटर, थिकनर, क्लैरिफायर आदि के निर्माण में भी निवेश के सुनहरे अवसर हैं. वाहन उपकरणों के निर्माण के साथ-साथ परिवहन साधनों जैसे कि बेल्ट कन्वेयर, मोटर स्क्रैपर आदि के निर्माण में भी अपार संभावनाएं मौजूद हैं.

झारखंड में निवेश के लिए अनुकूल वातावरण

निवेशकों को बताया गया कि झारखंड एशिया के सबसे बड़े ऑटोमोबाइल निर्माण क्लस्टरों में से एक है. राज्य की सरकार ने निवेश को आकर्षित करने के लिए कई आकर्षक प्रोत्साहन योजनाएं लागू की हैं. बड़ी परियोजनाओं और एमएसएमई के लिए विशेष रियायतें दी जा रही हैं.'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार ने झारखंड इंटीग्रेटेड माइंस एंड मिनरल्स मैनेजमेंट सिस्टम' (जिम्स) लागू किया है, जिससे खनन कार्यों का डिजिटलीकरण और पारदर्शिता सुनिश्चित हो रही है.

खनिज ब्लॉकों की नीलामी और अन्वेषण के अवसर

राज्य सरकार खनिज ब्लॉकों की नीलामी के माध्यम से निवेशकों को आकर्षित कर रही है. खनिज अन्वेषण में भी अनेक तैयार अवसर मौजूद हैं.

झारखंड के विभिन्न क्षेत्रों में खनिज संसाधनों का प्रचुर भंडार

झारखंड के विभिन्न प्रमंडलों में खनिज संसाधनों का व्यापक वितरण है. राज्य के कई जिलों में खनिजों का व्यापक भंडार मौजूद है, जिससे राज्य को न केवल खनिज उत्पादन में बढ़त मिलती है, बल्कि उद्योगों के लिए भी बड़े अवसर उपलब्ध होते हैं.

खनन उपकरण निर्माण में निवेश के अवसर

अधिकारियों ने जानकारी दी कि खनन क्षेत्र के विकास के साथ खनन उपकरण निर्माण में भी झारखंड में अपार संभावनाएं हैं. ड्रिलिंग रिग, आर्टिकुलेटिंग ट्रक, बुलडोजर, ड्रैगलाइन, ड्रिल मशीन, हॉल ट्रक, लोडर, मोटर ग्रेडर और एक्सकेवेटर जैसे खनन अन्वेषण वाहनों और उपकरणों का निर्माण एक बड़ा उद्योग क्षेत्र बन सकता है. इसके अलावा, खनिज प्रसंस्करण एवं शुद्धिकरण उपकरण जैसे कि ग्राइंडिंग इक्विपमेंट, मैग्नेटिक सेपरेटर, थिकनर, क्लैरिफायर आदि के निर्माण में भी निवेश के सुनहरे अवसर हैं. वाहन उपकरणों के निर्माण के साथ-साथ परिवहन साधनों जैसे कि बेल्ट कन्वेयर, मोटर स्क्रैपर आदि के निर्माण में भी अपार संभावनाएं मौजूद हैं.

झारखंड में निवेश के लिए अनुकूल वातावरण

निवेशकों को बताया गया कि झारखंड एशिया के सबसे बड़े ऑटोमोबाइल निर्माण क्लस्टरों में से एक है. राज्य की सरकार ने निवेश को आकर्षित करने के लिए कई आकर्षक प्रोत्साहन योजनाएं लागू की हैं. बड़ी परियोजनाओं और एमएसएमई के लिए विशेष रियायतें दी जा रही हैं.'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार ने झारखंड इंटीग्रेटेड माइंस एंड मिनरल्स मैनेजमेंट सिस्टम' (जिम्स) लागू किया है, जिससे खनन कार्यों का डिजिटलीकरण और पारदर्शिता सुनिश्चित हो रही है.

खनिज ब्लॉकों की नीलामी और अन्वेषण के अवसर

राज्य सरकार खनिज ब्लॉकों की नीलामी के माध्यम से निवेशकों को आकर्षित कर रही है. खनिज अन्वेषण में भी अनेक तैयार अवसर मौजूद हैं.

मंत्री हाफिजुल हसन को सामाजिक कल्याण एवं राजनीति के लिए डॉक्टरेट की म

बढ़ाती है। मैं झारखंड के लोगों की सेवा और राज्य के विकास के लिए पहले से अधिक दृढ़ता से काम करता रहूंगा।

श्री हसन ने अपने संदेश में आगे कहा, ह्लमैं इस सम्मान को अपने क्षेत्रवासियों और झारखंड की जनता को समर्पित करता हूं। आप सभी के सहयोग और आशीर्वाद से हम झारखंड को प्रगति और समृद्धि के नए शिखर तक ले जाएंगे।

यह सम्मान श्री हसन की सामाजिक सेवा के प्रति समर्पण और झारखंड के विकास व सामाजिक न्याय के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

झारखंड में रह रहे 10 पाकिस्तानी नागरिकों .....

वहीं 10 में से तीन पाकिस्तानी नागरिक दो से लेकर 10 साल के बच्चे हैं। तीनों हाल में ही पाकिस्तान के कराची से रांची आए हैं। क्योंकि तीनों नाबालिग हैं और जिस तरह से भारत और पाकिस्तान के बीच तनातनी चल रही है। ऐसे में भारत में रह रही तीनों बच्चों की मां को फिलहाल पाकिस्तान जाने का वीजा नहीं मिलेगा। वहीं उनके पिता को भी पाकिस्तान से भारत आने का वीजा नहीं मिल पाएगा। ऐसे में तीनों बच्चे अकेले पाकिस्तान कैसे जाएंगे, यह बड़ा सवाल है। इस मामले पर झारखंड सरकार का गृह विभाग ने केंद्रीय गृह मंत्रालय से मंतव्य मांगा है। केंद्रीय गृह मंत्रालय की ओर से दिए गए निर्देश के अनुसार तीनों बच्चों को भारत में रहना है या पाकिस्तान भेजना है इस पर फैसला लिया जाएगा।

राजधानी रांची में रहने वाली तीन लड़कियों की शादी पाकिस्तान में हुई है। तीनों लड़कियां लॉन्ग टर्म वीजा के अनुसार झारखंड में निवास कर रही हैं, लेकिन उनके बच्चे गर्मी की छुट्टियों में पाकिस्तान से झारखंड आए हुए हैं।

झारखंड के 10 जिलों में 28 को होगी....

विभाग के अनुसार मौसम में यह बदलाव को काल बैसाखी के नाम से भी जाना जाता है। इसमें गर्जन, वज्रपात, ओलावृष्टि और तेज हवाएं चलती हैं।

वहीं शनिवार को रांची सहित पूरे राज्य भर में प्रचंड गर्मी महसूस की गई। सुबह होते ही कड़ी धूप से लोगों की दिनचर्या प्रभावित हो रही है।

शनिवार को रांची में तापमान 39.3 डिग्री, जमशेदपुर में 42.9, डाल्टेनगंज में 43.5, बोकारो में 42.1 और चाईबासा में अधिकतम तापमान 42.4 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया।

Page 5_Page 3.qxd 4/26/2025 10:34 PM Page 1

संक्षिप्त खबर

बैक टू स्कूल विषय पर फतेहपुर मध्य विद्यालय में कार्यक्रम आयोजित

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

विन्दापाथर : फतेहपुर प्रखंड क्षेत्र स्थित फतेहपुर मध्य विद्यालय फतेहपुर में बैक टू स्कूल विषय पर एक कार्यशाला आयोजित किया गया। कार्यशाला प्रखण्ड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी मिलन कुमार घोष की अध्यक्षता में हुई। जिसमें प्रखण्ड क्षेत्र के सभी तरह विद्यालय के प्रधान अध्यापक शामिल हुए। हाईस्कूल,मिड्ल स्कूल और प्राइमरी स्कूलों के शिक्षकों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बताते हुए प्रखण्ड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी मिलन कुमार घोष ने कहा कि बैक टू स्कूल का मतलब 5 वर्ष से 18 वर्ष तक के वैसे बच्चे जो किसी कारणवश स्कूल जाना छोड़ दिया है उसे पुनः विद्यालय में जोड़ा जाना है। शिक्षा विभाग का उद्देश्य है कि 5 वर्ष 18 वर्ष के बच्चे हरहाल में शिक्षा लाभ करे। उन्होंने कहा कि इस लिए आज 26 अप्रैल को बैठक कर सभी तरह के विद्यालय शिक्षकों को इसकी जानकारी देते हुए इसकी सफलता के लिए कहा गया है। साथ ही विद्यालय में संचालित योजनाओं का लाभ सभी विद्यार्थियों को मिले, इसके लिए सबको जागरूक किया गया।

पाथरा नव नामांकित बच्चों का भारत सेवाश्रम में स्वागत

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

दुमका : रानीश्वर क्षेत्र अंतर्गत भारत सेवाश्रम संघ स्वामी प्रणवानंद विद्या मंदिर पाथरा में नव नामांकित बच्चों का स्वागत के साथ विद्यालय तथा छात्रावास में प्रवेश कराया गया है, सर्वप्रथम विद्यालय के प्रधानाचार्य अभिनन्दन मुर्मू ने विद्यालय के नियमों की जानकारी दी। छात्रावास अधीक्षक जयदेव, चंदन बेसरा ने छात्रावास के नियम कायदे कानून की जानकारी दी। मौके पर नव नामांकित बच्चों को कॉपी, पेंसिल, केडबैरी, हाथ में कमल फूल व विद्यालय में प्रवेश करते समय फूलों की वर्षा की गई। शामु हांसदा द्वारा संताली परम्परिक लाठी नृत्य मनमोहक प्रस्तुति कर सबका मन मोह लिया। मौके पर दुगार्पुर के डॉ. रुपश्री चटजी, व सामाजिक कर्मी श्रीमती जयश्री मुखर्जी, चैतन कारोवा, बोध बोदरा, रणजीत राउत, गोविन्द यादव, अरिजीत प्रमाणिक, पार्थ राउत, ज्योति प्रियंका हेमब्रम, प्रशांत कुमार मुर्मू, प्रणव भकत, सुनाराम मुर्मू, देवाशीष राय व बच्चों के अभिभावकगण बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

प्रभारी प्राचार्य की अध्यक्षता मे अभिप्रेरणा की ऑन-लाइन बैठक

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

दुमका : मयूराक्षी ग्रामीण महाविद्यालय रानीश्वर इग्नू केंद्र मे प्रभारी प्राचार्य प्रोफेसर नव कुमार पाल की अध्यक्षता मे अभिप्रेरणा की ऑन-लाइन बैठक आयोजित की गयी। जिसमे मुख्य अतिथि डॉ अरविन्द मनोज कुमार सिंह रीजनल डायरेक्टर, इग्नू देवघर से आमंत्रित थे। अभिप्रेरणा बैठक मे प्राचार्य प्रोफेसर नव कुमार पाल ने रीजनल डायरेक्टर का स्वागत किया,डॉ मनोज कुमार ने इग्नू के बारे मे विस्तृत रूप से जानकारी दी इसके साथ प्रतेक क्लास से सेशन के बारे मे जानकारी प्रदान की, इसके साथ ही उन्होंने कहा छात्रों को अपने कार्यों के प्रति सजग रहने को कहा, उनको अपने इग्नू सेशन के प्रति सजग रहकर अपनी पढ़ाई करनी होगी, उन्होंने कहा की बी ए की पढ़ाई इग्नू मे रेगुलर 3 साल 3 महीना मे छात्र छात्रा पूरा कर सकते है बशर्ते छात्र छात्राये सजग रहे, मंच संचालन इग्नू समन्वयक रानीश्वर से प्रोफेसर गजेंद्र कुमार सिंह ने किया धन्यवाद ज्ञापन डॉ रूपम कुमारी ने किया, इस कार्यक्रम मे कांशलर प्रोफेसर आशीष कुमार मंडल, प्रोफेसर माजिद नदीम अहसन, तकनीकी सहायक मुकेश कुमार ढ़िबर, भास्कर महतो तथा सभी छात्र छात्राये उपस्थित थे .

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में नामांकन हेतु जिला स्तरीय समिति की बैठक

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

दुमका : उपायुक्त आंजनेयुलु दोड्डे की अध्यक्षता में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय मे नामांकन के लिए जिला स्तरीय समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में समिति द्वारा 706 सीटों पर नामांकन करने की स्वीकृति दी गई। सभी वार्डेन को निर्देश दिया गया कि बचे हुए सीट पर प्राप्त आवेदन के आधार पर नामांकन करना सुनिश्चित करें। उपायुक्त ने बैठक के दौरान सभी विद्यालयों में सुरक्षा, पेयजल, शौचालय, रसोईघर और कक्षों की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिया। बैठक में जिला शिक्षा पदाधिकारी, जिला शिक्षा अधीक्षक सहित अन्य उपस्थित थे।

परीक्षा आयोजन को लेकर जिला प्रशासन जामताड़ा के द्वारा सभी तैयारियां पूरी

पूर्वाह्न 9 बजे से 10:30 बजे तक आयोजित की जाएगी परीक्षा

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

जामताड़ा : उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी कुमुद सहाय के निर्देश पर समाहरणालय स्थित एसजीएसवाई सभागार में परियोजना निदेशक आईटीडीए जुगनू मिंज की अध्यक्षता में चौकीदार नियुक्ति हेतु आयोजित लिखित परीक्षा के संदर्भ में केंद्राधीक्षकों को ब्रीफिंग किया गया।ब्रीफिंग के क्रम में बताया गया कि जामताड़ा जिला अंतर्गत चौकीदारों की नियुक्ति हेतु आहूत लिखित परीक्षा 27 अप्रैल को एक पाली में पूर्वाह्न 9:00 बजे से पूर्वाह्न 10:30 बजे तक आयोजित की गई है। जिसके लिए अभ्यर्थियों को पूर्वाह्न 07:00 बजे रिपोर्टिंग करना होगा एवं पूर्वाह्न 08:45 बजे के बाद परीक्षा केंद्र में प्रवेश नहीं दिया जाएगा। उन्होंने केंद्राधीक्षकों को परीक्षा आयोजन के संदर्भ में विस्तारपूर्वक जानकारी देते हुए केंद्राधीक्षकों को कई बिंदुओं में शंका समाधान किया। वहीं इस दौरान उन्होंने सभी केंद्राधिक्षकों को परीक्षा सामग्री उपलब्ध कराते हुए कहा कि सभी मुस्तैदी से कार्य करेंगे, आप लोग पूर्व में भी परीक्षा संपन्न करा चुके हैं। अनुभवी हैं। इस परीक्षा को भी शांतिपूर्ण एवं कदाचार मुक्त संपन्न कराने में अपना शत प्रतिशत योगदान देंगे।

उन्होंने इस दौरान परीक्षा को लेकर की गई विभिन्न बिंदुओं पर तैयारियों से अवगत कराने के साथ साथ फ्रीस्किंग को लेकर सख्त निर्देश दिया। वहीं उन्होंने ओएमआर शीट को ठीक से भरने के लिए केंद्राधीक्षकों को जरूरी दिशा निर्देश दिया। इसके अलावा कहा कि परीक्षा समाप्ति के तुरंत बाद उत्तरपत्रक एवं अन्य सामग्री को अविलंब चिन्हित थैलों एवं पैकेट्स में सीलबंद कर कोषागार में जमा करने हेतु तैयार कर लेंगे। वहीं इस दौरान सभी को डेमो ओएमआर शीट दिखाकर शीट भरने हेतु मार्गदर्शन किया। इसके अलावा बताया गया कि प्रत्येक परीक्षा कक्ष में 02 वीक्षकों की अनिवार्य रूप से प्रतिनियुक्ति करेंगे। साथ ही कोई भी वीक्षक मोबाइल फोन का इस्तेमाल नहीं कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त ब्रीफिंग में सीसीटीवी कैमरा के फंक्शनिंग एवं रिकॉर्डिंग को लेकर जरूरी दिशा निर्देश दिया गया। वहीं सभी को कहा गया कि किसी प्रकार के कन्फ्यूजन की स्थिति में जिला नियंत्रण कक्ष को जानकारी देने हेतु दिशा निर्देश दिया।

इसके अतिरिक्त बताया गया कि एग्जाम के प्रेशर से कई ऐसे परीक्षार्थी होंगे जो किसी कारणवश पेन भूल गए होंगे, ऐसी स्थिति को देखते हुए सभी को निर्देश दिया कि एक बार फ्रीस्किंग के बाद अंदर गए परीक्षार्थी को कठिनाई भी हो इसके लिए वैकल्पिक नीला बॉल पेन की व्यवस्था करने का निर्देश दिया गया। इसके अलावा बताया गया कि परीक्षार्थी प्रातः में ही पहुंच जाएंगे।

गर्मी की अधिकता को देखते हुए सभी केंद्रों में मेडिकल टीम की प्रतिनियुक्ति की गई है। साथ ही केंद्राधीक्षकों को पर्याप्त मात्रा में स्नैक्स आदि की व्यवस्था रखने का निर्देश दिया गया। इसके अलावा परीक्षा समाप्ति से पूर्व किसी भी परीक्षार्थी को परीक्षा भवन से बाहर जाना निषेध रहेगा।वहीं परीक्षा के समय बिजली कटौती नहीं हो इसके लिए कार्यपालक अभियंता विद्युत प्रमंडल को निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया। परीक्षा केंद्र में कोई भी इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस यथा मोबाइल, घड़ी, कैलकुलेटर, पेजर, ब्लूटूथ, ट्रांसमीटर, स्कैनर आदि ले जाने की सख्त मनाही रहेगा। वहीं सभी केंद्राधीक्षकों को परीक्षा के सफल आयोजन को लेकर परियोजना निदेशक ने शुभकामनाएं दीं। इस मौके पर प्रभारी पदाधिकारी सामान्य शाखा सह जिला पंचायत राज पदाधिकारी , जिला शिक्षा पदाधिकारी ,जिला शिक्षा अधीक्षक विकेश कुणाल प्रजापति, अंचल अधिकारी जामताड़ा, कार्यपालक पदाधिकारी नगर पंचायत जामताडा, सहित अन्य मौजूद रहे।

मिहिजाम मे निबसित काउंसिल द्वारा प्रमाण पत्र वितरण समारोह का आयोजन किया गया

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

मिहिजाम : मिहिजाम में स्थित निबसित काउंसिल द्वारा संचालित अर्धवार्षिक प्रमाण पत्र वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में डुमरी के विधायक जयराम महतो एवं संस्था की अध्यक्षा दुर्गा शर्मा,अजय शर्मा, अभय कुमार, अभिजीत कुमार, अमित कुमार, मंतोष के कर कमलों द्वारा हुआ।जयराम महतो को संस्था की अध्यक्षा दुर्गा शर्मा ने अंगवस्त्र दे कर स्वागत किया। जयराम महतो ने टॉप 13 को मेडल देकर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया कि आप देश के भविष्य हो आपको शिक्षा में किसी भी प्रकार की परेशानी हो तो हम आपके साथ हमेशा हैं।

बिधायक ने संस्था को प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया। इस समारोह में 300 छात्र छात्राएं मौजूद थे। विधायक जयराम महतो ने अपने शब्दों में व्यक्त किया कि इस संस्था को आगे आना चाहिए। संस्था की अध्यक्षा दुर्गा शर्मा को बधाई देते हुए महंगाई के समय में गरीबों के लिए पैसा बहुत मायने रखता है। वो लोग ज्यादा शुल्क नहीं दे पाते लेकिन निबसित काउंसिल द्वारा ये संभव हुआ है। और ये कम बड़ी बात नहीं है। इनको पैसे से मतलब नहीं है इन्हें मतलब है कि कैसे बच्चे आगे बढ़े और उनका विकास हो।

जिला कार्यालय के निर्माण के लिए भूमि पूजन एवं शिलान्यास किया

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

दुमका : भाजपा जिला संगठन के लिए डंगालपाड़ा में पार्टी के स्थायी जिला कार्यालय के निर्माण हेतु विधिवत भूमि पूजन एवं शिलान्यास किया गया । मुख्यअतिथि के तौर पर प्रदेश अध्यक्ष सह नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी के द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के बीच भूमि पूजन संपन्न हुआ। जिला संगठन के उत्तरोत्तर विकास एवं जनसेवा के संकल्प को सुदृढ़ करने का आशीर्वाद मांगा। शिलान्यास कार्यक्रम में संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह, प्रदेश कोषाध्यक्ष दीपक बंका सहित कई वरिष्ठ नेताओं की उपस्थिति में की गई। प्रदेश के प्रथम प्रदेश अध्यक्ष अभयकांत प्रसाद, जरमुंडी विधायक देवेंद्र कुंवर, पूर्व सांसद सुनील सोरेन एवं जिलाध्यक्ष गौरवकांत ने भी अपनी उपस्थिति से कार्यकताओं में नया उत्साह एवं ऊर्जा का संचार किया। भूमि पूजन सह शिलान्यास कार्यक्रम के दौरान कार्यकताओं के चेहरे पर हर्ष और उत्साह की झलक स्पष्ट दिख रही थी। इस अवसर पर बाबूलाल मरांडी ने कार्यकताओं के बधाई देते हुए कहा कार्यालय केवल भवन नहीं बल्कि भाजपा के विचार, संकल्प और कार्यकताओं की निष्ठा का जीवंत प्रतीक बनेगा। जिलाध्यक्ष गौरवकांत ने समस्त कार्यकताओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह कार्यालय आने वाले समय में संगठन को और अधिक सशक्त करने का आधार बनेगा तथा भाजपा के कार्यकर्ता इसे सेवा, समर्पण और संगठन के मंदिर के रूप में प्रतिष्ठित करेंगे। इस अवसर पर जिला मीडिया सह प्रभारी नवल किस्कू, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य निवास मंडल, परितोष सोरेन, डॉ अंजुला मुर्मू अमिता रक्षित, डॉ शर्मिला सोरेन,अमरेंद्र सिंह, मृणाल मिश्रा, रविकांत मिश्रा, पवन केसरी, धर्मेंद्र सिंह बिट्टू, मार्शल ऋषिराज टुडू, विवेकानंद राय, पिंटू साह, गुंजन मरांडी, पिंटू अग्रवाल, दिनेश सिंह, रूपेश मंडल, बिमल मरांडी, दीप्तांशु कोचगवे, ममता साह, प्रिया सिंह, अजय गुप्ता, ओम केसरी,श्रीधर दास, नकुल साह, किशोरेंद्र दास, अमन राज, नीतू झा, कुश पाल, इंद्रजीत कुमार, ध्रुवज्योति महंता, के.एन. सिंह, प्रवीण सिंह, संतोष साह, विश्वनाथ राय, दीपाली मंडल, रानी सिंह, वीरेंद्र मरांडी, सौरभ चौधरी, रंजीत यादव, हराधन मंडल, ऋषिकेश गुप्ता, मुरलीधर पांडे सहित सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे।

थाना प्रभारी के नेतृत्व में संघन वाहन जांच अभियान चलाया गया

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

दुमका: गोपीकांदर थाना क्षेत्र अंतर्गत संघन वाहन जांच किया गया। बता दें कि जिला परिवहन पदाधिकारी व न्यायालय के निदेर्शानुसार गोपीकांदर थाना गेट के सामने गोबिंदपुर- साहेबगंज स्टेट हाइवे पर शनिवार को थाना प्रभारी रंजीत मंडल के नेतृत्व में संघन वाहन जांच अभियान चलाया गया। जांच अभियान में आवाजाही करने वाले दो पहिया, चार पहिया एवं बड़ी वाहनों का सीट बेल्ट, हेलमेट, डिक्की, ड्राईवरी लाईसेंस एवं कागजातों की जांच की गई। जिसमें यातायात नियमों का उल्लघंन करने वाले 34 वाहन चालकों से जुमार्ना वसूला गया। इस मौके पर एसआई धरमल मांझी, भारत भुषण सिंह, संघम पाठक, एएसआई राजन सिंह, ब्रज मोहन सिंह, पाइसिल किस्कू सहित अन्य पुलिस जवान मौजूद थें।

बैक टू स्कूल जैसे महत्वपूर्ण अभियान को गंभीरता से नहीं ले रहे कुछ जिम्मेदार कर्मी

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

विन्दापाथर : झारखंड सरकार राज्य भर में शिक्षा को सशक्त बनाने और कोविड-19 के बाद बच्चों की स्कूल में वापसी को सुगम बनाने के उद्देश्य से ह्यबैक टू स्कूलह्न कैंपेन चला रही है। इस अभियान को सफल बनाने के लिए विभागीय स्तर पर कार्यशालाएं आयोजित की जा रही हैं, ताकि शिक्षा सेवियों को जागरूक और प्रशिक्षित किया जा सके। परंतु दुर्भाग्यवश, इस सकारात्मक प्रयास को कुछ अधिकारियों की लापरवाही और गैरजिम्मेदाराना रवैये से ठेस पहुंच रही है।शनिवार को फतेहपुर प्रखंड मुख्यालय स्थित मध्य विद्यालय में जब 'बैक टू स्कूल' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया तब उम्मीद थी कि सभी संबंधित शिक्षक, सीआरपी और अन्य विभागीय कर्मचारी सक्रिय भागीदारी निभाएंगे और कार्यक्रम की सफलता सुनिश्चित करेंगे। परंतु उस दिन जो दृश्य देखने को मिला, वह बेहद निराशाजनक और चिंताजनक था। कार्यशाला स्थल पर सीआरपी महावीर यादव, तपन सिंह, अंगिरानंदन मंडल और सुशांत मंडल जैसे अधिकारी मौजूद तो थे परंतु कार्यक्रम में शामिल होकर विषय पर चिंतन-मनन करने के बजाय वे घंटों तक स्कूल परिसर के बाहर गपशप में व्यस्त नजर आए। ना कोई नोटबुक, ना कोई संवाद, ना ही कार्यक्रम के प्रति कोई उत्साह केवल खानापूर्ति करते हुए समय काटते रहे। उनके इस व्यवहार ने न सिर्फ कार्यशाला के उद्देश्य को कमजोर किया बल्कि यह भी दशार्या कि उन्हें न तो शासन की मंशा की फिक्र है और न ही शिक्षा व्यवस्था की साख की। इस प्रकार का रवैया उन सैकड़ों शिक्षकों और बच्चों के लिए एक नकारात्मक संदेश देता है, जो सरकार की योजनाओं पर भरोसा करते हैं। शिक्षा एक संवेदनशील और भविष्यनिर्माण से जुड़ा क्षेत्र है, जिसमें इस तरह की लापरवाही को नजरअंदाज करना सीधे तौर पर बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ है। प्रशासनिक पहल की मांग

यह बेहद जरूरी है कि जिला शिक्षा पदाधिकारी और प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी ऐसे अधिकारियों के खिलाफ सख्त अनुशासनात्मक कार्रवाई करें।अगर समय रहते कठोर कदम नहीं उठाए गए, तो यह ढिलाई आने वाले दिनों में और बड़ी चुनौती बन सकती है। सीआरपी का कर्तव्य है कि वे ग्रासरूट स्तर पर शिक्षा व्यवस्था को मजबूत करें, न कि केवल उपस्थिति दर्ज कर खानापूर्ति करें। जनता और शिक्षा विभाग दोनों को चेतने की जरूरत है सवाल यह भी उठता है कि ऐसे अधिकारी अगर हर कार्यशाला, मीटिंग और कार्यक्रम में इसी तरह की अनदेखी करेंगे तो फिर योजनाओं की सफलता का क्या होगा। क्या सरकार की लाखों रुपये की योजनाएं इसी तरह गपशप और लापरवाही की भेंट चढ़ जाएंगी। अब वक्त आ गया है कि जनता भी सतर्क हो और ऐसी गतिविधियों पर नजर रखे। साथ ही विभाग को यह सुनिश्चित करना होगा कि जो भी कार्यक्रम आयोजित हों उनमें वास्तविक भागीदारी हो और हर अधिकारी अपनी जिम्मेदारी को गंभीरता से निभाएं।

नीट-यूजी परीक्षा को कदाचार मुक्त संपन्न कराने को लेकर बैठक

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

दुमका : उपायुक्त आंजनेयुलु दोड्डे की अध्यक्षता में नीट यूजी की परीक्षा की तैयारियों से संबंधित समीक्षा बैठक आहूत की गई। उपायुक्त ने कहा कि स्वच्छ वातावरण में निष्पक्ष एवं कदाचार मुक्त परीक्षा संपन्न कराना हम सभी की जिम्मेदारी है। किसी भी स्थिति में कदाचार की सूचना नहीं मिलनी चाहिए। औचक निरीक्षण के दौरान अगर कदाचार करते परीक्षार्थी पाये गये तो सख्त कार्रवाई की जायेगी। उपायुक्त ने नीट यूजी परीक्षा में प्रतिनियुक्त अधिकारियों को कहा कि नीट यूजी के लिए जारी गाइडलाइन का पूरी तरह से पालन करना है। परीक्षा निष्पक्ष तरीके से होनी है, जिसमें किसी तरह की कोताही नहीं होनी चाहिए। परीक्षा से संबंधित सभी अधिकारी नेशनल टेस्टिंग एजेंसी की गाइडलाइन का अध्ययन कर लें। परीक्षा केंद्रों के हर क्लास रूम में सीसीटीवी लगाए जाएंगे।

सुरक्षा के सभी इंतजाम किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि एक ही दिन में परीक्षा पूरी होगी। दोपहर दो बजे पांच बजे तक परीक्षा होगी। केंद्रों पर सुरक्षा के इंतजाम किए जाएंगे। पीने के पानी, शौचालय, बिजली तथा विकल्प की भी व्यवस्था होनी चाहिए। परीक्षा केंद्रों में प्रवेश के पहले परीक्षार्थियों की जांच होगी। उपायुक्त ने कहा कि परीक्षा केंद्रों में पुलिस बल व दंडाधिकारियों की तैनाती होगी। अफवाह फैलाने वालों पर भी नजर रखनी है। ऐसे लोगों पर तत्काल कार्रवाई की जाए। बैठक में पुलिस अधीक्षक, अपर समाहर्ता, अनुमंडल पदाधिकारी, जिला परिवहन पदाधिकारी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

झारखंड राज्य पेंशनर समाज जिला शाखा की हुई बैठक

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

जामताड़ा : झारखंड राज्य पेंशनर समाज जिला शाखा जामतारा कार्यालय में 10:30 बजे पेंशनर्स की एक बैठक हुई इस बैठक की अध्यक्षता पार्थकुमारबोस ने किया। सबसे पहले कश्मीर के पहलगाम मे आतंकवादी हमले में मृत लोगों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए 1 मिनट का मौन रखा गया एवं उनके शोक संतप्त परिवार के लिए संवेदनाएं व्यक्त की गई। तत्पश्चात पूर्व में लिए गए आंदोलनात्मक कार्यक्रम के तहत उपस्थित सभी को संबोधित करते हुए जिलासचिव चंडीदास पुरी ने बताया कि विगत 25 मार्च को संसद में वित्त मंत्री निर्मला सितारामन के द्वारा संसद मे पारित कराए गए वित्तीय विधेयक 2025 में सीसीएस(पेंशन) नियमावली को संशोधन की बात कही कही गई है जिसके तहत सेवानिवृति की तिथि के आधार पर पेंशनरों को दो वर्गों में बांटने की योजना है। जिसके तहत 01-01-26 से लागू होने वाली आठवां वेतन आयोग की सिफारिश की लाभकी सुविधा 01-01- 2026 के पूर्व हुए सेवानिवृत कर्मचारी एवं पेंशनरों को नहीं मिलने की उम्मीद है। इस निर्णय के विरोध मे पूरे देशव्यापी विभिन्न पेंशनर संगठनों के द्वारा असंतोष व्यक्त करते हुए अपनी- अपनी रणनीति के तहत इस संशोधन पर पुनर्विचार हेतु आंदोलन की रूपरेखा तैयार की गई है।इसी की कड़ी में झारखंड राज्य पेंशनर समाज रांची के आलोक में एक कार्यक्रम रखा गया है।हम अनुमंडल पदाधिकारी के माध्यम से राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री भारतसरकार को संलेख सौंपते हुए अनुरोध करना चाहेंगे कि वित्त विधेयक 2025 में सीसीएस (पेंशन) नियमावली में संशोधन करते हुए पेंशनरों को वगीर्कृत करने की जो बात कही गई है उस पर पुनर्विचार किया जाए ताकि पूर्व की भांति आठवां वेतन आयोग के सिफारिश का लाभ पूर्व के सभी पेंशनर्स को भी मिले। तत्पश्चात सबों ने मिलकर जुलूस करते हुए अनुमंडल पदाधिकारी कार्यालय पहुंचा जॆहा उपस्थित अनुमंडल पदाधिकारी को महामहिम राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री भारत सरकार के नाम संलेख सोपा गया।संपूर्ण कार्यक्रम में सुजीतकुमारघोष ,अशोक चंद्र, प्रदीपसरकार ,प्रताप कुमार सिंह, विरेन मंडल ,प्रदीप चक्रवर्ती ,प्रदीप कुमार सरकार , आदित्य रवानी ,अनिल कुमार सिंह, राधे प्रसाद ,शिवनंदन महतो ,हीरालाल सिंह ,मीना कुमारी सहित काफी संख्यक पेंशनर्स उपस्थित रहे।

संपादकीय

चूक की जवाबदेही

इसमें दो राय नहीं कि पहलगाम के भीषण आतंकी हमले ने देश के अंतर्मन पर गहरे जख्म छोड़े हैं। निस्संदेह, निर्दोष पर्यटकों की निर्मम हत्या कई सवाल हमारे सामने छोड़ गई है। पहलगाम आतंकी हमले के बाद शुक्रवार को सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने कश्मीर का दौरा किया। उस आतंकी हमले के बाद जिसमें छब्बीस लोग मारे गए थे। निस्संदेह, उनका यह दौरा हमारे इस सैन्य संकल्प की अभिव्यक्ति है कि हमारी सेना आम जन की सुरक्षा के लिये प्रतिबद्ध है। एक ऐसे क्षेत्र में जहां लोगों ने दशकों आतंक की त्रासदी झेली है, वहां प्रतीकात्मक जवाबदेही से आगे ठोस रणनीति बनाने की जरूरत है। दुर्भाग्य से आतंकवादियों ने उस क्षेत्र को अपने आतंक का निशान बनाया, जो जम्मू-कश्मीर के अपेक्षाकृत सुरक्षित माने जाने वाले क्षेत्रों में शामिल था। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि इस हमले को लेकर कोई खुफिया अलर्ट क्यों नहीं मिल पाया, जिससे लोगों में रोष व्याप्त हुआ है। दरअसल, सुरक्षा चूक की ऐसी घटनाएं सिस्टम की तैयारियों के प्रति जनता के भरोसे को प्रभावित करती हैं। इसमें दो राय नहीं है कि प्रधानमंत्री ने इस मामले में त्वरित हस्तक्षेप किया। इस संकटपूर्ण स्थिति में उन्होंने अपनी विदेश यात्रा को बीच में ही रोकना प्राथमिकता समझा। वहीं दूसरी ओर केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह तुरंत जम्मू-कश्मीर पहुंचे। वहीं शाह का तुरंत घायलों से मिलने अस्पताल पहुंचना दुर्भाग्यपूर्ण घटना की गंभीरता को ही रेखांकित करता है। अब चाहे ये प्रयास कितने भी तात्कालिक व ईमानदार क्यों न हों, वे प्रणालीगत सुधार के विकल्प नहीं हो सकते। वहीं दूसरी ओर जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने आश्वासन दिया है कि हर अपराधी को पकड़ने के लिये सरकार कृतसंकल्प है। लेकिन इस तरह के आश्वासन केवल अल्पकालिक आवश्यकता को पूरा करते हैं। बेहतर होता कि हम पहले ही ऐसी चाक-चौबंद व्यवस्था सुनिश्चित करते कि परिंदा भी पर न मार सकता। निश्चित रूप से इस तरह के आतंकी हमले का व्यापक परिदृश्य हमें आत्ममंथन को विवश करता है।

बहरहाल, पहलगाम आतंकी हमले से हुई जनहानि तमाम सवालों को जन्म देती है। हर किसी संवेदनशील मन में घटनाक्रम को लेकर अनेक प्रश्न उभरते हैं। आम विमर्श में यह मुद्दा उठता रहा है कि जम्मू-कश्मीर के इस संवेदनशील क्षेत्र में सेना की उपस्थिति क्यों नहीं थी। आखिर इस हमले की भनक हमारे खुफिया तंत्र को क्यों नहीं लगी। जम्मू-कश्मीर देश का सीमावर्ती व संवेदनशील क्षेत्र है। दशकों की आतंकी घटनाओं के चलते इस क्षेत्र में सेना, केंद्रीय सुरक्षा बलों, खुफिया एजेंसियों तथा स्थानीय पुलिस की उपस्थिति देश के अन्य राज्यों के मुकाबले काफी ज्यादा रहती है। सवाल यह भी है कि आखिर खुफिया एजेंसियों से किस स्तर पर और क्यों चूक हुई। आखिर स्थानीय व विदेशी आतंकवादी इतनी आसानी से हमारे सुरक्षा चक्र को भेदने में कैसे सफल रहे? ऐसे तमाम सवाल हमारे नीति-नियंताओं से पारदर्शी जवाब मांग रहे हैं। ऐसे में सिर्फ सार्वजनिक रूप से बयान देने से काम चलने वाला नहीं है। हमें सुरक्षा व्यवस्था व खुफिया तंत्र की उन तमाम खामियों को दूर करना होगा, जिनके अभाव में आतंकवादी अपने खतरनाक मंसूबों को अंजाम देने में सफल हो सके। निस्संदेह, कश्मीर यात्रा के दौरान सेना प्रमुख जनरल द्विवेदी ने सुरक्षा बलों के बीच ऑपरेशनल समन्वय की समीक्षा की। लेकिन राष्ट्र और कश्मीरी सिर्फ प्रोटोकॉल को सख्त करने से कहीं अधिक चाहते हैं। पहलगाम आतंकी हमले के आलोक में खुफिया जानकारी साझा करने के तंत्र को सक्षम बनाने, तेज प्रतिक्रिया ढांचे के निर्माण और सुरक्षा तंत्र की मजबूती को मूर्त रूप देने की जरूरत है। कश्मीर को लेकर हमारे दांव हमेशा ऊंचे होते हैं, अब चाहे वे सैन्य, भावनात्मक और राजनीतिक रूप से हों। हमें पहलगाम आतंकी हमले में अपनों को खोने वाले लोगों के दर्द को संवेदनशील ढंग से महसूस करना चाहिए। आज वास्तविक स्थिति में बदलाव की जरूरत है ताकि हमारे राष्ट्रीय संकल्पों को संबल मिल सके।

(चिंतन-मनन)

संत की सीख

एक धनी सेठ ने एक संत के पास आकर उनसे प्रार्थना की, महाराज, मैं आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए साधना करता हूं पर मेरा मन एकाग्र ही नहीं हो पाता है। आप मुझे मन को एकाग्र करने का कोई मंत्र बताएं। सेठ की बात सुनकर संत बोले, मैं कल तुम्हारे घर आऊंगा और तुम्हें एकाग्रता का मंत्र प्रदान करूंगा। यह सुनकर सेठ बहुत खुश हुआ। उसने इसे अपना सौभाग्य समझा कि इतने बड़े संत उसके घर पधारेंगे।

उसने अपनी हवेली की सफाई करवाई और संत के लिए स्वादिष्ट पकवान तैयार करवाए। नियत समय पर संत उसकी हवेली पर पधारे। सेठ ने उनका खूब स्वागत-सत्कार किया। सेठ की पत्नी ने मेवों व शुद्ध घी से स्वादिष्ट हलवा तैयार किया था। चांदी के बर्तन में हलवा सजाकर संत को दिया गया तो संत ने फौरन अपना कमंडल आगे कर दिया और बोले, यह हलवा इस कमंडल में डाल दो। सेठ ने देखा कि कमंडल में पहले ही कूड़ा-करकट भरा हुआ है। वह दुविधा में पड़ गया। उसने संकोच के साथ कहा, महाराज, यह हलवा मैं इसमें कैसे डाल सकता हूं।

कमंडल में तो यह सब भरा हुआ है। इसमें हलवा डालने पर भला वह खाने योग्य कहां रह जाएगा, वह भी इस कूड़े-करकट के साथ मिलकर दूषित हो जाएगा।

कश्मीर में आतंक के खिलाफ सख्त फैसले का वक्त

–प्रभुनाथ शुक्ल–

भारत में हिंदुओं पर सामुदायिक हिंसा की बढ़ती घटनाओं ने सरकार और देश की सुरक्षा व्यवस्था के लिए बड़ी चुनौती खड़ी कर दिया है। अपने ही देश में बहुसंख्य हिंदू हिंसक घटनाओं का शिकार हो रहा है। वैसे सामुदायिक और नस्लीय हिंसा पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय है। लेकिन भारत के आसपास पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ हमले और हिंसा बढ़ गए हैं। नेपाल जैसे देश में भी रामनवमी जुलूस पर हिंसा को अंजाम दिया गया। भारत के पड़ोसी इस्लामिक देश में हिंदुओं की स्थिति बद से बदतर है। जबकि ये कभी भारत के हिस्सा थे। यहाँ हिंदुओं पर लगातार धार्मिक उत्पीड़न और हिंसा की घटनाएं भारत की चिंता को बढ़ा दिया है। आतंकवाद से लड़ रहे भारत के सामने सामुदायिक हिंसा की घटनाएं बड़ी चुनौती बन रहीं हैं। सबसे अहम मुद्दा यह है कि अपने देश में ही हिंदू बाहुल्य होने के बाद भी हिंदू सामुदायिक हिंसा का शिकार बन रहा है। जबकि चीन में उइगर मुसमानों का दमन किसी से छुपा नहीं है, लेकिन चीन के खिलाफ पाकिस्तान, बांग्लादेश खामोश है। कश्मीर हुआ नरसंहार इसका ताजा उदाहरण है। भारत में इस तरह की हिंसा के पीछे वोटबैंक के लिए राजनैतिक तुष्टिकरण सबसे बड़ी समस्या है।

भारत में हिंदुओं पर हिंसक हमले इस्लामिक आतंकवाद की एक सोची समझी रणनीति है। पाकिस्तान, बांग्लादेश में हिंदुओं का सफाया हो रहा है जबकि अफगानिस्तान में हिंदुओं की आबादी गिनती पर आ गई है। भारत में इस तरह के सामुदायिक और धार्मिक दंगे भड़काने के लिए पाकिस्तान मूल रूप से जिम्मेदार है। लेकिन हम इस तरह की बात कर अपनी जिम्मेदारी से बच भी नहीं सकते हैं। भारत इस्लामिक आतंकवाद से तो हमेशा से पीड़ित रहा है। लेकिन हाल के वर्षों में राजनैतिक कारणों और उसके फैसलों से देश में सामुदायिक हिंसा, प्रदर्शन और पत्थरबाजी की घटनाएं बढ़ गईं हैं। दोनों समुदायों में एक दूसरे के प्रति नफरत और डर का माहौल पैदा हुआ है। इस तरह की सामुदायिक हिंसा के पीछे सामाजिक, आर्थिक, राजनीति, सोशलमीडिया और धार्मिक कारण मुख्य हैं, जिसकी वजह से ऐसी घटनाएं देश के धार्मिक और सांप्रदायिक तानेबाने को विभाजित करती दिखती हैं।

जम्बू -कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को पाकिस्तानी आतंकवादियों ने जिस तरह निर्दोष पर्यटकों का नरसंहार किया वह मानवता के खिलाफ है। इस हिंसा में 26 लोगों की मौत हुई और कई घायल हुए। आतंकवादियों ने सिर्फ हिंदुओं को निशाना बनाया और उनका धर्म पूछ कर उन्हें गोलीबारी मारी। हालांकि की कश्मीर में इस नरसंहार को लेकर काफी गुस्सा देखा जा रहा है। कश्मीर में इस बात पर भी गुस्सा है कि हमले में सिर्फ हिंदू मारे गए। लोगों का कहना है कि पर्यटकों की जान बचाने के लिए दो स्थानीय मुस्लिम और ईसाई, जैन भी मारे गए है। मीडिया का यह रुख गलत है। पूरा कश्मीर पीड़ित परिवारों के साथ है। आतंकियों को फांसी देने की भी बात कहीं गई है। देश के कई हिस्सों में मुस्लिम संस्थाओं ने प्रदर्शन कर पाकिस्तान के खिलाफ नारेबाजी भी किया है।

इस साजिश के पीछे हाल में पाकिस्तान आमीर्चीफ जनरल कियानी की तरफ से भारत और हिंदुओं के खिलाफ दिया गया वह उसकाऊ बयान भी अहम माना जा रहा है जिसमें उन्होंने हिंदुओं के खिलाफ भड़काने वाला बयान दिया था। कियानी के बयान के ठीक कुछ दिन बात पहलगाम में आतंकी हमला हुआ है जिसमें पर्यटकों का धर्म पूँछ कर नरसंहार किया गया। यह पाकिस्तान की सोची समझी रणनीति है, क्योंकि वह भारत से सीधीजंग में कभी नहीं जीत सकता है। ऐसी स्थिति में वह हिंदुओं को निशाना बनाकर भारतीय मुसलमानों का मसीहा बनना चाहता हैएवं कश्मीर में अलगाववाद की नींव और मजबूत करना चाहता है। खैबरपखतून में बलोच आर्मी की तरफ से किए ट्रेन हाईजैक के पीछे वह भारत का हाथ मानता है। जिसकी वजह से वह बौखलाया था और बदले के लिए बेताब था। लेकिन वह जो कर रहा है उसकी भरपाई उसे करनी होगी।

कश्मीर में धारा 370 खत्म होने के बाद कश्मीर आहिस्ता -आहिस्ता विकास की मुख्यधारा में लौट रहा है। आतंकी घटनाएं कम हुई हैं। पर्यटकों की आमद बढ़ने लगी है। सेबों की खेती लहलाहने लगी है। यह सब देख पाकिस्तानी फौज में बौखलाहट है जिसकी वजह से वह इस तरह की सामुदायिक हिंसा की साजिश रच रहा है। कश्मीर में सामुदायिक हिंसा की यह पहली घटना नहीं है। आतंकवादियों ने पुलवामा जैसी घटनाओं को अंजाम दिया है। कश्मीर में साल 2019 के बाद धारा 370 लागू होने के बाद यह पहली सबसे बड़ी आतंकी नरसंहार की घटना है। दूसरा समझे अहम कारण कश्मीर के राजनैतिक और अलगाववादी कभी शान्ति और विकास नहीं चाहते हैं। क्योंकि धारा 370 खत्म होने के बाद उनकी तमाम स्वतंत्रता जहाँ बाधित हुईं वहीं आर्थिक नुकसान हुआ है। वहां के राजनेताओं और अलगाववादियों का पाकिस्तान प्रेम दुनिया में जगजाहिर है। इसके बावजूद धारा 370 का खात्मा, तीन तलाक कानून और वक्फ संशोधन जैसे राजनैतिक फैसले इस आग में घी का काम किया है। हालांकि यह आम मुसलमानों और कश्मीरियों की सोच नहीं है। यह सिर्फ अलगाववादियों की सोच है। पहलगाम में हिंदुओं के साथ विदेशी नागरिक और नेवी में कार्यरत जवान की भी मौत हुई है। जोड़ा शादी के बाद हनीमून मानाने गया था जो निर्मम आतंकी साजिश का शिकार हुआ है। नरसंहार के बाद भारतीय सेना के लोगों के पहुंचने के बाद भी लोग इतने दहशत में थे कि उन्हें भी आतंकी समझ लिया। इस घटना में केंद्र और राज्य सरकार अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकती। जब वहां काफी तादात में पर्यटकों की आमद हो रहीं थी तो पर्यटकों की सुरक्षा के लिए सेना और राज्य पुलिस के जवानों की तैनाती क्यों नहीं की गई। क्योंकि एलओसी से सटे कश्मीरी जिलों में आतंकवाद खूब फलता -फूलता रहा है।

कियानी के विभाजनकारी संदेश को हमारी सरकार, खुफि या एजेंसिया और सुरक्षा एजेंसिया नहीं समझ पाईं। ऐसे संवेदनशील पर्यटक स्थलों पर सुरक्षा के सख्त इंतजाम होने चाहिए थे। क्योंकि यह इलाका काफी ऊंचाई पर है जहाँ का प्राकृतिक लुत्फ उठाने के लिए भारी तादात में देशी- विदेशी पर्यटक आ रहे थे। यह इलाका एलओसी से सटा है और प्राकृतिक जाटिलताओं से भरा है। ऊँचे पहाड़, नदिया घने -जंगल, देवदार और चीड़ के पेड़ यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता को और बढ़ाते हैं। यहाँ आतंकवादियों की पहुँच जटिल होने के बाद लेकिन सुगम है। यहाँ की संवेदनशीलता को देखते हुए अगर हमारी सुरक्षा एजेंसियां सतर्क होती तो निश्चित रूप से इस नरसंहार से बचा जा सकता था। राज्य में इस तरह की घटनाएं पर्यटन उद्योग और उसकी संभावनाओं पर पानी फेरती हैं। हम अपनी चूक और नाकामियों से नहीं बच सकते। यह गंभीर मंथन का विषय है। कश्मीर के पर्यटन स्थलों पर हमें सुरक्षा व्यवस्था को सख्त रखना होगा। भविष्य में ऐसी स्थिति से बचने के लिए वहां सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करने होंगे। यह हमला भारत की आत्मा पर है यह राजनीति का वक्त नहीं है। सारा देश गुस्से में है। रणनीति बनाकर पाकिस्तान और आतंकवाद को सबक सिखाने की जरूरत है। कश्मीर के पूर्व बंगाल के मुर्शिदाबाद में वक्फ संशोधन कानून के विरोध में हिंदुओं को जिस तरह निशाना बनाया गया वह किसी से छुपा नहीं है। इसके अलावा रामनवमी जुलूस पर महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश भी सुनियोजित तरीके से हिंदुओं पर हमले हुए। उत्तर प्रदेश में संभल किसी से छुपा नहीं है। वहां किस तरह हिंदुओं का उत्पीड़न हुआ उसे कौन नहीं जानता। हिंसक हमलों में उनकी संपत्तियों और मंदिरों को नष्ट किया गया। हालांकि मुस्लिम इलाकों में भी हिंदूओं का स्वरुप देखने को मिला जहाँ मस्जिदों को निशाना बनाया गया। उनपर चढ़ कर धार्मिक नारेबाजी की गई। पश्चिम बंगाल राज्य में हिंदुओं को पलायित होना पड़ा। पीड़ित हिंदू बंगाल पुलिस की मदत के लिए चिल्लाते रहे लेकिन कोई सुरक्षा नहीं मिली। बाद में बंगाल उच्च न्यायालय के आदेश के बाद हिंसा प्रभावित इलाके में केंद्रीय बल पंहुचा।

बढ़ता तापमान इंसानों के लिए खतरे की घंटी

–मुकेश तिवारी–

पूरी दुनिया के वैश्विक तापमान में द्रुत गति से परिवर्तन हो रहा है। यहां तक कि ऋतु चक्र में भी बदलाव रहा है। पृथ्वी के औसत तापमान में भी वृद्धि हो रही है, यह सिर्फ मौसमी बदलाव नहीं है, बल्कि गंभीर पर्यावरणीय संकट के लक्षण है। गौरतलब है कि पहले जहां गरमी का प्रकोप सिर्फ मैदानी इलाकों तक सीमित रहता था। लेकिन अब यह शनै -शनै पहाड़ी इलाकों तक पहुंचने लगा है। लेकिन हम कथित विकास की मदहोशी से जाग नहीं पा रहे जबकि तल्ख सच्चाई यह है। कि पर्यावरण या जैव विविधता संरक्षण सीधे-सीधे हमारे अस्तित्व से जुड़ा मसला है। समूचे विश्व में 2 लाख किस्म के पौधे और 10 लाख 50 हजार प्रजातियों के प्राणी है। इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन आफ नेचर की एक रिपोर्ट के मुताबिक विश्व में जीव जंतुओं की 47677 विशेष प्रजातियों में से एक तिहाई से अधिक यानी की 15890 प्रजातियों पर विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है।

साल दर साल गर्मी कहर बरपाती जा रही है। इस साल भी अप्रैल के महीने में तापमान 44 डिग्री पर पहुंच चुका है। पृथ्वी का तेजी से बढ़ता तापमान सिर्फ मानव जाति के लिए ही खतरे की घंटी नहीं है बल्कि वन्य जीवों, पक्षियों और समूचे इकोसिस्टम पर भी गंभीर प्रभाव डाल रहा है। अमेरिका के कोलारेडो विश्वविद्यालय के शोधकताओं ने प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंस में प्रकाशित शोध से सचेत किया है कि जलवायु संकट की वजह से पिघलती बर्फ के कारण समुद्र का जलस्तर इस सदी के अंत तक दुगने से भी ऊपर निकल जाएगा। शोधकताओं ने समुद्र के बढ़ते जल स्तर के लिए दो महत्वपूर्ण कारण बताए हैं। पहला ग्रीन हाउस गैसों के बढ़ते उत्सर्जन की वजह से पृथ्वी पर हवा और पानी का तापमान बढ़ना, और दूसरा जमीनी बर्फ के तेजी से पिघलने से समुद्री जल स्तर में लगातार इजाफा होना। वर्ल्ड वेदर एटिब्यूशन के मुताबिक जलवायु परिवर्तन की वजह से ही तापमान में वृद्धि, भारी बारिश और तेज तूफान जैसे ज्यादा और गंभीर मौसम का सामना करना पड़ा रहा है। मैक्सिको की खाडी स्थित लुइसियाना का डेलाक्रोइस शहर देश दुनिया में चर्चा का विषय बना चुका है उक्त शहर शने -शने समुद्र में समा रहा है। पिछले 100 साल में लुइसियाना की 1880 वर्ग मीटर भूमि समुद्र में डूब चुकी है। स्थिति कुछ ऐसी है कि 17 वर्ग मील भूमि हर साल डूब रही है। एक अध्ययन के मुताबिक पिछले 100 साल में समुद्र का पानी भरने की रफ्तार पिछली 27 सदियों से अधिक है। वैज्ञानिकों की माने तो यदि समय रहते धरती का तापमान रोकने के प्रयास नहीं किए गए तो दुनिया भर में समुद्र का जलस्तर 50 से 130 सेंटीमीटर तक बढ़ सकता है। कुछ समय पहले कैंब्रिज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने दावा किया था कि आने वाले एक दो वर्ष में अटलांटिक समुद्र की बर्फ पूरी तरह से पिघलाकर समाप्त हो जाएगी। विकास के नाम पर प्रकृति से बढ़ती छेड़छाड़ का खमियाजा मानव जाति से लेकर वन्यजीव, पक्षियों को अपने विनाश से चुकाना पड़ सकता है। खासकर घरों, फैकिटयों और गाड़ियों में तेल और गैस जैसे जीवाश्म ईंधनों के इस्तेमाल से निकली कार्बन डाइऑक्साइड व पराबैंगनी विकिरण से हवा, पृथ्वी, पानी गर्म हो रहे है। बीती आधी सदी में कोयला - पेट्रोलियम के धुंए ने वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड और दूसरी ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा को खतरनाक हद तक पहुंचा दिया है। वैज्ञानिकों का दो-टूक शब्दों में कहना है कि सामान्य तौर पर सूर्य की किरणों से आने वाली ऊष्मा का एक हिस्सा वायुमंडल में जरूरी ऊर्जा देकर अतिरिक्त विकिरण के रूप में पृथ्वी की सतह से टकराकर अंतरिक्ष में लौट जाता है। लेकिन वर्तमान में ग्रीन हाउस गैस लौटने वाली अतिरिक्त उष्मा को भी सोख ले रही है। जिसकी वजह से पृथ्वी की सतह का तापमान तेजी से बढ़ता जा रहा है। वर्षा जल की अधिकता वाले जंगलों में वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से पराबैंगनी विकिरण को सोखने और छोड़ने का संतुलन बिगबता जा रहा है। आंकड़ों के मुताबिक प्रति वर्ष तकरीबन 73 लाख हेक्टर जंगल नष्ट हो रहे हैं। ज्यादातार रासायनिक खादों और कीटनाशकों के उपयोग, वृक्षों के काटने से मिट्टी की दशा भी बिगड़ रही है। वहीं जंगली और समुद्री जीव का अंधाधुंध शिकार भी संतुलन को खराब करता है। तेजी से बढ़ रही जनसंख्या भी इसमें इजाफा कर रही है। 20वीं सदी में में दुनिया की जनसंख्या लगभग 1.7 अरब थी, लेकिन अब 6 गुना ज्यादा 7.5 अरब से ज्यादा है। पृथ्वी के क्षेत्र फल में किसी तरह का इजाफा होने से रहा, उपलब्ध संसाधनों के उपयोग के लिए दंगे फसाद बढगे। पर्यावरण पर इसका असर होना तय है। कुछेक साल पहले पेरिस समझौते के तहत विश्व में 190 देशों में वैश्विक तापमान वृद्धि को 2 डिग्री सेल्सियस से नीचे रखने पर आम सहमति बनी थी। वजह साफ है कि आज जिस द्रुत गति से दुनिया चल रही है, उसे तापमान बढ़ोतरी 3 डिग्री होने का अंदेशा है। गौरतलाव बात है कि पेरिस जलवायु सम्मेलन में हिस्सा लेने वाले तमाम देशों ने स्वेच्छा से इस दिशा में अपने लक्ष्य निर्धारित किए हैं। 148 देश उत्सर्जन में कमी लाने के लिए रजामंद है। सिर्फ जलवायु सम्मेलन, संगोष्ठी व कार्यक्रमों से पर्यावरण संकट से निजात नहीं मिल सकती इसके लिए समाज के अंतिम व्यक्ति को भी अपनी जवाबदेही तय करना होगी, कर्तव्य निभाने होंगे।

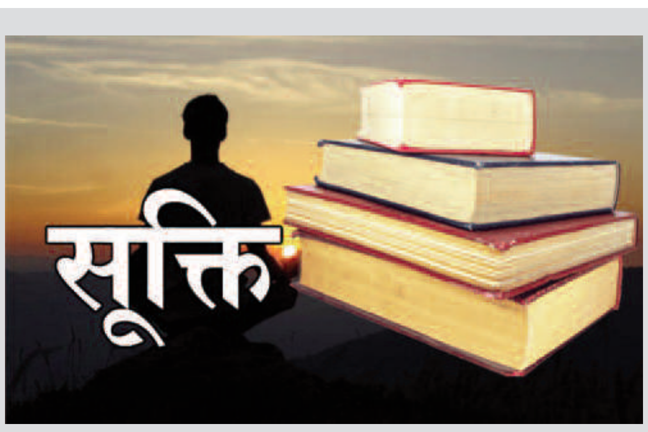

अज्ञानता और विचार हीनता मानवता के विनाश के दो सबसे बड़े कारण है। - जॉन टिलोटसन

जब भी कोई हंसने का अवसर मिले तो, ह्नहंसेह्न यह एक सुलभ दवा है। - लार्ड ब्रायन

आतंकवाद पर अमरीका का ढुलमुल रवैया

–योगेंद्र योगी–

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले 26 से अधिक पर्यटक मारे गए। पाकिस्तान प्रायोजित आतंकियों ने यह हमला ऐसे समय में किया जब अमरीका के उपराष्ट्रपति जेडी वेन्स अपनी भारतीय मूल की पत्नी उषा और बच्चों के साथ भारत की यात्रा पर थे। इस हमले के पीछे पाकिस्तान का निहितार्थ इस यात्रा में विघ्न डाल कर कश्मीर के मुद्दे पर विश्व का ध्यान आकर्षित करना था। पाकिस्तान इस तरह के कुत्सित प्रयास पूर्व में भी कर चुका है। बेरोजगारी, भारी भरकम कर्जा और घरेलू आतंकवाद से त्रस्त पाकिस्तान ने इन समस्याओं से ध्यान हटाने के लिए वेन्स की यात्रा के दौरान हमला करवाने के समय का चुनाव किया। अमरीका सहित विश्व के तकरीबन सभी देशों ने इस हमले की तीखी निंदा की। सवाल यही है कि क्या अमरीका सिर्फ निंदा तक ही सीमित रहेगा। पूर्व में भी इसी तरह के पाक प्रायोजित हमले के दंश भारत झेलता रहा है। जब कभी भी ऐसे हमले हुए हैं, अमरीका ने सिर्फ घड़ियाली आंसू ही बहाए हैं। सही मायने में तो अमरीका चाहता ही नहीं है कि पाकिस्तान पर ऐसी आतंकी वारदातों को रोकने के लिए कड़ी कार्रवाई करे। यही वजह है कि अन्य देशों की तरह अमरीका भी सिर्फ सहानुभूति जता कर अपनी जिम्मेदारी पूरी कर लेता है। अमरीका बेशक इन हमलों के लिए सीधा जिम्मेदार नहीं हो, किंतु पाकिस्तान के साथ उसके सैन्य रिश्ते कहीं न कहीं आतंकवाद को प्रोत्साहित करते नजर आते हैं। यह पहला मौका नहीं है जब किसी अमरीकी विशिष्ट व्यक्ति के भारत दौरे के दौरान आतंकी वारदात हुई है। 20 मार्च 2000 की रात को पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियों ने जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग जिले के चिट्टीसिंहपोरा गांव में 36 सिख ग्रामीणों का नरसंहार किया था। यह घटना अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की 21-25 मार्च की यात्रा से ठीक पहले हुई थी। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने क्लिंटन के सामने हमले के पीछे पाकिस्तान का हाथ होने का मुद्दा उठाया था। उस समय क्लिंटन जयपुर और आगरा के दौरे पर थे, जबकि विदेश मंत्री मैडलिन अलब्राइट और उप विदेश मंत्री स्ट्रोब टैलबोट भारतीय अधिकारियों से बातचीत करने के लिए दिल्ली में ही थे। वर्ष 2002 में जब दक्षिण एशियाई मामलों को लेकर अमरीकी असिस्टेंट सेक्रेटरी क्रिस्टीना बी रोका भारत की यात्रा पर थीं, तब 14 मई 2002 को जम्मू-कश्मीर के कालूचक के पास एक आतंकवादी हमला हुआ। तीन आतंकवादियों ने मनाली से जम्मू जा रही हिमाचल रोडवेज की बस पर हमला किया और सात लोगों की हत्या कर दी। इसके बाद आतंकी आर्मी क्वार्टर्स में घुस गए और अंधाधुंध गोलीबारी की, जिसमें 10 बच्चों, आठ महिलाओं और पांच सैन्य कर्मियों सहित 23 लोग मारे गए। मारे गए बच्चों की उम्र चार से 10 साल के बीच थी और इस हमले में कुल 34 लोग घायल हुए थे। इन आतंकी हमलों से जाहिर है कि पाकपरस्त आतंकियों ने हमला करने के लिए ऐसे वक्त का चुनाव किया जबकि कोई न कोई प्रमुख अमरीकी भारत यात्रा पर आया हो। आश्चर्य की बात यह है कि इन हमलों के बावजूद अमरीका ने कभी पाकिस्तान के खिलाफ कठोर कार्रवाई नहीं की। कहने को अमरीका भारत को महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदार बताता है, किंतु हकीकत में उसका उद्देश्य सिर्फ व्यावसायिक हित साधना भर रहा है। अमरीका के व्यावसायिक हित सर्वोपरि हैं। भारत के भारी विरोध के बावजूद अमरीका ने पाकिस्तान को घातक एफ-16 लड़ाकू विमानों की बिक्री की। इतना ही नहीं, इनकी मरम्मत के नाम पर लाखों डालर की मदद भी अमरीका करता रहा है। अमरीका ने भारत के विरोध को नजरअंदाज करते हुए यह सैन्य मदद दी। अमरीका न सिर्फ भारत से दुश्मनी साधे हुए पाकिस्तान की हरसंभव मदद करता रहा है, बल्कि विदेशी धरती से भारत के खिलाफ साजिश करने वाले लोगों और देशों का सहयोग भी करता रहा है। कनाडा में आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के मामले में अमरीका ने कनाडा की पैरवी की। कनाडा फाइव आईज का सदस्य है।

फाइव आईज में कनाडा के अहम सहयोगी अमरीका ने पिछले साल निज्जर हत्याकांड में भारतीय एजेंट्स की कथित संलिप्तता के कनाडा के आरोपों पर टिप्पणी की थी। अमरीकी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने कहा था कि हमने साफ कर दिया है कि कनाडा के आरोप बेहद ही गंभीर हैं, जिन्हें गंभीरता से लिया जाना चाहिए। हम चाहते थे कि भारत कनाडा की जांच में सहयोग करे, लेकिन भारत सहयोग नहीं कर रहा। इसके बजाय भारत ने एक वैकल्पिक रास्ता चुना है। इतना ही नहीं, अमरीका से भारत को आतंकी कार्रवाई की धमकी देने वाले खालिस्तानी आतंकवादी गुरपतवंत सिंह पन्नू ने एयर इंडिया की फ्लाइट को उड़ाने की धमकी दी। इस पर भी अमरीका ने जानबूझ कर नकेल नहीं कसी। हाल ही में अमरीका की ओर से जारी किए गए बयानों में भी यह साफ किया जा चुका है कि वह पाकिस्तान को भारत या अफगानिस्तान के नजरिए से नहीं देखता है। अमरीका की ओर से कहा गया कि वह भारत, चीन, ईरान, अफगानिस्तान से सीमा साझा करने वाले परमाणु सशक्त पाकिस्तान को एक महत्वपूर्ण देश समझता है। अमरीकी विदेश मंत्रालय का कहना है कि अमरीका पाकिस्तान के साथ कई मुद्दों पर साथ मिलकर काम कर रहा है। इन मुद्दों में ऊर्जा, कारोबार, निवेश, स्वास्थ्य, क्लीन एनर्जी, क्लाइमेट संकट से बचाव, अफगानिस्तान में स्थिरता और आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई शामिल है। अमरीकी विदेश मंत्रालय ने कहा कि पाकिस्तान में विदेशी निवेश का सबसे बड़ा योगदान अमरीका का है। साथ ही पाकिस्तान का सबसे बड़ा निर्यात बाजार भी है। भारत से दोस्ती का दंभ भरने वाले अमरीका ने पाकिस्तान को आतंकी पालने पर कभी भी सख्त कार्रवाई नहीं की। इसके विपरीत भारत की तरक्की और परमाणु क्षमता अमरीका को तब तक खटकती रही, जब तक भारत ने दोनों क्षेत्रों में विश्व में अपना लोहा नहीं मनवा दिया। भारत ने चाबहार पोर्ट को लेकर ईरान के साथ समझौता किया है। इससे भारत को ओमान की खाड़ी में स्थित इस रणनीतिक पोर्ट का संचालन अधिकार 10 साल के लिए मिल गया है। लेकिन इस समझौते को अमरीका ने नापंसद कर दिया।

अमरीका ने भारत को प्रतिबंधों की चेतावनी जारी की। हालांकि, भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अमरीका को दो टूक जवाब दे दिया और कहा कि अमरीका अपनी सोच बड़ी करे, क्योंकि इस योजना से पूरे क्षेत्र को फायदा होगा। वैसे यह पहली बार नहीं है जब अमरीका ने भारत को प्रतिबंधों की चेतावनी दी है। बल्कि, 50 साल पहले जब भारत ने पोखरण में पहला परमाणु परीक्षण किया था, तब अमरीका ने 30 सालों के लिए भारत पर प्रतिबंध लगा दिया था। भारत ने इन प्रतिबंधों की परवाह किए बगैर तरक्की का रास्ता जारी रखा। भारत सैन्य प्रौद्योगिकी सहित अन्य क्षेत्रों में आत्मनिर्भर हो गया। इसके बाद व्यापारी अमरीका को लगने लगा कि इन प्रतिबंधों से अमरीका को ही घाटा हो रहा है, तब जाकर इनको हटाया गया। सही मायने में अमरीका भारत को बराबरी का दर्जा देने से गुरेज करता रहा है। अमरीका का प्रयास यही रहा है कि भारत को पाकिस्तान के समकक्ष रखा जाए। भारत ने हर क्षेत्र में अपनी तरक्की से अमरीका के ऐसे प्रयासों को हमेशा झटका दिया है। ऐसे में अमरीका से कभी भी उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह पहलगाम में हुई आतंकी घटना के लिए जिम्मेदार पाकिस्तान को दंडित करेगा। भारत को अपने बलबूते ही ऐसी वारदातों से निपटने और पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए दूरगामी नीति अपनानी होगी।

(स्वतंत्र लेखक)

किस तरह के बर्तन में खाना पकाते हैं या खाते हैं आप

किचन के खाने से पूरी फैमिली की सेहत जुड़ी होती है इसलिए खाना बनाते वक्त साफ-सफाई का ध्यान रखना बहुत जरूरी होता है लेकिन क्या आप जानती है कि खाना बनाने वाले बर्तनों में भी परिवार की हेल्थ डिपेंड करती है। इस बात पर ध्यान देने की बहुत जरूरत होती है कि हम किस तरह के बर्तन में खाना पकाते हैं या खाते है। आइए जानते हैं कि खाना पकाने के लिए किस तरह के बर्तनों का इस्तेमाल करना चाहिए-

पीतल

पीतल के बर्तनों में खाना पकाना एवं खाना आमतौर पर पुराने समय में ज्यादा किया जाता था। यह नमक और अम्ल के साथ प्रतिक्रिया करता है, इसलिए खट्टी चीजों का या अधिक नमक वाली चीजों को इसमें पकाना या खाना नहीं चाहिए, वरना फूड पॉइजनिंग हो सकती है।

'तांबा

तांबे के बर्तनों का इस्तेमाल भी पुराने जमाने से ही किया जाता रहा है और यह भी पीतल की तरह ही अम्ल और नमक के साथ प्रतिकिया करता है। कई बार पकाए जा रहे भोजन में मौजूद ऑर्गेनिक एसिड बर्तनों के साथ रिएक्शन कर ज्यादा कॉपर पैदा कर सकते हैं, जो शरीर को नुकसान पहुंचाता है।

स्टेनलेस स्टील

स्टेनलेस स्टील का इस्तेमाल आज के समय में काफी चलन में है। यह एक मिक्स धातु है जो लोहे में कार्बन, क्रोमियम और निकल मिलाकर बनाई जाती है। इसमें खाना पकाने या बनाने में सेहत को कोई नुकसान नहीं होता। इन बर्तनों का तापमान बहुल जल्दी बढ़ता है।

एल्युमीनियम

एल्युमीनियम के बर्तनों का इस्तेमाल लगभग हर घर में होता ही है। गर्मी मिलने पर एल्युमीनियम के अणु जल्दी सक्रिय होते हैं और एल्युमीनियम जल्दी गर्म होता है। एल्युमीनियम के बर्तन में खाना पकाना हेल्थ के लिए अच्छा नहीं होता। यह भी एसिड के साथ बहुत जल्दी रिएक्शन करता है, इसलिए इसमें खटाई जैसे अचार, नींबू जैसी चीजों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

लोहा

भोजन पकाने और खाने के लिए लोहे के बर्तनों का इस्तेमाल हर तरह से फायदेमंद होता है। इन बर्तनों में पकाए गए भोजन में आयरन की मात्रा अपने आप बढ़ जाती है और आपको उसका भरपूर पोषण मिलता है। आमतौर पर सभी को आयरन की जरूरत होती है और महिलाओं के लिए खास तौर पर आयरन बहुत फायदेमंद होता है।

नॉन स्टिक

नॉन स्टिक का मतलब है, ना चिपकने वाला। ऐसे बर्तन जिनमें खाना चिपकता नहीं है और पकाने के लिए अधिक तेल या घी की जरूरत भी नहीं होती लेकिन इन बर्तनों को ज्यादा गर्म या खरोंच ना लगाएं, इससे इनमें कई ऐसे केमिकल निकलते हैं जो सेहत को नुकसान पहुंचाते हैं।

खूबसूरती ही नहीं घर में सुख-शांति बढ़ाने का काम भी करता है आइना

आइना सिर्फ चेहरा देखने के लिए बल्कि घर की खूबसूरती बढ़ाने का काम भी करता है। मगर आइना अगर वास्तु के हिसाब से लगा हो घर में सुख-शांति बढ़ाने का काम भी करता है। चलिए आज हम आपको बताते हैं कि घर में पॉजिटिव एनर्जी बढ़ाने के लिए किस आकार, साइज और दिशा में शीशा रखना चाहिए।

पैसों के किल्लत दूर करने के लिए

पैसों की तंगी दूर करने के लिए घर की दक्षिण दिशा में एक बड़ा गोल दर्पण लगाएं। इससे ना सिर्फ पैसों की किल्लत दूर होगी बल्कि यह घर में पॉजिटिव एनर्जी भी बढ़ाएगा।

सुख-शांति बनाए रखने के लिए

वास्तु के अनुसार, घर की उत्तर दिशा में आइना लगाने से घर में सुख-शांति बनी रहती है और इससे परिवार के सदस्यों में लड़ाई-झगड़े भी नहीं होती। इसके लिए आप उत्तर दिशा में अंडाकार शीशा लगाएं।

कपल्स के लिए

बेड के सामन दर्पण नहीं होना चाहिए क्योंकि इससे पति-पत्नी के रिश्ते पर बुरा असर पड़ता है। बेडरूम में शीशा ऐसी जगह लगाएं, जहां से इसमें बेड ना दिखे। आप बेडरूम की दक्षिण में तिकोना आइना लगा सकते हैं।

मुख्य दरवाजा

कभी भूलकर भी घर के मुख्य द्वारा पर शीशा ना रखें। ऐसा करने से घर में नाकारात्मक ऊर्जा का वास होता है। इसके साथ ही मुख्य दरवाजे पर कोई चमकदार चीज भी ना रखें

बाथरूम में इस दिशा में लगाएं आइना

जिन लोगों का बाथरूम दक्षिण या पश्चिम दिशा में है उनको उत्तर दिशा में वर्गाकार आइना लगाना चाहिए। ऐसा करने से बाथरूम का वास्तुदोष खत्म हो जाएगा।

घर में ना रखें टूटा हुआ आइना

घर में कभी-भी टूटा हुआ शीशा नहीं रखना चाहिए। इससे घर में नकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बढ़ जाता है। साथ ही इससे परिवार क बीच झगड़े भी होने लगते हैं।

शीशे के शो-पीस

शीशे के शो-पीस को या एक्वेरियम को हमेशा उत्तर-पूर्व दिशा में ही लगाएं। इस दिशा में आइना या शो-पीस लगाने से घर में साकारात्मक ऊर्जा का वासा होगा।

आज के समय में हर महिला अपने लुक के साथ एक्सपेरिमेंट करना पसंद करती है। यह एक्सपेरिमेंट सिर्फ कपड़ों या स्टाइल तक ही सीमित नहीं होता, बल्कि मेकअप में भी बदलाव करके एक नया लुक पाया जा सकता है। शायद यही कारण है कि हर महिला की मेकअप किट में कई तरह के कलर्स आसानी से मिल जाते हैं। अगर आप भी इस बार पार्टी में न्यू लुक पाने के लिए डार्क लिपस्टिक लगाने का मन बना रही हैं तो कुछ बातों का ध्यान अवश्य रखे

डार्क लिपस्टिक लगाने से पहले रखें ध्यान

लिप्स को करें तैयार

होंठों का फटना एक आम समस्या है। इसलिए अगर होंठ ड्राई या फटे हैं तो पहले उसे एक्सफोलिएट करें। इसके लिए शहद में कुछ बूंदें नारियल तेल व एक चम्मच चीनी डालकर मिक्स करें और उसे होंठों पर लगाकर हल्के हाथों से रब करें। करीबन पांच मिनट बाद ठंडे पानी से होंठ साफ करें।

ऐसे करें शुरूआत

होंठों पर लिपस्टिक लगाने से पहले लिप प्राइमर लगाना जरूरी है। यह आपके लिप्स को एक बेस देते हैं। अगर आप चाहें तो लिप बाम की एक पतली सी लेयर भी लगा सकती हैं। इसके बाद फेस मेकअप करें। जब यह लिप बाम सूख जाए, तो टिश्यू पेपर की मदद से अतिरिक्त बाम को हटाएं और फिर डार्क लिपस्टिक अप्लाई करें।

लिप ब्रश का इस्तेमाल

लिपस्टिक अप्लाई करते समय इस बात का ध्यान रखना बेहद आवश्यक होता है, फिर चाहे आप लाइट लिपस्टिक लगाएं या डार्क। कभी भी लिपस्टिक को सीधे न लगाएं, बल्कि इसके लिए लिपब्रश का प्रयोग करें। ऐसा करने से होंठों के अंत पर भी लिपस्टिक बिना फैले हुए बेहद आसानी से लग जाती है। इतना ही नहीं, लिपब्रश की मदद से लिपस्टिक लगाने के पश्चात होंठों को एक नई डेफिनेशन मिलती है।

इसका रखें ध्यान

यह अवश्य सुनिश्चित करें कि वह आपकी स्किन टोन को कॉम्पलिमेंट करता हो।

तो ये ट्रिक्स अपनाकर बच्चे के स्मार्ट पेरेंट्स बन सकते हैं आप

आज के किड्स बहुत स्मार्ट हैं। उन्हें कुछ सिखाने या बताने की जरूरत नहीं होती। उनकी यही स्मार्टनेंस पेरेंट्स के लिए अनेक मुश्किलें खड़ी कर देती है, जिन्हें हैंडल करना उनके लिए आसान नहीं होता। यदि आप चाहें तो कुछ ट्रिक्स अपनाकर अपने बच्चे के स्मार्ट पेरेंट्स बन सकते हैं।

बच्चों की फिजूलखर्ची

आजकल के बच्चों की फरमाइशें इतनी हैं तो मा-बाप उनकी फिजूलखर्ची से परेशान हो जाते हैं। ऐसे में पेरेंट्स को चाहिए को वह बच्चे को बचपन से ही सेविंग्स की आदत डालें, ताकि वह अपनी पसंद की चीज खुद खरीद सकें। उन्हें अपनी पॉकेट मनी का कुछ हिस्सा पिग्गी बैंक में जमा करने के लिए कहें। साथ ही बच्चों को पैसों की बैल्यू समझाएं और उन्हें कहें कि वह जरूरत पड़ने पर ही पैसे खर्च करें।

टैक्नोलॉजी के शिकार

टैक्नेलॉजी के बढ़ते प्रभाव से बच्चे भी अछूते नहीं है। वे अपने पेरेंट्स को जैसा करते देखते हैं वैसा ही करते हैं। यदि पेरेंट्स टैक्नो एडिक्ट होंगे तो बच्चे भी टैक्नो एडिक्ट ही बनेंगे। इसके लिए जरूरी है कि बच्चों को टीवी, लैपटॉप, स्मार्टफोन और टैबलेट का इस्तेमाल निर्धारित समय सीमा तक ही करने दें।

स्मार्टफोन, टैबलेट और लैपटॉप पर पासवर्ड लगाकर रखें और कुछ दिन बार पासवर्ड बदलते रहें।

डिनर, पूजा और फैमिली गैदरिंग के समय उन्हें टीवी, लैपटॉप, कम्प्यूटर और मोबाइल से दूर रखें।

बच्चों के साथ क्वालिटी टाइम बिताएं और उन्हें वीकेंड में आउटिंग या पिकनिक के लिए ले जाएं।

जब बच्चे हर बात के लिए कहे ना

आजकल बच्चे अपने पेरेंट्स के मुंह पर ही काम करने से मना कर देते हैं। कई बार तो वह यह भी नहीं देखते थे पेरेंट्स थक गए हैं और काम करने से सीधा मना कर देते हैं। ऐसे में उन्हें डांटने या मारने की बजाए प्यार से बात करें और बड़ों का आदर करना सिखाए। इससे वह आरास से आपका कहना मानेंगे।

जब बच्चों पर हो पीयर प्रैशर

बचपन से ही बच्चों में पीयर प्रैशर का असर दिखना शुरू हो जाता है। 11-15 साल के बच्चों पर दोस्तों का दबाव अधिक होता है लेकिन पेरेंट्स इस प्रैशर को समझ नहीं पाते। हालांकि इसका सकारात्मक प्रभाव भी होता है, जैसे कि बच्चा एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टीविटीज में भाग लेने लगता है। मगर कई बार इसका बच्चे इसकी वजह से झूठ, चोरी और स्मोकिंग और क्लास बंक करना जैसी गलत आदतों के आदि हो जाते हैं। ऐसे में पेरेंट्स को चाहिए कि वो बच्चों को सही राह दिखाएं।

बच्चों के साथ दोस्ताना व्यवहार रखें, ताकि वह अपनी हर बात आपसे शेयर करें।

उनकी रचनात्मकता को बढ़ावा दें तथा उन्हें मजेदार गतिविधियों में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित करें।

उनके दोस्तों के बारे में पूरी जानकारी रखें।

बच्चों के व्यवहार में कोई बदलाव महसूस होने पर तुरंत उनके टीचर्स और दोस्तों से मिलें। इस बारे में उनसे बात करें।

संक्षिप्त खबरें

पहलगाम हमले के विरोध में काठमांडू में प्रदर्शन, पाकिस्तानी दूतावास बंद करने की मांग

काठमांडू, (एजेंसी) : जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में एक नेपाली युवक सहित हिंदू पर्यटकों की हत्या के विरोध में शनिवार को काठमांडू स्थित पाकिस्तानी दूतावास के सामने अलग-अलग संस्थाओं और संगठनों ने प्रदर्शन किया। इस दौरान पाकिस्तान के खिलाफ जमकर नारेबाजी हुई। प्रदर्शनकारियों ने नेपाल में पाकिस्तानी दूतावास को बंद करने की मांग भी की।

कई सामाजिक संगठनों ने आज सुबह से ही काठमांडू के महाराजगंज स्थित पाकिस्तानी दूतावास के सामने प्रदर्शन किया। पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के विरोध में नारेबाजी करते हुए इन प्रदर्शनकारियों ने पाकिस्तानी सेना के प्रमुख की तस्वीर को लेकर भी विरोध प्रदर्शन किया।

पाकिस्तानी दूतावास के सामने प्रदर्शन करने वाले भूपेंद्र क्षेत्री ने कहा कि पाकिस्तान द्वारा आतंकवाद का पालन पोषण करने का नतीजा है कि यह पूरा क्षेत्र आतंक से ग्रसित है। पहलगाम में हुए आतंकी हमले में पाकिस्तानी सेना प्रमुख का हाथ है।

उत्तर कोरिया ने घातक हथियारों से लैस युद्धपोत का जलावतरण किया

प्योंगयांग, 26 अप्रैल (हि.स.)। उत्तर कोरिया ने शुक्रवार को अपने एक नए 5,000 टन के युद्धपोत का जलावतरण किया। दावा किया गया है कि यह विध्वंसक है और सबसे शक्तिशाली घातक हथियारों से लैस है। इस अवसर पर उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन अपनी पुत्री के साथ मौजूद रहे। इस युद्धपोत का जलावतरण एआई तकनीक आधारित नए आत्मघाती और टोही ड्रोन के परीक्षण की देखरेख के लगभग एक महीने बाद किया गया। उत्तर कोरिया की कोरियन सेंट्रल न्यूज एजेंसी ने आज यह जानकारी दी।

कोरियन सेंट्रल न्यूज एजेंसी के अनुसार, किम जोंग-उन ने इस अवसर पर देश की नौसेना की समुद्री शक्ति को बढ़ाने के प्रयासों का बखान किया। युद्धपोत का जलावतरण पीपुल्स रिवोल्यूशनरी आर्मी की 93वीं स्थापना वर्षगांठ पर पश्चिमी बंदरगाह शहर नाम्फो में एक शिपयार्ड में आयोजित समारोह के दौरान किया गया। किम ने अपनी बेटी जू-ए के साथ समारोह में हिस्सा लिया। किम ने उत्तर कोरियाई जापानी-विरोधी क्रांतिकारी सेनानी के नाम पर चोई ह्योन नामक नवनिर्मित युद्धपोत का निरीक्षण भी किया।

किम ने इस मौके पर भविष्य में परमाणु-संचालित पनडुब्बियों को विकसित करने का संकल्प दोहराया। उत्तर कोरियाई नेता ने मार्च में दक्षिण कोरिया और संयुक्त राज्य अमेरिका के संयुक्त सैन्य अभ्यास की निंदा की। किम ने कहा कि अमेरिका और दक्षिण कोरिया की नई परमाणु युद्ध योजना डेमोक्रेटिक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ कोरिया के प्रति शत्रुतापूर्ण इरादे की सबसे स्पष्ट अभिव्यक्ति है। यह क्षेत्रीय और वैश्विक शांति के लिए सीधा खतरा है।

कोलंबिया विवि के छात्र और फिलिस्तीन समर्थक खलील को बिना वारंट हिरासत में लेने का खुलासा

वाशिंगटन, (एजेंसी) : फिलिस्तीन समर्थक और कोलंबिया विश्वविद्यालय के स्नातक छात्र महमूद खलील को पिछले महीने बिना किसी गिरफ्तारी वारंट के हिरासत में लिया गया। सीरिया में जन्मे और ग्रीन कार्ड धारक खलील को 8 मार्च को रमजान के दौरान इफ्तार से लौटने के बाद गिरफ्तार किया गया था।

एनबीसी न्यूज चैनल के अनुसार, गुरुवार को जारी किए गए अदालती दस्तावेजों से इसकी पुष्टि हुई है कि खलील को बिना किसी गिरफ्तारी वारंट के हिरासत में लिया गया। अदालती दस्तावेजों में होमलैंड सुरक्षा विभाग के वकीलों ने कहा कि आव्रजन अधिकारियों के पास "वारंट रहित गिरफ्तारी करने के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ थीं"। यह आशंका थी कि वह वह सहयोग नहीं करेगा और भागने की फिराक में है। संघीय आव्रजन अधिकारियों ने कहा कि उन्हें विश्वास था कि उसके भागने का जोखिम है। इसलिए गिरफ्तारी आवश्यक थी।

चैनल के अनुसार, गिरफ्तारी के वीडियो फुटेज में खलील को सहयोग करते हुए और अधिकारियों से यह कहते हुए दिखाया गया है, "हां, मैं आपके साथ चलने के लिए तैयार हूं।" खलील इस समय लुइसियाना में एक इमिग्रेशन डिटेंशन सुविधा में हिरासत में है। खलील की पत्नी नूर अब्दुल्ला ने पिछले दिनों पहले बच्चे के जन्म दिया है।

खलील के वकीलों का तर्क है कि उनके मुवक्किल के अपार्टमेंट बिल्डिंग में प्रवेश करने के लिए वारंट की आवश्यकता थी। खलील की कानूनी टीम मामले को खारिज करने की मांग कर रही है। टीम का दावा है कि उसने गिरफ्तारी के दौरान अधिकारियों के साथ सहयोग किया और यह साबित करने के लिए कोई सबूत पेश नहीं किया गया है कि वह भागने का जोखिम था।होमलैंड सुरक्षा विभाग की सहायक सचिव ट्रिसिया मैकलॉघलिन ने शुक्रवार को एक ई-मेल बयान में कहा, खलील ने भागने की कोशिश की, इसलिए उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

ईपीएफओ ने 15वें रोजगार मेले में 976 नवनियुक्त कर्मियों को नियुक्ति पत्र सौंपे

नई दिल्ली, (एजेंसी) : कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने शनिवार को रोजगार मेले के 15वें संस्करण के तहत 976 नए भर्तियों को नियुक्ति पत्र सौंपे। इस अवसर पर केन्द्रीय श्रम और रोजगार मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया भी मौजूद रहे।

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय ने एक बयान में बताया कि रोजगार मेला देशभर में 47 स्थानों पर आयोजित किया गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संबोधित करते हुए इस कार्यक्रम में ईपीएफओ सहित विभिन्न सरकारी विभागों में नए नियुक्त 51,000 से ज्यादा युवाओं को नियुक्ति पत्र वितरित किए।

मंत्रालय ने कहा कि इस महत्वपूर्ण भर्ती अभियान के तहत ईपीएफओ अपने कार्यबल को मजबूत करने के लिए नए लोगों का स्वागत करता है, जिससे पूरे भारत में लाखों ग्राहकों को सामाजिक सुरक्षा सेवाओं की कुशल डिलीवरी सुनिश्चित हो सके। इस अभियान के तहत 345 लेखा अधिकारियों/प्रवर्तन अधिकारियों और 631 सामाजिक सुरक्षा सहायकों को नियुक्ति पत्र जारी किए गए हैं। ये नवनियुक्त कर्मचारी सरकार के मजबूत एवं समावेशी अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण का समर्थन करते हुए भविष्य निधि, पेंशन और बीमा लाभ प्रदान करने के ईपीएफओ के मिशन में योगदान देंगे।

मंत्रालय ने कहा कि नवनियुक्त कर्मचारी ईपीएफओ के भविष्य निधि, पेंशन और बीमा लाभ प्रदान करने के मिशन में योगदान देंगे, जो सरकार के मजबूत और समावेशी अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण का समर्थन करेगा। ईपीएफओ ने नियमित भर्तियां सुनिश्चित करने के लिए मुख्यालय में भर्ती वर्टिकल की स्थापना की है और डॉ. मांडविया के निर्देशों का पालन करते हुए एक भर्ती कैलेंडर विकसित किया है।

उल्लेखनीय है कि पिछले एक साल के दौरान ईपीएफओ ने 159 सहायक भविष्य निधि आयुक्तों, 84 कनिष्ठ अनुवाद अधिकारियों, 28 स्टेनोग्राफरों, 2674 एसएसए तथा अन्य पदों पर भर्ती की है। एपीएफसी, ईओ/एओ, पीए और एएसओ की भर्ती प्रक्रिया जारी है। नवनियुक्त कर्मियों को आईजीओटी कर्मयोगी प्लेटफॉर्म के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त करने की सुविधा मिलेगी। इसके साथ-साथ उन्हें औपचारिक प्रशिक्षण भी मिलेगा, जिससे वे अपने कौशल को बढ़ा सकेंगे और अपनी भूमिकाओं में उत्कृष्टता हासिल कर सकेंगे।

शहबाज शरीफ का पाकिस्तान के सशस्त्र बलों से तैयार रहने का आह्वान

एबटाबाद, (एजेंसी) : पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने आज सुबह एबटाबाद के काकुल स्थित पाकिस्तान सैन्य अकादमी के पासिंग आउट समारोह में हिस्सा लिया। शहबाज ने इस मंच का भी उपयोग भारत को धमकी देने के लिए किया। उन्होंने धमकी भरे लहजे कहा कि भारत आरोप-प्रत्यारोप का खेल बंद करे। पाकिस्तान उसके किसी भी दुस्साहस का ताकत से जवाब देने के लिए तैयार है। शरीफ ने मुल्क की संप्रभुता की रक्षा के लिए सशस्त्र बलों से तैयार रहने का आह्वान किया।

जिओ न्यूज की खबर के अनुसार, प्रधानमंत्री शहबाज ने शनिवार को भारत से लगातार आरोप-प्रत्यारोप का खेल बंद करने की मांग की और कहा कि किसी भी दुस्साहस का पूरी ताकत से जवाब दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि पहलगाम हमले के भारत मुल्क पर निराधार आरोप लगा रहा है। भारत के पास आरोपों के पक्ष में कोई साक्ष्य नहीं हैं। पहलगाम हमले की अंतरराष्ट्रीय निष्पक्ष और पारदर्शी जांच जरूरी है।

शहबाज ने सिंधु जल संधि के तहत पाकिस्तान के जल हिस्से को रोकने या मोड़ने के किसी भी कदम के खिलाफ सख्त चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि इस मोर्चे पर पाकिस्तान के संकल्प के बारे में किसी को भी कोई भ्रम नहीं होना चाहिए। पाकिस्तान ने भारत के 2019 के हवाई हमले का माकूल जवाब दिया। भविष्य में किसी भी दुस्साहस का इसी तरह का जवाब दिया जाएगा। प्रधानमंत्री शहबाज ने कहा कि पाकिस्तान शांति के लिए खड़ा है, लेकिन इसे कमजोरी नहीं समझा जाना चाहिए। मुल्क की गरिमा और सुरक्षा से कभी समझौता नहीं किया जाएगा। सिंधु जल संधि देश के 240 मिलियन लोगों के लिए जीवन रेखा है। इसके पानी की उपलब्धता को हर कीमत पर और हर परिस्थिति में सुरक्षित रखा जाएगा।

थाईलैंड में विमान हादसा, छह पुलिस अधिकारियों की मौत

बैंकॉक,(एजेंसी) : थाईलैंड की खाड़ी में शुक्रवार सुबह पुलिस का एक छोटा विमान (डीएचसी-6-400 ट्विन ओटर) दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस हादसे में विमान में सवार सभी छह पुलिस अधिकारियों की मौत हो गई। थाईलैंड के 191 आपातकालीन केंद्र ने सुबह 8.15 बजे दुर्घटना की सूचना दी। केंद्र के अनुसार, यह विमान 'बेबी ग्रैंड हुआ हिन होटल' से लगभग 100 मीटर दूर दुर्घटनाग्रस्त होकर थाईलैंड की खाड़ी में गिर गया।

बैंकॉक पोस्ट अखबार की खबर के अनुसार, 'बेबी ग्रैंड हुआ हिन होटल' समुद्र तट के किनारे फेचबुरी के चा-आम जिले में है। इस विमान में पुलिस के तीन पायलट, दो मैकेनिक और एक इंजीनियर सवार थे। थाई पुलिस के प्रवक्ता पोल लेफ्टिनेंट जनरल अचायोंन क्रैथोंग ने बताया कि विमान पैराशूट प्रशिक्षण अभ्यास की तैयारी के लिए परीक्षण उड़ान पर था। पांच अधिकारियों की घटनास्थल पर मौत हो गई। गंभीर रूप से घायल पायलट पोल कैप्टन चतुरोंग वट्टानापाइसरन को पास के अस्पताल ले जाया गया। वहां शाम करीब 4 बजे उन्होंने दम तोड़ दिया। थाईलैंड के पुलिस प्रमुख किथाराथ पुनपेच ने दुर्घटनास्थल का निरीक्षण किया। उन्होंने बताया कि प्रारंभिक जांच से पता चला है कि विमान रन-वे से बाहर निकलने के कुछ ही समय बाद संतुलन खोकर खाड़ी में गिर गया।

भारत में 625 उड़ान मार्ग शुरू, इससे 1.49 करोड़ यात्रियों को हुआ फायदा

नई दिल्ली, (एजेंसी) : देश में उड़ान योजना के तहत 625 हवाई मार्गों पर सेवाएं शुरू हो चुकी हैं। इन मार्गों से देशभर के 90 हवाई अड्डे आपस में जुड़ गए हैं। इस योजना का 1.49 करोड़ से ज्यादा यात्रियों ने लाभ उठाया है। इस योजना की शुरूआत 21 अक्टूबर 2016 को हुई थी, जिसकी पहली उड़ान 27 अप्रैल, 2017 को शिमला से दिल्ली के बीच भरी गई थी। इसका उद्देश्य देश के छोटे शहरों को भी हवाई यात्रा से जोड़ना और लोगों को सस्ती हवाई सेवाएं उपलब्ध कराना था।

नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने शनिवार को जारी एक बयान में बताया कि देश में हवाई अड्डों की संख्या 2014 में 74 थी, जो 2024 तक बढ़कर 159 हो गई है। पिछले 10 साल में हवाई अड्डों की संख्या दोगुनी से भी ज्यादा हो गई है। उड़ान योजना के तहत सरकार ने अब तक 4,023.37 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता (वीजीएफ) दी है, ताकि कंपनियां दूरदराज के इलाकों में भी उड़ानें चला सकें। इससे छोटे शहरों में पर्यटन, स्वास्थ्य सेवाओं और व्यापार को बढ़ावा मिला है और स्थानीय स्तर पर रोजगार भी बढ़ा है।

उड़ान ने क्षेत्रीय पर्यटन, स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच और व्यापार को मजबूत किया जिससे टियर-2 और टियर-3 शहरों में आर्थिक विकास को बढ़ावा मिला। लंबे समय से आकांक्षाओं के प्रतीक के रूप में देखा जाने वाला आकाश कभी भारत में कई लोगों के लिए एक अप्राप्य सपना था। नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने कहा कि ह्यउड़ानह्न सिर्फ एक योजना नहीं, बल्कि एक बड़ा बदलाव है। इस योजना ने छोटे शहरों और दूरदराज के इलाकों को भी देश के हवाई नेटवर्क से जोड़ दिया है। इसने आम आदमी के लिए हवाई यात्रा को सस्ता और आसान बना दिया है।

उड़ान योजना की परिकल्पना राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन नीति (एनसीएपी) 2016 के तहत की गई थी, जिसका लक्ष्य 10 साल का है ताकि टियर-2 और टियर-3 शहरों को बाजार संचालित लेकिन वित्तीय रूप से समर्थित मॉडल के माध्यम से जोड़ा जा सके। इस योजना ने एयरलाइनों को रियायतों और व्यवहार्यता अंतर निधि (वीजीएफ) के माध्यम से क्षेत्रीय मार्गों पर परिचालन करने के लिए प्रोत्साहित किया जिससे किफायती किराया और बेहतर पहुंच सुनिश्चित हुई।

नागर विमानन मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित इस प्रमुख योजना ने तब से भारत के क्षेत्रीय संपर्क परिदृश्य को बदल दिया है। आम नागरिक के लिए किफायती हवाई यात्रा का सपना पहली उड़ान के साथ साकार हुआ। यह ऐतिहासिक उड़ान 27 अप्रैल 2017 को शुरू हुई थी, जो शिमला की शांत पहाड़ियों को दिल्ली के हलचल भरे महानगर से जोड़ती है। 27 अप्रैल 2025 को भारतीय विमानन क्षेत्र में एक परिवर्तनकारी यात्रा की शुरूआत हुई जिसने अनगिनत नागरिकों के लिए आसमान खोल दिया। इस योजना के कल 8 साल पूरे हो जाएंगे।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार ने 21 अक्टूबर, 2016 को क्षेत्रीय संपर्क योजना (आरसीएस) उड़ान (ह्यउड़े देश का आम नागरिक) का शुभारंभ किया था। यह प्रधानमंत्री के इस विजन पर आधारित है कि हवाई चप्पल पहनने वाला एक आम आदमी भी हवाई यात्रा करने में सक्षम होना चाहिए, उड़ान का उद्देश्य सभी के लिए उड़ान को सुलभ और किफायती बनाकर विमानन को बढ़ावा देना है। इस प्रमुख योजना ने तब से भारत के क्षेत्रीय संपर्क परिदृश्य को बदल दिया है।

इस्पात हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़, कोयला और खदानें मजबूत आधार: जी किशन रेड्डी

नई दिल्ली, (एजेंसी) : केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी. किशन रेड्डी ने शनिवार को कहा कि इस्पात भारत की आर्थिक प्रगति की रीढ़ है। यह विकसित भारत 2047 के राष्ट्रीय विजन का एक महत्वपूर्ण प्रवर्तक है। कोयला गैसीकरण को एक विकल्प के रूप में बढ़ावा दिया जा रहा है, इसे 2030 तक 100 मीट्रिक टन करने का लक्ष्य है।

रेड्डी ने मुंबई में स्टील इंडिया 2025 के छठे संस्करण को संबोधित करते हुए बताया कि कैसे भारत बुनियादी ढांचे के विकास में नए वैश्विक मानक स्थापित कर रहा है। जम्मू-कश्मीर में स्थित चिनाब ब्रिज, जो दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल है, से लेकर तमिलनाडु में ऐतिहासिक पम्बन ब्रिज तक, यह सब इस्पात क्षेत्र की बढ़ती ताकत के कारण संभव हुआ है। केंद्रीय मंत्री ने उद्योग भागीदारों से कोकिंग कोयला ब्लॉकों की नीलामी में शामिल होने का आग्रह किया।

उन्होंने कहा कि देश की बुनियादी ढांचे की यात्रा में हर मील का पत्थर इस्पात से बना है। यह एक गतिशील राष्ट्र की प्रगति और आकांक्षाओं को दर्शाता है। भारत के इस्पात क्षेत्र में हाल ही के वर्षों में प्रभावशाली वृद्धि हुई है जिससे देश विश्व स्तर पर दूसरा सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक राष्ट्र बन गया है। मंत्री ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शब्दों का उल्लेख करते हुए इस्पात को भारत का उदयमान क्षेत्र बताया, जो आत्मनिर्भर भारत अभियान के माध्यम से घरेलू खपत, औद्योगिक विस्तार और आत्मनिर्भरता का प्रमुख कारक है।

केंद्रीय मंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि यदि इस्पात भारत की अर्थव्यवस्था का आधार है तो कोयला और खनन क्षेत्र इसकी मजबूत नींव है। उन्होंने कच्चे माल की सुरक्षा विशेषकर कच्चे माल की रणनीति और कच्चे माल के मिश्रण में बदलाव के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि लौह अयस्क, कोकिंग कोयला, चूना पत्थर और मैंगनीज, निकल और क्रोमियम जैसे आवश्यक मिश्र धातु तत्वों की उपलब्धता सुनिश्चित करना एक आर्थिक आवश्यकता और रणनीतिक अनिवार्यता दोनों है।

उन्होंने कहा भारत ने हाल ही में पिछले वित्त वर्ष में एक बिलियन टन कोयला उत्पादन और प्रेषण की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त की है, जो राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा की दिशा में एक परिवर्तनकारी कदम है। ऊर्जा सांख्यिकी 2025 से पता चलता है कि कोयला भारत की कुल ऊर्जा जरूरतों का लगभग 60 फीसदी और इसके विद्युत उत्पादन का 70 फीसदी हिस्सा बना हुआ है।

रेड्डी ने इस्पात निर्माण में महत्वपूर्ण कोकिंग कोयले के बारे में बताया कि इस्पात उत्पादन लागत में इसकी हिस्सेदारी लगभग 42 फीसदी है। उन्होंने कहा कि भारत वर्तमान में अपनी कोकिंग कोयले की आवश्यकता का लगभग 85 फीसदी आयात करता है। इसके लिए सरकार ने 2021 में मिशन कोकिंग कोयला शुरू किया जिसका उद्देश्य आयात पर निर्भरता को कम करना, घरेलू उत्पादन को 140 मीट्रिक टन करना और 2030 तक इस्पात निर्माण में घरेलू कोयले के मिश्रण को 10 फीसदी से बढ़ाकर 30 फीसदी करना है। उन्होंने बताया कि इस मिशन का लक्ष्य 2030 तक 58 मीट्रिक टन कोयला धुलाई क्षमता का निर्माण करना और 23 मीट्रिक टन धुले हुए कोकिंग कोयले की आपूर्ति करना भी है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि इस दिशा में एक प्रमुख पहल राष्ट्रीय कोयला गैसीकरण मिशन है जिसका लक्ष्य 2030 तक 8,500 करोड़ रुपये के निवेश से 100 मीट्रिक टन गैसीकरण का लक्ष्य प्राप्त करना है। राष्ट्रीय इस्पात नीति में 2030-31 तक 300 मीट्रिक टन और 2047 तक 500 मीट्रिक टन उत्पादन क्षमता प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया है। कोयला मंत्रालय और खान मंत्रालय इस दृष्टिकोण के साथ पूरी तरह से जुड़े हुए हैं और इसे साकार करने के लिए सक्रिय कदम उठा रहे हैं।

अनंत अंबानी रिलायंस इंडस्ट्रीज के कार्यकारी निदेशक नियुक्त, एक मई को संभालेंगे कार्यभार

नई दिल्ली, (एजेंसी) :उद्योगपति मुकेश अंबानी के सबसे छोटे बेटे अनंत अंबानी को रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) में कार्यकारी निदेशक नियुक्त किया गया है। उनकी नियुक्ति एक मई, 2025 से पांच साल की अवधि के लिए होगी। यह कंपनी के सदस्यों की मंजूरी के अधीन है।

आरआईएल ने शनिवार को शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि कंपनी के निदेशक मंडल ने 25 अप्रैल को अपनी बैठक में मानव संसाधन, नामांकन और पारिश्रमिक समिति की सिफारिश पर विचार किया। कंपनी के निदेशक मंडल ने उन्हें कंपनी का कार्यकारी निदेशक नामित किया है। उनका कार्यकाल एक मई, 2025 से पांच साल के कार्यकाल के लिए होगा। अनंत अंबानी को 01 मई, 2025 से शुरू होने वाले पांच साल के कार्यकाल के लिए आरआईएल के गैर-कार्यकारी निदेशक अनंत एम. अंबानी को पूर्णकालिक निदेशक के तौर पर नियुक्त किया है। अभी गैर-कार्यकारी निदेशक के रूप में कार्यरत अनंत अंबानी अब आरआईएल की नेतृत्व टीम के हिस्से के रूप में कार्यकारी जिम्मेदारियां संभालेंगे। रिलायंस इंडर्स्टीज के मुताकिबक अनंत की नियुक्ति एक मई, 2025 से पांच साल की अवधि के लिए होगी, जो कंपनी के सदस्यों की मंजूरी के अधीन है।

कंपनी ने बताया कि ब्राउन यूनिवर्सिटी से स्नातक अनंत अंबानी भाई-बहनों में रिलायंस में कार्यकारी निदेशक के रूप में नियुक्त होने वाले पहले व्यक्ति हैं। अनंत को अगस्त, 2022 में कंपनी के ऊर्जा खंड का प्रमुख नियुक्त किया गया था। वह मार्च, 2020 से जियो प्लेटफॉर्म्स लिमिटेड के निदेशक मंडल (बोर्ड), मई 2022 से रिलायंस रिटेल वेंचर्स लि. के बोर्ड में और जून 2021 से रिलायंस न्यू एनर्जी लि. के साथ-साथ रिलायंस न्यू सोलर एनर्जी लि. के निदेशक मंडल में भी हैं। वह सितंबर से रिलायंस की परमार्थ इकाई रिलायंस फाउंडेशन के बोर्ड में भी हैं।रिलायंस प्रमुख मुकेश अंबानी ने अगस्त 2023 में अपने तीन बच्चों जुड़वां ईशा और आकाश और अनंत को रिलायंस समूह के निदेशक मंडल में गैर-कार्यकारी निदेशकों के रूप में शामिल किया था। मुकेश अंबानी के सबसे बड़े बेटे आकाश 2014 में इकाई में शामिल होने के बाद जून, 2022 से दूरसंचार इकाई, जियो इन्फोकॉम के चेयरमैन हैं। उनकी जुड़वां बहन ईशा कंपनी की खुदरा, ई-कॉमर्स और लक्जरी इकाइयों को चलाती हैं।

संक्षिप्त खबरें

महिला त्रिकोणीय सीरीज के पहले मुकाबले में श्रीलंका से भिड़ेगा भारत

नई दिल्ली, (एजेंसी) :भारतीय महिला क्रिकेट टीम रविवार को कोलंबो में महिला त्रिकोणीय श्रृंखला के पहले मुकाबले में श्रीलंका के खिलाफ अपने अभियान की शुरूआत करेगी। यह सीरीज इस साल के अंत में भारत में होने वाले वनडे वर्ल्ड कप की तैयारियों का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जहां खासतौर पर गेंदबाजी संयोजन को परखने पर जोर रहेगा। बल्लेबाजी विभाग फिलहाल काफी संतुलित और मजबूत नजर आ रहा है। इस सीरीज की तीसरी टीम दक्षिण अफ्रीका की है।भारतीय टीम इस समय तेज गेंदबाजी संसाधनों की चुनौती से जूझ रही है। रेणुका सिंह, पूजा वस्त्रकार और तीतास साधु चोटिल हैं, जिससे टीम को अरुंधति रेड्डी और ऑलराउंडर अमनजोत कौर पर निर्भर रहना पड़ रहा है। तेज गेंदबाजों के सीमित विकल्पों के बीच कप्तान हरमनप्रीत कौर युवा तेज गेंदबाज काश्वी गौतम को भी मौका देकर परखना चाहेंगी।काश्वी ने हाल ही में महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) में गुजरात जायंट्स के लिए शानदार प्रदर्शन किया था, जहां उन्होंने नौ मैचों में 6.45 की इकॉनमी रेट से 11 विकेट झटके थे। उनकी फॉर्म भारतीय टीम के लिए उत्साहजनक संकेत है।प्रेमदासा स्टेडियम की धीमी पिचों को देखते हुए भारतीय टीम का भरोसा स्पिनरों पर होगा। सीनियर ऑफ स्पिनर दीप्ति शर्मा और स्नेह राणा के साथ मुंबई इंडियंस की बाएं हाथ की स्पिनर श्री चरणी भी 50 ओवरों में से 30 ओवर तक गेंदबाजी कर सकती हैं। ऑलराउंडर अमनजोत कौर भी जरूरत पड़ने पर अपने ऑफ ब्रेक से गेंदबाजी आक्रमण को विविधता दे सकती हैं।टीम की बल्लेबाजी इकाई में कप्तान हरमनप्रीत कौर, उप-कप्तान स्मृति मंधाना, पावर-हिटर ऋचा घोष, भरोसेमंद जेमिमा रोड्रिग्स और हरलीन देओल शामिल हैं, जो टीम को स्थिरता और आक्रामकता दोनों प्रदान करते हैं। हालांकि एक बार फिर शैफाली वर्मा को चयनकर्ताओं ने नजरअंदाज किया है, लेकिन दीप्ति शर्मा और अमनजोत कौर की ऑलराउंड क्षमताएं भारत को गहराई प्रदान करती हैं। सही दिन पर भारतीय टीम किसी भी प्रतिद्वंद्वी को आसानी से पटखनी दे सकती है। मेजबान श्रीलंका ने इस श्रृंखला के लिए अपनी टीम में छह बदलाव किए हैं, जिसमें चार अनकैप्ड खिलाड़ियों को शामिल किया गया है। अनुभवी बाएं हाथ की स्पिनर इनोका रानावीरा की वापसी से टीम को मजबूती मिली है। उनके साथ सुगंधिका कुमारी, इनोशी प्रियदर्शनी और कविशा दिलहारी जैसे अन्य स्पिनर भी भारतीय बल्लेबाजों को चुनौती देने के लिए तैयार हैं। भारतीय टीम वेस्टइंडीज और आयरलैंड के खिलाफ अपने पिछले छह वनडे मुकाबले जीतकर इस त्रिकोणीय सीरीज में उतर रही है। ऐसे में आत्मविश्वास से लबरेज भारतीय महिला ब्रिगेड से एक दमदार शुरूआत की उम्मीद की जा रही है, ताकि विश्व कप की तैयारी को एक ठोस दिशा दी जा सके।

एशियन अंडर-15 और अंडर-17 बॉक्सिंग चैंपियनशिप : भारत ने पक्के किए 43 पदक

अम्मान (जॉर्डन), (एजेंसी) : भारतीय बॉक्सिंग टीम ने वर्ल्ड बॉक्सिंग से मान्यता प्राप्त नई एशियाई बॉक्सिंग संस्था की आयोजित पहली एशियन अंडर-15 और अंडर-17 बॉक्सिंग चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन करते हुए अब तक कुल 43 पदक पक्के कर लिए हैं। बॉक्सिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया (बीएफआई) की जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, प्रतियोगिता के सातवें दिन चार और भारतीय मुक्केबाज सेमीफाइनल में पहुंच गए।

भारत ने अब अंडर-15 वर्ग में कम से कम 25 और अंडर-17 वर्ग में 18 पदक सुनिश्चित कर लिए हैं, क्योंकि सेमीफाइनल में पहुंचने वाले सभी खिलाड़ी कम से कम कांस्य पदक के हकदार होते हैं।

उम्दा प्रदर्शन जारी-

अंडर-17 बालकों के वर्ग में अमन सिवाच (63 किग्रा) और देवांश (80 किग्रा) ने शानदार प्रदर्शन करते हुए फिलीपींस और

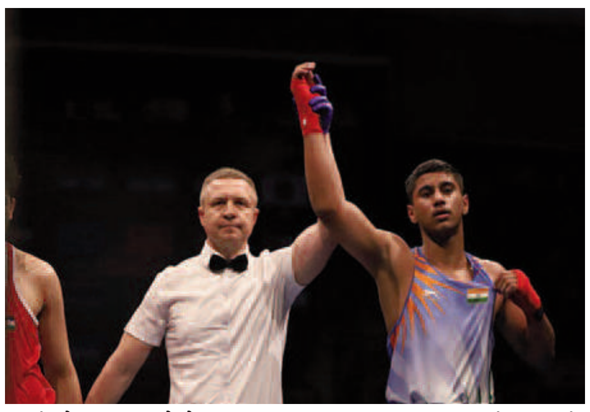

जॉर्डन के खिलाड़ियों के खिलाफ रेफरी स्टॉप्ड कंटेस्ट (फ्रउ) के जरिए मुकाबले जीते और सेमीफाइनल में प्रवेश किया।

वहीं, बालिकाओं के वर्ग में सिमरनजीत कौर (60 किग्रा) ने जॉर्डन की अया अलहसनत को 5-0 के बड़े अंतर से हराया, जबकि हिमांशी (70 किग्रा) ने फिलीस्तीन की फराह अबू लैला के खिलाफ पहले ही राउंड में मुकाबला समाप्त कर आरएससी से जीत हासिल की।

सातवें दिन के परिणाम-

अंडर-17 पुरुष वर्ग - क्वार्टर फाइनल, 60 किग्राः साहिल दुहन (भारत) को अमीरी मेहराबी (ईरान) से 2-3 से हार, 63 किग्राः अमन सिवाच (भारत) ने जियादरच जेम्स कैबरेरा (फिलीपींस) को रेफरी स्टॉप कॉन्टेस्ट (आरएससी) (राउंड 2) से हराया, 66 किग्राः अनंत गौरिशंकर देशमुख (भारत) को दानियाल शल्करबे (कजाकिस्तान) से 0-5 से हार, 75 किग्राः प्रियांश सेहरावत (भारत) को खुर्शीदबेक जुराएव (उज्बेकिस्तान) से 0-5 से हार, 80 किग्राः देवांश (भारत) ने अब्दल्ला अलदब्बास (जॉर्डन) को आरएससी (राउंड 3) से हराया, 80+ किग्राः लोवेन गुलिया (भारत) को फारहौद घोरबानी (ईरान) से 0-5 से हार, अंडर-17 महिला वर्ग - क्वार्टर फाइनल, 60 किग्राः सिमरनजीत कौर (भारत) ने अया अलहसनत (जॉर्डन) को 5-0 से हराया, 70 किग्राः हिमांशी (भारत) ने फराह अबू लैला (फिलिस्तीन) को पहले राउंड में आरएससी से हराया

पुलिस अधीक्षक का कार्यालय, बोकारो

महिला शव

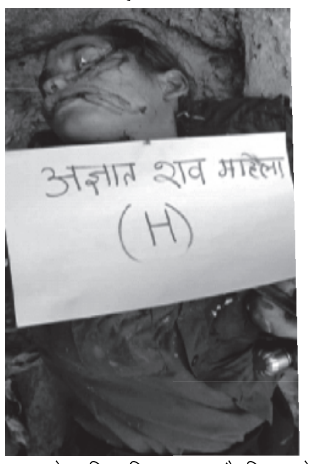

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि तालो, सा0– बनखोरा, थाना– डुमरी, जिला– गिरीडीह का निवासी है, जिसका दिनांक– 21.04.2025 को पुलिस मुठभेड़ में मृत्यु हो गया है। उक्त महिला का हुलिया इस प्रकार है। रंग– सांवला, चेहरा–गोल, उँचाई– 5 फीट 2 इंच, पहनावा– काला रंग का फुल शर्ट एवं नीचे काला रंग का फुलपैंट पहने हुए है।

महिला शव के बारे में अगर किसी को कुछ भी जानकारी प्राप्त होती है तो कृपया निम्नलिखित नम्बर पर सूचित करने का कष्ट किया जाए ।

1. **थाना प्रभारी, ललपनिया, बोकारो का मोबाईल नम्बर – 8986733215**

पुलिस अधीक्षक,
बोकारो

PR 351187 Police (25-26)_D

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER, DRINKING WATER &SANITATION DIVISION, CHAS

Very Short Term e-procurement Notice

Tender reference No.- DWSD/CHAS/01/2025-26 (1st Call) DATED: 25.04.2025

The under signed, on behalf of the Government of Jharkhand, invites Percentage rate bids for the work mentioned in table below through e-Procurement from eligible and approved Contractors, registered with Drinking Water &Sanitation Department, Government of Jharkhand. The work of Outsourcing for supplying vehicles (Tracker or any other suitable vehicle) and Labours , tools & plants etc. for repair and maintenance of departmental drilled tube wells as detailed is BOQ. The rate to be paid for the work as said above will be decided as per the lowest rate quoted in e-procurement. The relevant articles of PWD Code will be applicable. The rates will be applicable for years 2025-26. The bid shall be submitted online in the Website http://jharkhandtenders.gov.in. The bidder(s) should have necessary portal enrolment with their own Digital Signature Certificate:

Sl no	Name of the work	Name of Block	Name of Group	Estimated Cost (in Rs.)	Earnest Money (Rs.)	Cost of Tender Paper (Rs.)	Completion Time
1	2	3	4	5	6	7	8
1	Outsourcing for supplying vehicles (Tracker or any other suitable vehicle) and Labours , tools & plants etc. for repair and maintenance of departmental drilled tube wells under D.W.&S Division, Chas for the year 2025-26.	Chas	RM/DT/CHAS-1	322744.00	7000.00	750.00	4 months
2			RM/DT/CHAS-2	322744.00	7000.00	750.00	4 months
3		Chandankiyari	RM/DT/CKY-3	564281.00	12000.00	1250.00	4 months
4		Jaridih	RM/DT/JRD-4	229044.00	5000.00	500.00	4 months
5		Bermo & Chandrapura	RM/DT/B& C-5	249866.00	5000.00	500.00	4 months
6	Date & Time of Publication of Tender on Website.	28.04.2025 at 04:00 PM					
7	Last Date & Time for Receipt of Bid. (Online)	05.05.2025 up to 04:00 PM					
8	Cost of tender Paper and Earnest Money Deposit on submission of bids (if applicable) as per mentioned in Annexure- 1 vide letter No- 120 dt 03.10.2023 by Secretary, Department of Information Technology and e-Governance Government of Jharkhand.	05.05.2025 up to 04:00 PM					
9	Date & Time of Opening of Tender	06.05.2025 up to 04:00 PM					
10	Name & Address of Office inviting tender	Executive Engineer, Drinking Water & Sanitation Division, Chas					
11	Contact No. of Procurement Office	06542-265810					
12	Helpline No. of e-procurement cell	0651-248045					

Note:- •No claim shall be entertained because of disputation of internet service being used by the bidders. Bidders are advice to upload their bids well in advance to avoid last minute technical snags.
- Further details can be seen on website Http://jharkhandtenders.gov.in
- Estimated Cost may be increase or decrease.

Executive Engineer,
Drinking Water & Sanitation, Chas

PR 351142 Drinking Water and Sanitation(25-26).D

शैली सिंह ने तोड़ा 23 साल पुराना अंजू बॉबी जॉर्ज का रिकॉर्ड, बोलीं-यह तो बस शुरूआत है

नई दिल्ली, (एजेंसी) : भारतीय एथलेटिक्स को नई ऊंचाइयों पर ले जाते हुए युवा लॉन्ग जम्पर शैली सिंह ने नेशनल फेडरेशन कप में धमाकेदार प्रदर्शन किया। उन्होंने शुक्रवार को 6.64 मीटर की शानदार छलांग लगाकर दिग्गज एथलीट अंजू बॉबी जॉर्ज का 23 साल पुराना मीट रिकॉर्ड तोड़ते हुए देश का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया। इस ऐतिहासिक जीत के बाद शैली ने जो भावुक बयान दिया, उसने खेल प्रेमियों के दिल जीत लिए।

रिकॉर्ड तोड़ने के बाद अपनी खुशी जाहिर करते हुए शैली सिंह ने शनिवार को एक आधिकारिक बयान में कहा,अंजू मैम का लंबे समय तक कायम रहा फेडरेशन कप रिकॉर्ड तोड़ना मेरे लिए गर्व का पल है। उनकी उपलब्धियां हमेशा मेरी प्रेरणा रही हैं और उनके नक्शेकदम पर चलना मेरे जीवन का सबसे बड़ा सपना रहा है। यह रिकॉर्ड 23 वर्षों तक बना रहा, जो उनकी महानता को दशार्ता है और आज इस विरासत का हिस्सा बनना मेरे लिए सम्मान की बात है।शैली ने कहा, ₹यह तो बस शुरूआत है। मैं इस उपलब्धि से संतुष्ट नहीं हूं। मेरा सपना है कि मैं भारतीय एथलेटिक्स को और भी ऊंचाइयों तक ले जाऊं। मैं लगातार मेहनत करती रहूंगी ताकि देश का नाम अंतरराष्ट्रीय मंचों पर रोशन कर सकूं।

वहीं, अपनी रिकॉर्डधारी शिष्या की उपलब्धि पर अंजू बॉबी जॉर्ज ने भी खुशी जताई और कहा, ₹रिकॉर्ड टूटने के लिए ही होते हैं और शैली ने यह कारनामा कर दिखाया। उनकी तरक्की देखकर गर्व होता है। शैली भारतीय महिला एथलेटिक्स के उज्ज्वल भविष्य की मिसाल हैं।

शैली सिंह की यह ऐतिहासिक छलांग भारतीय एथलेटिक्स में एक नई उम्मीद की किरण लेकर आई है। उनका जुनून, आत्मविश्वास और कड़ी मेहनत इस बात का संकेत है कि भारतीय महिलाएं खेल जगत में वैश्विक मंच पर एक नई पहचान बनाने को तैयार हैं।कुछ ही दिन पहले, उत्तर प्रदेश की इस युवा एथलीट ने 6.45 मीटर की छलांग लगाकर एशियन एथलेटिक्स चैंपियनशिप्स के 6.41 मीटर के क्वालीफाइंग मार्क को पार किया था। इसके बाद शुक्रवार (26 अप्रैल) को उन्होंने एनार्कुलम के महाराजा कॉलेज ग्राउंड में इतिहास रचते हुए 6.64 मीटर की लंबी छलांग लगाई और अंजू बॉबी जॉर्ज का 2002 में बनाया गया 6.59 मीटर का मीट रिकॉर्ड तोड़ दिया।

गौरतलब है कि शैली का व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 6.76 मीटर का है, जो उन्होंने 2023 में हासिल किया था। यह भारत की महिला एथलीटों में दूसरा सर्वश्रेष्ठ प्रयास है, जो अब भी अंजू बॉबी जॉर्ज के राष्ट्रीय रिकॉर्ड 6.83 मीटर से थोड़ा पीछे है।

ऑस्ट्रेलिया ए ने भारतीय महिला हॉकी टीम को 5-3 से हराया

महिमा टेटे, नवनीत कौर और लालरेमसियामी ने भारत के लिए दागे गोल

नई दिल्ली, (एजेंसी) : भारतीय महिला हॉकी टीम ने ऑस्ट्रेलिया दौरे के अपने पहले मुकाबले में शानदार संघर्ष किया, लेकिन वे पर्थ हॉकी स्टेडियम में शनिवार को खेले गए मैच में ऑस्ट्रेलिया 'ए' टीम से 3-5 से हार गई। भारत की ओर से महिमा टेटे (27), नवनीत कौर (45) और लालरेमसियामी (50) ने गोल किए, जबकि ऑस्ट्रेलिया 'ए' के लिए नीसा फ्लिन (3), ओलिविया डाउनस (9), रूबी हैरिस (11), टैटम स्टुअर्ट (21) और केंड्रा फिट्ज़पैट्रिक (44) ने गोल दागे।

तेज शुरूआत के बाद ऑस्ट्रेलिया 'ए' ने बनाई मजबूत बढ़त-

मैच की शुरूआत तेज रफ्तार के साथ हुई, जिसमें ऑस्ट्रेलिया 'ए' ने शुरूआती बढ़त बनाते हुए नीसा फ्लिन (3') के फील्ड गोल से खाता खोला। इसके बाद टीम ने लगातार दबाव बनाए रखा और ओलिविया डाउनस (9') व रूबी हैरिस (11') ने भारतीय डिफेंस में चूक का फायदा उठाकर दो और फील्ड गोल दाग दिए। पहले क्वार्टर के बाद ऑस्ट्रेलिया 'ए' ने 3-0 की मजबूत बढ़त बना ली थी।

भारत ने दिखाई जुझारूपन, लेकिन बढ़त कायम रही-

दूसरे क्वार्टर में भी ऑस्ट्रेलिया 'ए' का दबदबा बना रहा। लगातार पेनल्टी कॉर्नर अर्जित करने के बाद टैटम स्टुअर्ट (21') ने एक को गोल में बदलकर स्कोर 4-0 कर दिया। हालांकि, भारतीय टीम ने हार नहीं मानी और महिमा टेटे (27') ने शानदार फील्ड गोल कर भारत के लिए खाता खोला। हाफ टाइम तक स्कोर 1-4 था।

नवनीत और लालरेमसियामी ने दिखाई वापसी की झलक-

तीसरे क्वार्टर में केंड्रा फिट्ज़पैट्रिक (44') ने एक और गोल कर ऑस्ट्रेलिया 'ए' को 5-1 की बढ़त दिलाई। इसके तुरंत बाद भारत ने जवाबी हमला बोला और उपकप्तान नवनीत कौर (45') ने फील्ड गोल कर स्कोर 2-5 किया। अंतिम क्वार्टर में दोनों टीमों ने मौके बनाए। भारत की ओर से लालरेमसियामी (50') ने एक और शानदार फील्ड गोल किया, लेकिन इसके बावजूद भारतीय टीम वापसी पूरी नहीं कर पाई और मुकाबला 3-5 पर समाप्त हुआ।

पहलगाम हमले के पीड़ितों को श्रद्धांजलि-

इस मैच के दौरान भारतीय महिला हॉकी टीम ने पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए निर्दोष लोगों के सम्मान में काली पट्टियां बांधकर खेला। टीम ने पूरे ऑस्ट्रेलिया दौरे के दौरान काली पट्टी पहनने का फैसला किया है, ताकि पीड़ितों और उनके परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की जा सके।

अगला मुकाबला रविवार को-

भारतीय महिला हॉकी टीम अब रविवार, 27 अप्रैल को ऑस्ट्रेलिया 'ए' के खिलाफ अपना दूसरा मुकाबला खेलेगी। यह मैच भारतीय समयानुसार दोपहर 1:40 बजे शुरू होगा। टीम मजबूत वापसी की उम्मीद के साथ मैदान में उतरेगी।

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER, DRINKING WATER & SANITATION DIVISION TENUGHAT

Very Short Term e-procurement Notice

Tender reference No.- DWSD/Tenughat/01/2025-26 (1st Call) DATED: 26/04/2025

Sl no	Name of the work	Name of Group	Estimated Cost (in Rs.)	Earnest Money (Rs.)	Cost of Tender Paper (Rs.)	Period of Supply
1	2	3	4	5	6	7
1.1	Outsourcing for supplying vehicles (Tracker or any other suitable vehicle) and Labours , tools & plants etc. for repair and maintenance of departmental drilled tube wells in **Petarwar** block under D.W.&S Division, Tenughat for the year 2025-26	RM/DT/1	353978.00	7500.00	750.00	04 Month
1.2	Outsourcing for supplying vehicles (Tracker or any other suitable vehicle) and Labours , tools & plants etc. for repair and maintenance of departmental drilled tube wells in **Kasmar** block under D.W.&S Division, Tenughat for the year 2025-26	RM/DT/2	268607.00	5500.00	750.00	04 Month
1.3	Outsourcing for supplying vehicles (Tracker or any other suitable vehicle) and Labours , tools & plants etc. for repair and maintenance of departmental drilled tube wells in **Gomia** block under D.W.&S Division, Tenughat for the year 2025-26.	RM/DT/3	395622.00	8000.00	750.00	04 Month
1.4	Outsourcing for supplying vehicles (Tracker or any other suitable vehicle) and Labours , tools & plants etc. for repair and maintenance of departmental drilled tube wells in **Nawadih & Chandrapura ansh** block under D.W.&S Division, Tenughat for the year 2025-26.	RM/DT/4	353978.00	7500.00	750.00	04 Month
2	Date & Time of Publication of Tender on Website.	28/04/2025 at 2:00 PM				
3	Last Date & Time for Receipt of Bid. (Online)	05/05/2025 up to 4:00 PM				
4	Cost of tender Paper and Earnest Money Deposit on submission of bids (if applicable) as per mentioned in Annexure- 1 vide letter No- 120 dt 03.10.2023 by Secretary, Department of Information Technology and e-Governance Government of Jharkhand.	05/05/2025 up to 4:00 PM				
5	Date & Time of Opening of Tender	06/05/2025 up to 4:30 PM				
6	Name & Address of Office inviting tender	Executive Engineer, Drinking Water & Sanitation Division Tenughat				
7	Contact No. of Procurement Office	9430308778, 9934311399				
8	Helpline No. of e-procurement cell	0651-248045				

Note:-• No claim shall be entertained because of disputation of internet service being used by the bidders. Bidders are advice to upload their bids well in advance to avoid last minute technical snags.
Further details can be seen on website Http://jharkhandtenders.gov.in
- Estimated Cost may be increase or decrease.

Executive Engineer,
Drinking Water & Sanitation Tenughat

PR 351149 Drinking Water and Sanitation(25-26).D

ज्यूरिख क्लासिकः थीगला और राय ने टॉप-10 में बनाई जगह

एवोंडेल (लॉस एंजिल्स)।, (एजेंसी) : भारतीय मूल के गोल्फर साहिथ थीगला और उनके साथी आरोन राय ने ज्यूरिख क्लासिक ऑफ न्यू ऑरलियन्स के दूसरे राउंड में 69 का स्कोर खेलते हुए टॉप-10 में जगह बना ली है। दोनों ने शुक्रवार को अल्टरनेट शॉट फॉर्मेट में शानदार खेल दिखाया। थीगला और राय की जोड़ी ने पहले होल पर बर्डी, दूसरे होल पर 10 फीट की ईगल और सातवें होल पर एक और बर्डी जमाई।

जिला दण्डाधिकारी -सह- उपायुक्त का कार्यालय, जामताड़ा। (जिला आपूर्ति शाखा)

प्रेस विज्ञप्ति

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग, भारत सरकार के दिशा निर्देशों के आलोक में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम से आच्छादित लाभुकों का भातप्रतिशत e-KYC दिनांक–30.04.2025 तक पूर्ण कर लिया जाना है। इस निमित भारत सरकार के Mera e-KYC Mobile App, जो Google Play Store पर उपलब्ध है का उपयोग e-KYC करने के लिए भी किया जा सकता है।

अतः सभी आमजन एंव जन विरतण प्रणाली विक्रेता को सूचित किया जाता है Mera e-KYC Mobile App, का उपयोग करते हुए निर्धारित तिथि तक e-KYC कार्य पूर्ण कर लें।

ह0/–
जिला आपूर्ति पदाधिकारी,
जामताड़ा।

PR.NO.351169 Food Public Distribution and Consumer Affairs(25-26):D

झारखण्ड सरकार
श्रम, नियोजन, प्रशिक्षण एवं कौशल विकास विभाग
नियोजनालय, कुमारधुबी (धनबाद)

भर्ती–कैम्प सूचना

सूचित किया जाता है कि दिनांक– **30.04.2025 (बुधवार)** को नियोजनालय कुमारधुबी परिसर में पूर्वाह्न **10:00** बजे से अपराह्न **4** बजे तक भर्ती कैम्प का आयोजन किया जाएगा। भर्ती कैम्प से सम्बंधित नियोजक द्वारा निर्धारित योग्यता एवं उम्र संबंधी अहर्ताऐं निम्नवर्णित है :–

S. No.	Name of the Organization	Name of The Post	Vacancy	Qualification	Experience	Age (Y)	Salary	Job Location
1	Ekta Engineering Works.	Electrician	01	ITI/Diploma	2-5 Year	20-40	15000-18000	Mugma, Dhanbad
		Store Keeper	01	Graduation	1-2 Year	20-35	10,000-12,000	
		Security Guard	02	10th	NA	18-35	8,000	
2	Walkaroo International Private Limited.	Trainee Machine- Operator	50	ITI in Fitter Trade	0-1 Year	18-32	16700 + OT allowance, Incentive, Shift Allowance, Production Incentive, etc.	Coimbatore, Tamil Nadu
		Junior Technician	50	Diploma In Mechanical	0-1 Year	18-32	19500 + OT allowance, Incentive, Shift Allowance, Production Incentive, etc.	
		Trainee Machine- Helper	100	10th	0-1 Year	18-45	13100 OT allowance, Incentive, Shift Allowance, Production Incentive, etc.	Mysuru-Karnataka

अतः योग्य एवं इच्छुक उम्मीदवार जो पूर्व से निबंधित नहीं है वे झारखण्ड के किसी भी नियोजनालय में अपना निबंधन कराते हुए उपर्युक्त भर्ती कैम्प में नियोजक के प्रतिनिधि के समक्ष अपने सभी मूल प्रमाण पत्रों एवं उसकी एक छाया प्रति, पासपोर्ट साईज फोटोग्राफ, नियोजनालय का मूल वैद्य निबंधन कार्ड तथा अपना बायोडाटा के साथ निर्धारित तिथि **दिनांक– 30.04.2025 को पूर्वाह्न 10:00** तक उपस्थित होना सुनिश्चित करेंगें। पूर्व से नियोजनालय में निबंधित उम्मीदवारों को पुनः निबंधन कराने की आवश्यकता नहीं है। चूँकि नियोजक एवं रिक्ति निजी क्षेत्र की है अतः भर्ती सेवा शर्तों हेतु नियोजक स्वयं ही उत्तरदायी होंगें। चयन प्रक्रिया में नियोजनालय का किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं होंगा, नियोजनालय मात्र सुविधा प्रदात्ता की भूमिका में है।

इसके लिए किसी भी प्रकार का यात्रा भत्ता देय नहीं होगा।

नियोजन पदाधिकारी
नियोजनालय, कुमारधुबी

PR 351166 Labour Employment and Traning(25-26).D

संक्षिप्त खबरें

रक्षा अभियानों और सुरक्षा बलों की आवाजाही का सीधा प्रसारण न करे मीडिया, सूचना प्रसारण मंत्रालय ने जारी किया परामर्श

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
MINISTRY OF
INFORMATION AND BROADCASTING
सत्यमेव जयते

नई दिल्ली, (एजेंसी): सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने सभी मीडिया चैनलों को राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में रक्षा अभियानों और सुरक्षा बलों की आवाजाही का सीधा प्रसारण न करने का परामर्श जारी किया है। सोमवार को मंत्रालय द्वारा जारी परामर्श में कहा गया है कि राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में सभी मीडिया प्लेटफॉर्म, समाचार एजेंसियों और सोशल मीडिया उपयोगकताओं को रक्षा और अन्य सुरक्षा संबंधी अभियानों से संबंधित मामलों पर रिपोर्टिंग करते समय अत्यधिक जिम्मेदारी और मौजूदा कानूनों और विनियमों का सख्ती से पालन करना चाहिए।

पिछली घटनाओं को रेखांकित करते हुए परामर्श में कहा गया है कि रक्षा अभियानों या आवाजाही से संबंधित ₹स्त्रोत-आधारित₹ जानकारी के आधार पर कोई वास्तविक समय कवरेज, दृश्यों का प्रसार या रिपोर्टिंग नहीं की जानी चाहिए। संवेदनशील जानकारी का समय से पहले खुलासा होने से सुरक्षा कर्मियों की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। कारगिल युद्ध, मुंबई आतंकवादी हमले (26/11), और कंधार अपहरण कांड जैसी घटनाओं के दौरान अप्रतिबंधित कवरेज के कारण राष्ट्रीय हितों पर प्रतिकूल परिणाम हुए।

सूचना मंत्रालय द्वारा जारी परामर्श में कहा गया है कि सभी टीवी चैनलों को केबल टेलीविजन नेटवर्क (संशोधन) नियम, 2021 के नियम 6(1)(पी) का पालन करना चाहिए। नियम 6(1)(पी) में कहा गया है कि ऐसा कोई कार्यक्रम नहीं चलाया जाना चाहिए, जिसमें सुरक्षा बलों द्वारा किसी भी आतंकवाद विरोधी अभियान का लाइव कवरेज हो। टीवी चैनलों को सलाह दी गई है कि वे राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में सुरक्षा बलों द्वारा आतंकवाद विरोधी अभियान और आंदोलन का लाइव कवरेज न करें।

पटाखा फैक्टरी में विस्फोट से तीन की मौत, मुख्यमंत्री ने की आर्थिक मदद की घोषणा

चेन्नई, (एजेंसी): राज्य के विरुधुनगर जिले में शनिवार को एक पटाखा फैक्टरी में भीषण विस्फोट होने से तीन महिलाओं की मौत हो गई। इस हादसे में सात लोग झुलस गए हैं। इस घटना के पीड़ितों के प्रति तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने संवेदना व्यक्त की हैं और मृतकों के परिजनों को तीन-तीन लाख रुपये की मदद का ऐलान किया है।

राज्य के विरुधुनगर जिले में शिवकाशी के पास एम पुदुपट्टी में एक पटाखा फैक्टरी में भीषण विस्फोट होने से इलाके में हड़कंप मच गया। शनिवार की सुबह जब श्रमिक इकाई के कार्य शेड के अंदर पटाखे बना रहे थे, तभी विस्फोट हो गया। विस्फोट के बाद आग लग गई। इस दुर्घटना में तीन लोगों की मौत हो गई और कई लोग घायल हो गए। मरने वालों में तीनों महिलाएं हैं। विस्फोट के समय फैक्टरी में एक सौ कर्मी काम कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने पटाखा फैक्टरी में विस्फोट की घटना के पीड़ितों के प्रति संवेदना व्यक्त की है। मुख्यमंत्री ने मृतकों के परिवारों को तीन-तीन लाख रुपये की राहत राशि देने की घोषणा की है। मुख्यमंत्री कार्यालय ने अपने एक्स पोस्ट पर कहा, ₹मुख्यमंत्री ने सलेम जिले के कड़ैयामपट्टी तालुक के कंचनायक्कनपट्टी गांव में एक पटाखा फैक्टरी विस्फोट में जान गंवाने वाले लोगों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की है और वित्तीय सहायता की घोषणा की है।₹

देश में चल रहा है विकसित भारत के निर्माण का महायज्ञ : शिवराज सिंह चौहान

भोपाल, (एजेंसी): केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि कहा कि देश में विकसित भारत के निर्माण का महायज्ञ चल रहा है। 2047 तक एक पूर्ण विकसित भारत के निर्माण और उसमें हर युवा को रोजगार दिलाने के लिए अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं। 'मेक इन इंडिया', 'डिजिटल इंडिया', 'स्टार्टअप इंडिया', 'स्टैंडअप इंडिया' जैसे कई अभियानों के तहत युवाओं को रोजगार से जोड़ने के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। इन्हीं प्रयासों में से एक है शासकीय नौकरियों के माध्यम से रोजगार देना है।

केन्द्रीय कृषि मंत्री चौहान शनिवार को भोपाल के समन्वय भवन में आयोजित प्रधानमंत्री रोजगार मेले को संबोधित कर रहे थे। यह मेला देश के 47 स्थानों पर आयोजित हो रहा है। जिसमें सरकारी नौकरियों में चयनित 51 हजार से अधिक अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र सौंपे जा रहे हैं। रोजगार मेले को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्चुअली संबोधित किया। केन्द्रीय कृषि मंत्री ने भोपाल में सरकारी नौकरियों में चयनित अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र सौंपे।

केन्द्रीय कृषि मंत्री ने कहा कि हम धीरे-धीरे हर गांव और परिवार को गरीबी से मुक्त करेंगे। उन्होंने कृषि क्षेत्र में रोजगार बढ़ाने के प्रयासों पर जोर दिया और कहा कि नौकरी वही अच्छी, जो आनंद दे। अब मुझे खेती, गाय और किसान के अलावा कुछ नहीं दिखता। उन्होंने एक कहानी के जरिए बताया कि रोजगार को देश के विकास से जोड़कर काम करना चाहिए। रोजगार मेले ने युवाओं में नई उम्मीद और आकांक्षा जगाई है। यह मेला देश के नौजवानों को नए अवसर प्रदान कर रहा है। हम कृषि क्षेत्र में भी रोजगार के नए अवसर पैदा कर रहे हैं। हम अपने कार्य को मेहनत, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा के साथ पूरा करें और 'विकसित भारत' के निर्माण में अपना योगदान दें।

कार्यक्रम में राज्य मंत्री कृष्णा गौर, राजस्व मंत्री करण सिंह वर्मा, महापौर मालती राय समेत कई नेता मौजूद रहे। कार्यक्रम में 200 से ज्यादा अभ्यर्थियों ने भाग लिया।

कश्मीर में बलिदान हुए जवान जंटू अली को अंतिम विदाई देने उमड़ा जनसैलाब

कोलकाता,(एजेंसी): पश्चिम बंगाल के नदिया ज़िले के तेहट, पाथरघाटा गांव में शनिवार को हर आंख नम थी। उधमपुर में बलिदान हुए भारतीय सेना के जवान जंटू अली शेख का पार्थिव शरीर उनके घर पहुंचा तो उन्हें अंतिम विदाई देने के लिए गांव की गलियों में जनसैलाब उमड़ पड़ा। जिधर देखो, उसी तरफ से ही लोगों के जत्थे के जत्थे देश के लिए बलिदान होने वाले जवान के घर की ओर जा रहे थे। हर कोई भारत माता के जयकारों के बीच इस वीर सपूत को सलाम कर रहा था।पिछले दिनों जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए भीषण आतंकी हमले में 26 लोगों की हत्या के बाद उधमपुर में सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ हुई। इसी ऑपरेशन में बंगाल के सपूत जंटू अली शेख वीरगति को प्राप्त हुए। गुरुवार को जंटू के वीरगति की खबर उनके परिवार को मिली। शुक्रवार की रात उनका पार्थिव शरीर कोलकाता हवाई अड्डे पहुंचा, जहां से बैरकपुर सैन्य छावनी लाया गया ।

छत्तीसगढ़ के बीजापुर में पांच दिन से मुठभेड़ जारी, रात 10 बजे तक हुई भारी फायरिंग और धमाके

आज सुबह से वायु सेना के चार हेलीकॉप्टर भर रहे हैं उड़ान

बीजापुर, (एजेंसी): छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले के उसूर थाना क्षेत्र अंतर्गत कोतापल्ली गांव के करेर्गुट्टा की काली पहाड़ी में लगातार पांच दिन से सुरक्षाबल के जवानों और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ जारी है। शुक्रवार की रात 10 बजे तक वहां भारी फायरिंग और धमाके हुए। आज से

सुबह से वहां वायु सेना के चार हेलीकॉप्टर उड़ान भर रहे हैं। यह देश भर में अब तक का सबसे बड़ा नक्सल विरोधी अभियान है, जिसमें 10 से 15 हजार जवानों ने बड़े कैडर के नक्सली लीडरों को काली पहाड़ी के इलाके में घेर रखा है। सुरक्षाबल के जवान अब नक्सलवाद के खिलाफ अंतिम लड़ाई लड़ रहे हैं।

नक्सलियों का खात्मा करने सुरक्षाबलों के जवान लगातार 5वें दिन भी बीजापुर के जंगलों में डटे हुए हैं। इसी बीच गलगम के जंगल में डीआरजी का एक जवान नक्सलियों द्वारा लगाये गये प्रेसर आईईडी की चपेट में आ गया। आईडी विस्फोट में जवान के पैरों में गंभीर चोट आई है। घायल जवान को तत्काल गलगम सीआरपीएफ कैंप में प्राथमिक उपचार के बाद हेलीकॉप्टर से बीजापुर अस्पताल ले जाया गया है। आईईडी से घायल जवान की फोटो मिली है लेकिन इसकी अधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है।

स्थानीय पत्रकारों एवं ग्रामीणों के अनुसार शनिवार सुबह 7 बजे से 4 वायु सेना के हेलीकॉप्टर को उड़ान भरते देखा गया है । आसमान में लगातार हेलीकॉप्टरों की इस गतिविधि से बड़ा अपडेट आने की संभावना व्यक्त की जा रही है। वहीं कल रात 10 बजे तक भारी फायरिंग और बम धमाकों की आवाजें उसूर बस्ती के ग्रामीणों ने सुनी हैं। स्थानीय ग्रामीणों ने बताया कि सुरक्षाबलों ने किसी भी प्रकार की जानकारी या वीडियो साझा करने से रोका है। सुरक्षाबलों की ओर से इलाके में हाई अलर्ट जारी कर रखा है।

नक्सलियों के खिलाफ सबसे बड़े नक्सल विरोधी अभियान में पहले भौगोलिक परिस्थितियों से लड़ना सुरक्षाबलों के लिए बड़ी चुनौती है। करेर्गुट्टा पहाड़ के नीचे बसे गांवों में दोपहर का तापमान करीब 42 से 44 डिग्री है। वहीं पहाड़ की ऊंचाई में, चट्टान गर्म होने के बाद वहां का तापमान और बढ़ जाता है। करीब 4 से 5 हजार फीट ऊपर की चोटी में बैठे नक्सलियों तक पहुंचने के लिए फोर्स पिछले चार दिनों से पैदल चल रही है । यह इलाका छत्तीसगढ़ और तेलंगाना प्रदेश सहित महाराष्ट्र की सीमा भी लगती है। पूरा इलाका चारों तरफ घना जंगल, बीच में कस्तूरीपाड़ गांव, एक किनारे करेर्गुट्टा की पहाड़ी है और इसी पहाड़ी पर मुठभेड़ चल रही है।

सूत्रों के अनुसार लगातार पांच दिन से जारी मुठभेड़ में कई और नक्सलियों के मारे जाने की खबर है। सुरक्षाबलों के ड्रोन में शवों की तस्वीर भी कैद हुई हैं, हालांकि उनके शव पुलिस ने बरामद नहीं किए हैं । इससे एक दिन पहले 6 नक्सलियों के मारे जाने की खबर थी, जिनमें 3 वदीर्धारी महिला नक्सली के शव सुरक्षाबलों ने बरामद कर लिए हैं। चेरला के स्थानीय युवक विनोद का कहना है कि मैं इस इलाके में मोटरसाइकिल से आया था। शनिवार दोपहर में लगभग 20 मिनट के अंदर ही सीरियल आईईडी विस्फोट हुए हैं, धमाका इतना तेजदार था कि इसकी आवाज अब भी मेरे कानों में गूंज रही है।

नूंह : दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे पर भीषण हादसा, सात सफाईकर्मियों की मौत

नूंह, (एजेंसी): दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे पर थाना फिरोजपुर झिरका सीमा के अंतर्गत गांव इब्राहीम बास गांव के पासशनिवार की सुबह एक बेकाबू पिकअप वाहन ने सफाई कर्मचारियों को कुचल दिया। इस दुर्घटना में सात लोगों की मौत हो गई।खबर लिखे जाने तक मृतकों की पहचान नहीं हो सकी है। मरने वालों में छह महिलाएं और एक पुरूष है। इनमें चार महिलाएं एकही परिवार की हैं।बताया जा रहा है कि इब्राहिम बास गांव के पास दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे पर सफाई का काम चल रहा है। गांव खेड़ली कलां के लोगों को सफाई के लिए ठेकेदार ने लगाया है। शनिवार को करीब सुबह 10 बजे पिकअप से 11 लोग सफाई करने के लिए आए थे। जब ये लोग अभी एक पिकअप वाहन से उतरे ही थे, तभी गुरुग्राम की ओर से तेजी से आई पिकअप ने इन लोगों को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि सफाई करने आए लोगों के शव इधर-उधर बिखर गए। कई शव दो टुकड़ों में बंट गए।इस दुर्घटना में छह महिलाओं की मौके पर ही मौत हो गई और एक व्यक्ति और चार महिलाएं गंभीर रूप से घायल हो गई। घायलएक व्यक्ति ने इलाज के दौरान अस्पताल में दम तोड़ दिया। अभी भी दो महिलाओं की हालात गंभीर बनी हुई है। मरने वाली महिलाओं में चार महिलाएं एक ही परिवार की है। हादसा होने के बाद पिकअप गाड़ी का चालक फरार हो गया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और पिकअप गाड़ी को अपने कब्जे में ले लिया और शवों को अल आफिया अस्पताल मांडीखेड़ा में रखवा दिया है। खबर लिखे जाने तक मृतकों की पहचान नहीं हो सकी थी। पुलिस जांच पड़ताल कर रही है।

आतंकी कनेक्शन को लेकर झारखंड में एटीएस ने की छापेमारी, छह हिरासत में

धनबाद, (एजेंसी): धनबाद के वासेपुर का आतंकी कनेक्शन सामने आया है। खुफिया सूचना मिलने के बाद झारखंड आतंकवाद निरोधक दस्ता (एटीएस) की टीम वासेपुर में छापेमारी कर रही है। छापेमारी में हथियार, आपत्तिजनक पुस्तकें के साथ-साथ कई गैजेट्स भी बरामद हुए हैं। झारखंड एटीएस के एसपी ऋषभ झा खुद टीम को लीड कर रहे हैं। वे फिलहाल धनबाद में ही मौजूद है।

बीते दिनों पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद देश भर में अलर्ट जारी है। इसी बीच झारखंड एटीएस को पता चला कि संदिग्ध आतंकी संगठन से कुछ युवकों के तार जुड़े हो सकते हैं। झारखंड एटीएस की टीम ने धनबाद में शनिवार को वासेपुर सहित 15 स्थानों पर एक साथ छापेमारी शुरू कर दी। वासेपुर के नूर मस्जिद वाले इलाके में छापेमारी के दौरान दो पिस्तौल व कारतूस के साथ ही भारी मात्रा में प्रतिबंधित लिटरेचर और इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स बरामद किए गए हैं। जहां छापेमारी हो रही है, वहां सुरक्षा के लिए भारी पुलिस बल तैनात किया गया है।

गुरुग्राम में बोले बाबा धीरेन्द्र शास्त्री- 'हिंदुओं को एकजुट करने के लिए देशभर में निकालूंगा पदयात्रा'

गुरुग्राम,(एजेंसी): बागेश्वर धाम के बाबा धीरेन्द्र शास्त्री ने आतंकियों को पंक्चर पुत्र कहते हुए हिन्दुओं को एकजुट होने का आह्वान किया। शास्त्री ने कहा कि अब समय आ गया है हमें क्षेत्र और भाषा के हिसाब से बंटना नहीं बल्कि एकजुट होना है।मैंने प्रण लिया है कि हिंदुओं को एकजुट करने के लिए देश के कोने कोने में पदयात्रा निकालूंगा। उन्होंने कहा कि हिन्दुओं मेरा साथ दो, मैं तुम्हें हिंदू राष्ट्र दूंगा।

बाबा धीरेन्द्र शास्त्री शनिवार को यहां सेक्टर-43 के एक ग्रुप के निमंत्रण पर गुरुग्राम पहुंचे। उन्होंने हनुमान मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा में हिस्सा लिया। धीरेंद्र शास्त्री के पहुंचने पर पूरा पंडाल जय श्रीराम के नारों से गूंज उठा। शास्त्री जेहादियों पर जमकर गरजे। धीरेंद्र शास्त्री ने पहलगाम में हुई आतंकी घटना की निंदा करते हुए कहा कि वहां आतंकियों ने जाति या राज्यों के नाम पूछकर नहीं, बल्कि धर्म पूछकर गोली मारी है। शास्त्री ने कहा कि अब समय आ गया है, हमें क्षेत्र और भाषा के हिसाब से बंटना नहीं बल्कि एकजुट होना है। धीरेंद्र शास्त्री ने कहा कि पहलगाम की घटना से कुछ लोगों को मजा आ रहा है। अंदर ही अंदर खुश है। उन्होंने कहा, मैंने प्रण ले लिया है कि हिंदुओं को एकजुट करने के लिए देश के कोने-कोने में पदयात्रा निकालूंगा।

उन्होंने हिंदू युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि शास्त्रों के साथ-साथ आत्मरक्षा के लिए शस्त्रों का भी ट्रेनिंग लें। शास्त्री ने कहा कि जब वे 12 बच्चे पैदा कर सकते हैं तो हिंदू भी चार बच्चे पैदा करें, दो बच्चे परिवार और व्यापार लिए तथा दो बच्चे हिंदू राष्ट्र निर्माण में योगदान के लिए। धीरेन्द्र शास्त्री ने मौजूद लोगों से वादा मांगते हुए कहा कि तुम मेरा साथ दो, मैं तुम्हें हिंदू राष्ट्र दूंगा। धीरेंद्र शास्त्री ने सभी लोगों से एकजुट होने का वादा भी मांगा।धीरेंद्र शास्त्री ने कहा कि मेरे हिन्दुओं, तुम लोगों ने पहलगाम में तो देख ही लिया है। उन्होंने तुम्हारी जाति नहीं पूछी, सिर्फ यह पूछा मुसलमान हो तो कलमा पढ़ो। ना कहने पर गोली मार दी। शास्त्री ने कहा कि हम बस यही कहेंगे, हिंदू एक रहेगा तो कोई भी उसका बाल बांका नहीं कर सकेगा। शास्त्री ने आगे कहा कि हम पदयात्रा में चिल्लाते रहे, लोग मजाक उड़ाते रहे। वे भेदभाव मिटाने और जात-पात मिटाने निकले हैं। धीरेंद्र शास्त्री ने कहा कि हिंदुओं अभी भी तुम क्षेत्रवाद और जातिवाद में बंटे रहोगे तो एक दिन ऐसा आएगा कि तुम्हारी दिल्ली में तुम लोगों को मारा जाएगा।धीरेंद्र शास्त्री ने कहा कि हम तो चाहते हैं कि भारत एक हिंदू राष्ट्र बने। हिंदू राष्ट्र बनेगा तो गैर भी आने से पहले विचार करेगा। उन्होंने कहा कि 80 प्रतिशत आबादी हिंदू है और हिंदू होना गुनाह है। यह कैसा दुर्भाग्य है। शास्त्री ने ललकारते हुए कहा कि हिंदुओं तुम एकजुट नहीं हो, तुम बंटे हुए हो और डरपोक हो। क्योंकि तुमने शास्त्र और शस्त्र दोनों ही छोड़ दिए।

मुर्शिदाबाद हिंसा में मारे गए पिता-पुत्र के परिजनों से मिले शुभेंदु अधिकारी, 20 लाख रुपये की मदद, मुख्यमंत्री पर साधा निशाना

कोलकाता,(एजेंसी): राज्य विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष शुभेंदु अधिकारी ने शनिवार को मुर्शिदाबाद हिंसा में मारे गए पिता-पुत्र के परिजनों से मुलाकात कर उन्हें आर्थिक मदद दी। अधिकारी ने कहा कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी द्वारा प्रस्तावित 10 लाख रुपये का मुआवजा पीड़ित परिवारों ने अस्वीकार कर दिया लेकिन उनकी ओर से दी गई 20 लाख रुपये की सहायता स्वीकार कर ली, जिसके लिए उन्होंने उनका आभार व्यक्त किया।

कलकत्ता हाई कोर्ट से अनुमति मिलने के बाद शुभेंदु अधिकारी मुर्शिदाबाद पहुंचे। उन्होंने संशोधित वक्फ कानून के विरोध में भड़की हिंसा से प्रभावित इलाकों का दौरा किया। एक मंदिर में जाकर उन्होंने ग्रामीणों को मूर्ति सौंपी।

इसके पहले शुभेंदु अधिकारी ने हिंसा में मारे गए हरगोबिंद दास और चंदन दास के घर जाकर उनके परिजनों से मुलाकात की। दोनों परिवारों को 10-10 लाख रुपये के चेक सौंपे। इस दौरान उन्होंने राज्य सरकार की भूमिका की तीखी आलोचना की और कहा कि वक्फ कानून में संशोधन के विरोध को लेकर फैली हिंसा में प्रशासन ने निष्क्रियता दिखाई।

शुभेंदु ने बताया कि स्थानीय लोग इलाके में बीएसएफ कैंप की मांग कर रहे हैं। उन्होंने आश्वासन दिया कि इस मुद्दे को लेकर वे हाई कोर्ट जाएंगे और केंद्र सरकार को भी जानकारी देंगे। अधिकारी ने कहा, ₹यह साबित हो चुका है कि ये हिंदू परिवार हैं। पूरा गांव भय के साये में जी रहा है। एनआईए से जांच कराने की मांग भी उठ रही है। परिवारों ने मुख्यमंत्री द्वारा भेजी गई मदद ठुकरा दी है लेकिन हमसे सहायता स्वीकार कर ली है।

उल्लेखनीय है कि हाई कोर्ट ने शुभेंदु अधिकारी को मुर्शिदाबाद जाने की अनुमति दी थी, लेकिन शर्त रखी थी कि वहां वे कोई सभा नहीं करेंगे और न ही भड़काऊ बयान देंगे। उनके साथ सिर्फ दो लोग जा सकते हैं।

गुजरात सरकार का महाअभियान: बांग्लादेशी घुसपैठियों को 2 दिनों में सरेंडर करने का अल्टीमेटम

एक ही रात में अहमदाबाद में 890 और सूरत में 134 अवैध बांग्लादेशी नागरिक पकड़े गए

सूरत,(एजेंसी): गुजरात सरकार के निर्देश पर राज्य में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी घुसपैठियों के खिलाफ महाअभियान शुरू किया गया। शुक्रवार-शनिवार रात राज्य में अब तक के सबसे बड़े अभियान की शुरूआत करते हुए अहमदाबाद में 890 और सूरत में 134 अवैध बांग्लादेशी नागरिकों को हिरासत में लिया गया है।

सूरत पुलिस आयुक्त कार्यालय में शनिवार को गृह राज्य मंत्री हर्ष संघवी ने राज्य के सभी जिलों के पुलिस अधीक्षक, रेंज आईजी, लॉ एंड ऑर्डर समेत आईबी कि उच्चाधिकारियों के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए मीटिंग की। उन्होंने सभी अधिकारियों को इस अभियान को तेज करने के साथ सख्त से सख्त कदम उठाने का निर्देश दिए। संघवी ने पुलिस अधिकारियों से बांग्लादेशी घुसपैठियों की सभी गतिविधियों के संबंध में सूक्ष्म जांच करने को कहा। संघवी ने अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी घुसपैठियों को दो दिनों में अपने समीप के पुलिस थाने में सरेंडर करने की चेतावनी दी है। ऐसा नहीं करने वाले बांग्लादेशी घुसपैठियों के विरुद्ध प्रशासन कठोर कार्रवाई करेगा। संघवी ने अवैध घुसपैठियों को आश्रय देने वालों के विरुद्ध भी सख्त कदम उठाने का निर्देश दिया है।

दूसरी ओर अहमदाबाद पुलिस आयुक्त के कार्यालय में राज्य के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) विकास सहाय ने पत्रकारों से अवैध बांग्लादेशी नागरिकों के खिलाफ चलाए गए अभियान की जानकारी साझा करते हुए कहा कि एक ही रात में अहमदाबाद में 890 और सूरत में 134 अवैध बांग्लादेशी पकड़े गए हैं। फर्जी दस्तावेज बनाने वाले बंगाल के आपराधिक नेटवर्क के संबंध में अभी जांच जारी है। पकड़े गए बांग्लादेशियों की कानूनी प्रक्रिया पूरी कर उन्हें उनके मूल देश बांग्लादेश भेज दिया जाएगा।

डीजीपी ने इस अभियान को राज्य में अवैध घुसपैठियों और आपराधिक प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया है। गुजरात पुलिस आगामी दिनों में इस अभियान को तेज बनाएगी। डीजीपी के अनुसार इन बांग्लादेशी घुसपैठियों में अधिकांश लोग बंगाल से फर्जी दस्तावेज का उपयोग कर गुजरात समेत देश के विभिन्न राज्यों में रह रहे हैं। इस संबंध में ज्वाइंट इन्ट्रोगेशन सेंटर में बारीकी से जांच की जा रही है। जानकारी के अनुसार बांग्लादेशियों पर पूर्व में ड्रग्स, ह्युमन ट्रैफिकिंग समेत अन्य अपराधिक मामलों में संलिप्तता पाई गई है। पुलिस के अनुसार पकड़े गए 2 बांग्लादेशी घुसपैठियों पर अल-कायदा के स्लिपर सेल के रूप में काम करने की आशंका को लेकर विस्तृत जांच की जा रही है।

संक्षिप्त खबरें

डीएल डोमगढ़ कॉलोनी के हनुमान मंदिर में धूमधाम से मनाया प्रथम वार्षिकोत्सव समारोह

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

सिंदरी : सिंदरी के वार्ड 54 स्थित डीएल डोमगढ़ कॉलोनी के हनुमान मंदिर में प्रथम वार्षिकोत्सव समारोह धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सीआईएसएफ से अवकाश प्राप्त राम दरस साह अपनी धर्मपत्नी के साथ अनुष्ठान में शामिल हुए। पंडित गर्जन पांडेय ने विधि-विधान से अनुष्ठान सम्पन्न कराया और हनुमान जी की कथा सुनाई। इस दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने मंदिर में आकर हनुमान जी की पूजा-अर्चना की और आशीर्वाद प्राप्त किया। वार्षिकोत्सव समारोह के दौरान मंदिर परिसर भक्तों के जयकारों और भजनों से गूंजायमान हो उठा। हवन एवं आरती के पश्चात उपस्थित श्रद्धालुओं ने भोग ग्रहण किया।आयोजन में सहदेव शाह, प्रकाश शाह, रोहित शाह, विदेशी सिंह, मौली पाण्डेय, प्रहलाद चौधरी, रमेश, मुद्रिका सिंह आदि थे।

सिंदरी में दर्जनों महिलाओं ने कांग्रेस की सदस्यता ली, कैंडल मार्च निकालकर दी श्रद्धांजलि

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

सिंदरी : सिंदरी नगर महिला कांग्रेस द्वारा शनिवार को एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। धनबाद ज़िला महिला कांग्रेस कमेटी की अध्यक्ष सीता राणा की अध्यक्षता में सिंदरी नगर महिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष मधु फिलिप्स के नेतृत्व में दर्जनों महिलाओं ने कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। कार्यक्रम में सीता राणा ने कहा कि महिलाएं भारत की आधी आबादी हैं और उन्हें जागरूक कर पार्टी को मजबूत बनाना हमारा कर्तव्य है। इस अवसर पर मधु फिलिप्स, गीता सिंह, बिन्दु सिंह, सोमी प्रसाद, रुपा देवी, कान्ति मोदक, सुनिता मोदक, रोजी फ्रांसिस, टुनटुन प्रधान, रुमा दत्ता, आलिया खान सहित कई नेताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के बाद पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए लोगों की आत्मा की शांति हेतु अम्बेडकर चौक, रोहराबांध में कैंडल मार्च निकाला गया और श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कैंडल मार्च में कबीरा देवी, आमना खातुन, रीना देवी, चम्पा मोदक सहित अन्य महिलाएं शामिल रहीं।

पहलगाम आतंकी हमले के विरोध में कांग्रेस नेत्री ने आयोजित की श्रद्धांजलि सभा

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

झरिया : कांग्रेस नेत्री अनुपमा सिंह ने पहलगाम में आतंकी हमले में मारे गए निर्दोष पर्यटको की आत्मा की शांति के लिए आवासीय कार्यालय जोड़ापोखर में श्रद्धांजलि सभा आयोजित किया। कैंडल मार्च आवासीय कार्यालय से निकलकर शहीद शशिकांत पांडे चौक के समाप्त हुई। अनुपमा सिंह और सतपाल सिंह ब्रोका ने पहलगाम आतंकी हमले में दिवंगत परिवारों के प्रति संवेदनाएं व्यक्त कीं। उन्होंने आतंकियों द्वारा किए गए कायराना हमले की निंदा की और इसे इंसानियत और मानवता के लिए शर्मनाक बताया। उन्होंने केंद्र सरकार से आतंकियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई करने की मांग की। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी आतंकवाद के खिलाफ लिए जाने वाले हर कड़े फैसले के साथ केंद्र सरकार के साथ खड़ी है। मौके पर बमभोली सिंह, अच्छेयवर प्रसाद,फैज अहमद, रिजवी मुख्तार खान, बिट्टू सिंह, कौशल सिंह, पंकज कुमार, जितेश सिंह, किशोर कुमार, वीरेंद्र गुप्ता, कायदे आजम, अब्दुल अजीज, भगवान दास,जुनैद, संतोष सिंह, अनीता देवी, पिंकी देवी, शांति देवी, रिंकी देवी, मंजू देवी, साबिर अली, अभिषेक आशीष, कुंदन कुमार, मोदक सुरेश, सुरेश धारी निषाद, जमालुद्दीन लकी,हरिओम कुमार, ओमकार मिश्रा, मुकेश पासवान, संतोष प्रसाद, रोहित कुमार, गौतम हाढी आदि लोग उपस्थित थे।

झरिया में युवक की संदिग्ध मौत, पुलिस जांच में जुटी

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

झरिया : झरिया थाना क्षेत्र के फुलारीबाग स्थित इकबाल खान के बड़े पुत्र शाहबाज खान उर्फ हैंडसम (29) ने अपने ही घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना कि सूचना मिलते ही पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए धनबाद भेज दिया। जिसकी शादी हाल ही में 24 अप्रैल को जमुई जिले के झाझा में हुई थी। मृतक की मां नाजमा बीबी ने बताया कि उनके पति इकवाल खान दिव्यांग हैं और चार पुत्र हैं, जो मजदूरी करके परिवार का पालन-पोषण करते हैं। उन्होंने बताया कि हैंडसम खान की शादी बड़े ही धूमधाम से हुई थी, लेकिन शादी के एक दिन बाद ही वह अपनी पत्नी को लेकर ससुराल गया था, जहां से वह अकेले ही वापस आ गया। मृतक की माँ नाजमा बीबी ने बताया कि हैंडसम खान ने शुक्रवार की रात खाना खाया और सो गया, लेकिन शनिवार की सुबह जब वह नहीं उठा, तो परिवार ने दरवाजा खोला और देखा कि वह रस्सी के फंदे पर झूल रहा था। इस घटना के बाद झरिया पुलिस जांच में जुट गई है और पुलिस अभी तक मौत की वजह का पता नहीं लगा पाई है। झरिया पुलिस इस मामले की जांच कर रही है और अभी तक कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। पुलिस जांच में ही पता चलेगा कि आखिर मौत का क्या कारण था।

सुशी आउटसोर्सिंग विस्फोटक घटना के बाद ग्रामीणों व बीसीसीएल प्रबंधन के बीच वार्ता विफल

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

झरिया : सुशी आउटसोर्सिंग में शुक्रवार को हुई भारी विस्फोटक घटना के बाद ग्रामीणों का गुस्सा फूट पड़ा। विस्फोट के कारण बड़े पत्थर उड़कर सेठकोठी के कई घरों में जा गिरे, जिससे बाल-बाल बचाव हुआ। ग्रामीणों ने तुरंत आउटसोर्सिंग का काम बंद करवा दिया और सुरक्षित स्थान पर विस्थापन की मांग को लेकर प्रदर्शन शुरू कर दिया। बीसीसीएल प्रबंधन और सेठकोठी के ग्रामीणों के बीच शनिवार को बजरंग बली मंदिर के पास वार्ता आयोजित की गई। जीनागोरा के पीओ संजीव कश्यप और जयरामपुर पीओ ए के पांडेय मौजूद थे। वार्ता में ग्रामीणों ने अपनी समस्याओं और मांगों को प्रमुखता से उठाया, लेकिन दोनों पक्षों के बीच कोई सहमति नहीं बन पाई। प्रबंधन का कहना है कि कमाटांड में पर्याप्त क्वार्टर उपलब्ध हैं, जहां बिजली, पानी, सड़क और स्वच्छ वातावरण है, जो रहने के लिए एक अच्छा विकल्प है। ग्रामीण विस्थापन के साथ-साथ रोजगार की व्यवस्था की मांग कर रहे हैं। उनका कहना है कि मोनेट स्थित पाथरडीह में क्वार्टर दिया जाए, जहां वे अपनी रोजी-रोटी का इंतजाम कर सकें। वार्ता के दौरान जीनागोरा पीओ संजीव कश्यप बीच में ही उठकर चले गए, जबकि जयरामपुर पीओ ए के पांडेय ने ग्रामीणों की मांगों पर कोई सकारात्मक विचार नहीं किया। ग्रामीणों ने स्पष्ट किया है कि यदि प्रबंधन उनकी समस्याओं पर गंभीरता से विचार नहीं करता है, तो वे लंबी लड़ाई के लिए तैयार हैं। ग्रामीण अपनी मांगों पर अड़े हुए हैं और प्रबंधन के खिलाफ संघर्ष करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। अब देखना यह है कि प्रबंधन ग्रामीणों की मांगों पर क्या प्रतिक्रिया देता है और आगे क्या कदम उठाता है। मौके पर प्रबंधन के तरफ से प्रबंधक एम एस शील,के अलावे ग्रामीणों कि ओर से संजय यादव, मुकेश कुमार सिंह,रोहित सिंह,रामाशंकर सिंह, शंकर भूईयां, विकास सिंह,पिन्टू राय, रमेश मल्लाह, कजली देवी, गीता देवी, सुमन देवी,चंदन पासवान उपस्थित थे।

बिहार कोलियरी कामगार यूनियन ने पहलगाम आतंकी हमले के विरोध में किया प्रदर्शन

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

भौंरा : बिहार कोलियरी कामगार यूनियन के नेताओं और कर्मचारियों ने शनिवार को पहलगाम में हुए आतंकी हमले के विरोध में प्रदर्शन किया। यह जानकारी अभी तक सीमित है, लेकिन प्रदर्शनकारियों ने आतंकवाद की निंदा की और प्रभावित परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की होगी। यूनियन के पूर्वी झरिया क्षेत्र के अध्यक्ष रंजीत यादव और एरिया सचिव मोतीलाल हेमराम ने आतंकी हमले में मारे गए लोगों के लिए 1 मिनट का शोक सभा आयोजित किया। इस घटना की निंदा करते हुए सरकार से पाकिस्तान के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की मांग की। उन्होंने कहा कि इस घटना के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए और मंत्री अमित शाह को अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिए।मौके पर गुड्डू कुमार, जंग बहादुर जैसवारा, संतोष श्रीवास्तव, राजेश कुमार,लक्ष्मण भुइयां, कासिम अंसारी, डॉक्टर प्रदीप कुमार, मौसमी यादव,रीता देवी, सीमा देवी, अनिता कुमारी के अलावा उपस्थित थे।

बलियापुर में कांग्रेस की महत्वपूर्ण बैठक, मोदी सरकार पर साधा निशाना

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

बलियापुर : बलियापुर बाजार में शनिवार को कांग्रेस पार्टी द्वारा चलाए जा रहे सृजन अभियान के तहत एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रखंड अध्यक्ष इदू अंसारी ने की, जिसमें कांग्रेस कार्यकताओं ने भाग लिया। बलियापुर प्रखंड पर्यवेक्षक शहजादा आलम ने कहा कि मोदी सरकार हर मोर्चे पर फेल हैं। देश में मंहगाई की मार से आम जनता परेशान हैं। मोदी सरकार को हटाने की जरूरत है। कांग्रेस को मजबूत करने के लिए संगठन मजबूत करने ग्राम पंचायत में सदस्यता अभियान चलाने युवाओं को पार्टी से जोड़ने का निर्णय लिया गया। मौके पर पूर्व प्रखंड अध्यक्ष मधुसूदन मोदक, मोहम्मद नूरुद्दीन कुर्बान अंसारी, नईम अंसारी, लुकमान अंसारी, उमाकांत रजक, हारून रशीद, शेख तालीम, सागर चंद्र रविदास, सुरेश नईम खान, यासीन खान आदि मौजूद थे।

भू माफियाओं के खिलाफ ग्रामीणों ने किया नारेबाजी

डुगडुगी बजाकर निर्माण कार्य रोका

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

बलियापुर : ढांगी नयाडीह में शनिवार को भू माफियाओं के खिलाफ ग्रामीणों ने जमकर नारेबाजी किया। ढांगी नयाडीह बासकनाली में जगदीश प्रसाद महतो के चार एकड़ जमीन पर भूमाफियाओं द्वारा जबरन जमीन कब्जा कर आवास निर्माण कराया जा रहा था। जिसका मौजा 16 खाता नंबर 9 प्लांट 950, 894, 907 समेत अन्य प्लाटों में करीब चार एकड़ जमीन शामिल हैं। जैसे ही ग्रामीणों को इसकी सूचना मिली सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण डुगडुगी बजाते हुए ढांगी नयाडीह बासकनाली पहुंचे। भूमाफियाओं द्वारा ग्रामीणों का रास्ता में दीवार थी उसे तोड़कर हटा दिया। निर्माण कार्य को रोक दिया। जेएलकेएम नेता कुश महतो ने कहा कि भूमाफियाओं द्वारा गलत तरीके से सीएनटी खेतीहर जमीन को भूमाफिया जबरन दखल कर रहे हैं। ढांगी बस्ती जाने वाली मुख्य मार्ग को बंद कर दिया था। जिसे ग्रामीणों द्वारा तोड़ दिया गया है। भूमाफिया के खिलाफ जमकर आंदोलन किया जाएगा। मौके पर कुश महतो, शक्ति महतो, धनंजय मिर्धा, शुशील महतो, नवीन महतो, किशोर महतो, दलगोविंद महतो, परेश मुर्मू, महादेव महतो, लखीराम महतो, मंटू महतो, फुलचंद महतो शामिल थे।

डी नोबिली स्कूल में वार्षिक पेरेंट्स नाइट समारोह का आयोजन

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

जोड़ापोखर : जोड़ापोखर स्थित डी नोबिली स्कूल में शनिवार को एनुअल पेरेंट्स नाइट समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में छात्रों की वार्षिक उपलब्धियों को सम्मानित किया गया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। कार्यक्रम की शुरूआत सीनियर स्कूल के छात्रों ने प्रार्थना नृत्य के साथ की। इसके बाद फादर रोबेर्टो की मूर्ति को माल्यार्पण कर मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि का सम्मान किया गया। दीप प्रज्वलन के साथ सरस्वती वंदना की गई, जो ज्ञान, उजाले और शुभता का प्रतीक है। मुख्य अतिथि मोलोय चंदन चक्रवर्ती ने अपने भाषण में कहा कि स्कूल न केवल शिक्षा का केंद्र है, बल्कि चरित्र निर्माण की प्रयोगशाला भी है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के साथ-साथ संस्कार, आत्मनिर्भरता और नैतिक मूल्यों का भी विकास करना आवश्यक है। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण संगीतमय नाटक अरेबियन नाइट्स या हजार रातों की कहानियां था, जिसका मंचन जूनियर और सीनियर छात्रों ने किया। इस नाटक में प्रसिद्ध कथा संग्रह को नाट्य, झांकियां और नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया, जो दर्शकों को एक जादुई दुनिया की सैर कराई।

दुधिया में समाजिक कार्यकर्ता श्यामल मंडल का निधन

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

बलियापुर: दुधिया निवासी स्वर्गीय सदानंद मंडल के पुत्र व सामाजिक कार्यकर्ता श्यामल मंडल का निधन हो गया। वे 52 वर्ष के थे। पीछले एक माह से बीमार चल रहे थे। बेंगलुरु अस्पताल में शुक्रवार को इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। शनिवार को जैसे ही उसका शव दुधिया गांव पहुंचा। गांव में मातम छा गया। मृतक का दो पुत्र व एक पुत्री हैं। मां कल्याणी देवी, पत्नी जोबा मंडल का रो-रो कर बुरा हाल है। निधन की खबर पाकर सिंदरी विधायक चन्द्रदेव महतो, भाजपा नेत्री तारा देवी, जिप सदस्य उषा महतो, धर्मजीत सिंह, धरनीधर मंडल, नयन आचार्य, शैलेन मंडल, बेंगू ठाकुर, हरिपद मंडल, विनय मुखर्जी, प्रदीप उपाध्याय, मुखिया उत्तम चौबे, पूर्व मुखिया रफीक अंसारी, राजीव गोप, दिलीप गोप, अधर सहिस, अख्तर अंसारी शकील अंसारी, उमेश चौबे आदि घर पहुंचकर शोक संवेदना व्यक्त किया।

बीसीकेयू ने पहलगाम हमले के विरोध में काला बिल्ला लगाकर जताया शोक

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

भौंरा : बिहार कोलियारी कामगार यूनियन के भौरा स्थित क्षेत्रीय कार्यालय परिसर में हाल ही में एक घटना के विरोध में काला बिल्ला लगाकर विरोध प्रकट किया गया। इस घटना में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 28 नागरिकों की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। यूनियन ने इस घटना को आतंकवाद का एक कृत्य बताते हुए इसका विरोध किया और काला बिल्ला लगाकर अपनी एकजुटता और संवेदना प्रकट की। विरोध प्रकट करते हुए युनियन के एरिया अध्यक्ष रंजीत यादव ने कहा कि सारे देश के लोग हमले के खिलाफ एक जूट है। सुरक्षा के द्दष्टि कोन से देश के सेना को तत्पर रहना होगा एक चुक से देश को भारी नुक्सान उठाना पड़ सकता है। मौके पर मोती लाल हेमब्रम प्रदीप कुमार जंगबहादुर जैसवारा, संतोष सिन्हा, संतोष कुमार, सहदेव मांझी,पुरुषोत्तम महतो, मोती लाल मुर्मू आदि थे।

झरिया में 66 वर्षीय महिला ने धर्मशाला की छत से कूदा, हुई मौत

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

झरिया : झरिया के गुजराती मुहल्ले स्थित जैन मिलन धर्मशाला में एक दुखद घटना घटी, जहां 66 वर्षीय महिला चारु रमानी ने धर्मशाला की छत से छलांग लगा दी, जिससे उनकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई। मृतक के पति ने बताया कि उनकी पत्नी काफी दिनों से बीमार चल रही थीं और उनके शरीर में कई तरह की बीमारियाँ थीं। उनका इलाज चल रहा था और दवाइयाँ भी चल रही थीं। पति ने बताया कि उन्हें अचानक पता चला कि उनकी पत्नी ने छत से छलांग लगा दी है और उनकी मौत हो गई है।बताया जाता है कि मृतक की सभी पुत्रियों की शादी हो चुकी है और वे दोनों पति-पत्नी ही घर पर रहते थे। इस घटना से क्षेत्र में सनसनी फैल गई और पुलिस जांच में जुट गई है। घटना स्थल पर पहुंचकर शव को अपने कब्जे में ले लिया और पोस्टमार्टम के लिए धनबाद भेज दिया। पुलिस अब इस मामले की जांच में जुट गई है।घटना के बाद स्थानीय लोगों में तरह-तरह की चचाएं हो रही हैं। फिलहाल, पुलिस इस मामले की गहन जांच कर रही है ताकि घटना के पीछे के कारणों का पता लगाया जा सके। पुलिस की जांच में अभी तक क्या कुछ सामने आया है, इसकी जानकारी नहीं मिल पाई है।

लोदना क्षेत्र में जमसं व प्रबंधन के बीच हुई वार्ता,समस्याओं के समाधान की उम्मीद

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

झरिया : लोदना क्षेत्र में आउटसोर्सिंग प्रबंधन और स्थानीय लोगों के बीच विस्थापन के मुद्दे पर गतिरोध को दूर करने के लिए शनिवार को एक महत्वपूर्ण समझौता वार्ता आयोजित की गई। इस वार्ता में क्षेत्रीय प्रबंधन और जमसंघ बच्चा गुट के महामंत्री अभिषेक सिंह तथा उनके समर्थकों ने भाग लिया। क्षेत्रीय अध्यक्ष उमाशंकर शाही और संघ के वरिष्ठ नेता भोला प्रसाद यादव ने भाग लिया और प्रबंधन के समक्ष कई महत्वपूर्ण मांगें रखीं। साउथ तीसरा गोल्डेन पहाड़ी धौड़ा से जबरन विस्थापन और प्रताड़ना पर रोक लगाने की मांग की गई। कर्मियों के आवासों की मरम्मत न कराने का मुद्दा उठाया गया और इसे जल्द से जल्द कराने की मांग की गई। अगर विस्थापन जरूरी है तो लोगों को सभी सुविधाओं और रोजगार के साथ विस्थापित करने की मांग की गई। बेरोजगार हुए असंगठित मजदूरों के लिए रोजगार प्रदान करने की मांग की गई। जीनागोरा में बंद लोडिंग प्वाइंट को फिर से चालू करने की मांग की गई।एंटी एसटी लोडिंग प्वाइंट में कोयला और ट्रकों का आवंटन बढ़ाने की मांग की गई।

सुरुंगा में रैयतों की जमीन पर जबरन ओबी डंपिंग पर रोक लगाने की मांग की गई। वार्ता में जीएम निखिल बी त्रिवेदी ने संघ के महामंत्री अभिषेक सिंह को उनकी सभी मांगों पर गंभीरता से विचार करने और समाधान करने का आश्वासन दिया। इस आश्वासन से संघ के नेताओं और स्थानीय लोगों में उम्मीद जगी है कि उनकी समस्याओं का समाधान जल्द ही हो सकता है।वार्ता में प्रबंधन कि ओर से एजीएम परवेज आलम,एपीएम डीके सिंह,पीओ संजीव कश्यप,एके पांडेय संघ कि ओर से भोला यादव, राम बाबू सिंह, राजु यादव,शिकनदर पासवान, गौतम देव, सन्तोष साव ,अनिमेष सिंह, अजय सिंह,दीपक सिंह,रूपक सिन्हा मनटु माली चिकु सिंह,बंटी सिंह,धनंजय सिंह आदि थे।

लोदना क्षेत्र में स्कानिया डम्पर पलटा, चालक घायल

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

झरिया : लोदना क्षेत्र के कुजामा देव प्रभा आउटसोर्सिंग परियोजना से बिना नंबर प्लेट के ओबी लोड कर निकली एक स्कानिया डम्पर शनिवार को झरिया सब्जी बगान छलछलीया धौडा मुख्य मार्ग के समीप पलट गया। इस घटना में चालक कारु घायल हो गया और वह केबिन में फंस गया था।

घटना के बाद आसपास के लोग जुट गए और उन्होंने पुलिस और आउटसोर्सिंग के साइड इंचार्ज को सूचित किया। लोदना ओपी के पुअनि बिरसा सवैया और साइड इंचार्ज सौरभ कुमार घटना स्थल पर पहुंचे और घायल चालक को बाहर निकालकर झरिया के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया।घटना से स्थानीय लोगों में आउटसोर्सिंग और बीसीसीएल प्रबंधन के प्रति काफी आक्रोश है। लोगों का कहना है कि घनी आबादी के बीच भारी वाहनों का परिचालन होता है, जिससे घटना की आशंका बनी रहती है। गनीमत थी कि उस समय कोई राहगीर नहीं गुजर रहा था, नहीं तो बड़ी घटना घट सकती थी। बताया जाता है कि परियोजना से ओबी लोड कर स्कानिया डम्पर सुराटांड की ओर ओबी गिराने जा रहा था, तभी छलछलीया धौडा सड़क के पास अचानक वाहन पीछे की ओर ढुलने लगा और पलटी मार दिया।

संक्षिप्त खबर

केशलपुर में पहलगाम हमले के खिलाफ भाकपा-माले ने निकाला कैंडल मार्च

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

कतरास : भाकपा-माले कतरास केशलपुर कुम्हार टोला अंचल कमेटी के द्वारा पहलगाम में हुए शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए कैंडल मार्च किया गया. कैंडल मार्च के दौरान भाकपा-माले पोलित ब्यूरो सदस्य हलधर महतो ने कहा कि इस हमले से या सिद्ध होती है कि नरेंद्र मोदी द्वारा कहा गया झूठ जुमला देश की सुरक्षा हमारी हाथ में है. मोदी है तो मुमकिन है सब झूठा सिद्ध हुआ है. आज देश में आतंकवादियों का बोलबाला है आए दिन देश में आतंकवादी हमले हो रहे हैं. पूरे देश में अशांति फैली हुई है और नरेंद्र मोदी हिंदू मुस्लिम राजनीति में लगा हुआ है.गृह मंत्री अमित शाह इस्तीफा दे क्योंकि इन्होंने अभी तक अपनी कोई जिम्मेवारी नहीं ली है.सरकार, राष्ट्रपति एवं सुप्रीम कोर्ट से भी निवेदन है मामले की उचित जांच किया जाए. आतंकवादियों को जल्दी से जल्दी हिरासत में लिया जाए.कैंडल मार्च में कपूर पंडित, शंकर पंडित, बजरंगी प्रजापति, लकी बेसरा आदि उपस्थित थे.

खुदिया कोलियरी के सहायक प्रबंधक के तानाशाही के खिलाफ यूनियन ने तीन घंटे तक उत्पादन किया ठप्प

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

निरसा : आज खुदिया कोलियरी के मजदूरों ने कोल माइंस वर्कस यूनियन के नेतृत्व में करीब 3 घंटे तक उत्पादन को बंद रखा. खुदिया कोलियरी में आए दिन मजदूर और मैनेजमेंट के बीच प्रॉब्लम देखा जा रहा है. खुदिया कोलियरी के सहायक प्रबंधक अपने मजदूर के साथ रिश्ता बनाने में असफल साबित हो रहे हैं, इसी कारण है कि का असिस्टेंट मैनेजर हंसदा साहब तानाशाही चरमसीमा पर है, वो बेवजह, काम करने के बाद भी वार्निंग, चार्जशीट और चिट्ठी देते रहते है. हांसदा साहब से पूरा खुदिया कोलियरी का मजदूर परेशान हे और उनको खुदिया कोलियरी से ट्रांसफर करने की मांग कर रहे हैं. मजदूरों का कहना है कि खुदिया कोलियरी में सुरक्षा भगवान भरोसे है .खदान में वेंटिलेशन ठीक से नहीं हो रहा है, ड्रीलर को मास्क नहीं दिया जा रहा है. टगर ऑपरेटर से दस दस पिलर टगर ऑपरेट कराया का रहा है,जिससे टगर ऑपरेटर का हाथ में दर्द हो जाता ह. फिर भी उसको छोड़ा नहीं जाता है. असिस्टेंट मैनेजर खदान नहीं जाते हैं, पीट सेफ्टी कमिटी का बैठक ठीक से नहीं हो रहा है। मजदूरों से जबरजस्ती ऊपर में सिग्नेचर करा लिया जा रहा है, पीने का पानी तक नहीं है.डाक डिस्पैच में आदमी नहीं है,इसके बावजूद मजदूर इतना कॉम्प्रोमाइज कर के 48 गाड़ी प्रोडक्शन कर के दे रहा है, और मजदूर अपना काम कर के खदान से 3 बजे उठ रहा है तो उसको वार्निंग चार्जशीट दे दिया जाता हे. अब सवाल है कि मजदूर सुरक्षा से समझौता कर के उत्पादन क्यों करेगा और वार्निंग को विथड्रॉ किया जाए के सवाल पर कोल माइंस वर्कर्स यूनियन के बैनर तले मजदूरों ने उत्पादन बंद कर दिया. मैनेजमेंट के रिप्रेजेंटेटिव ने मजदूरों को कहा कि समस्या का समाधान जल्द कर लिया जाएगा और वार्निंग वापस कर लिया जाएगा. जिससे मजदूर शांत हुए और अपना प्रोडक्शन चालू किया. मौके पर कृष्णा सिंह, जगदीश शर्मा, बिपिन, संजीत राउत, शिव जी तुरी, मोहन, निताई बाउरी सैकड़ों मजदूर उपस्थित थे.

कुमारधुबी ओवरब्रिज पर पुरानी रंजिश में दो युवक को चाकू मार किया गया लहूलुहान

गंभीर रूप से घायल दोनों युवकों को इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया, पुलिस जांच में जुटी

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

निरसा : कुमारधुबी ओवरब्रिज के ऊपर शाम करीब 8.30 बजे पहले से घात लगाए 8-10 की संख्या में मैथन निवासी युवकों पर चाकू से जानलेवा हमला कर दिया गया.जिसमें मैथन मेन गेट निवासी गौरव कुमार एवं अर्णव चौबे गंभीर रूप से घायल हो गए.जिन्हे बेहतर इलाज के लिए दुगार्पुर एवं धनबाद रेफर कर दिया गया. घटना की सुचना मिलते ही कुमारधुबी पुलिस मौके पर पहुंच जानकारी लेने में जुट गई हैं.घटना के संबंध में आंशिक रूप से घायल प्रशांत सिंह एवं प्रियांशु कुमार सिंह ने बताया की तीन चार माह पूर्व मैथन में कुछ बातों को लेकर कहासुनी हुई थी. आज हमलोग संजय चौक स्थित जिम से चिरकुण्डा जा रहे थे कि तभी कुमारधुबी ओवरब्रिज पर पहले से घात लगाए मैथन मोड़ के युवक रोककर मारपीट करने लगे. हमलोग भी बचाव में उनको मारने लगे, तभी एक युवक चाकू निकालकर हमला कर दिया. जिसमें दो साथी गौरव कुमार एवं अर्णव चौके गंभीर रूप से घायल हो गए.पुलिस मामले की जांच में जुट गई है.

मुगमा क्षेत्रीय स्टोर के दो कर्मचारी पर महिलाकर्मी ने लगाया दुर्व्यवहार का आरोप

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

निरसा : मुगमा क्षेत्रीय स्टोर में जनरल असिस्टेंट के पद पर कार्यरत इन्दु कुमारी के साथ वहीं पर पदस्थापित आशुतोष चौधरी, मैनेजमेंट ट्रेनी और जनरल असिस्टेंट जीतेन्द्र कुमार ने किया दुर्व्यवहार. इस संबंध में महिलाकर्मी ने मुगमा क्षेत्र के महाप्रबंधक को एक शिकायत पत्र देकर उक्त दोनों के विरुद्ध कार्रवाई की मांग की है. पत्र की प्रति राष्ट्रीय महिला आयोग और अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष को भी दी गई है. साथ ही ईसीएल के निदेशक (एच-आर) को भी दिया है. बीसीकेयू के केन्द्रीय सचिव सह मुगमा क्षेत्रीय अध्यक्ष आगम राम के साथ रामजी यादव, दीपक सिंह और हरे राम ने घटना की निन्दा करते हुए उचित कार्रवाई की मांग किया है.

आउटसोर्सिंग कंपनी के जीएम से रंगदारी को लेकर धमकी देने के मामले में कांग्रेस नेता शेख गुड्डू गिरफ्तार

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

कतरास : मधुबन पुलिस ने एक बार फिर से फिल्मी स्टाइल में शुक्रवार की देर रात खरखरी बस्ती निवासी सह कांग्रेस नेता शेख गुड्डू को रंगदारी मांगने और लेवी के लिए धमकाने को लेकर गिरफ्तार किया है. मामला हिलटॉप आउटसोर्सिंग कंपनी से संबंधित बताया जा रहा है.खरखरी बस्ती निवासी शेख गुड्डू एक बार फिर पुलिस के गिरफ्त में है,हिलटॉप आउटसोर्सिंग कंपनी के महाप्रबंधक अबोध कुमार ठाकुर ने मधुबन थाना में लिखित शिकायत देकर मामला दर्ज कराया है.अबोध ठाकुर का कहना है कि खरखरी बस्ती निवासी

शेख गुड्डू ,शेख जहांगीर, नारायणधौडा निवासी उमाशंकर पासवान,सहित सिनीडीह निवासी विजय साव ने मुझसे पांच लाख रुपए की रंगदारी मांगी है. रंगदारी नहीं देने पर बुरे परिणाम भुगतने तथा हिलटॉप आउटसोर्सिंग का काम नहीं होने देने की बात कही है. जिसके बाद से पुलिस प्रशासन हरकत में आयी और बाघमारा एसडीपीओ पुरुषोत्तम कुमार सिंह के नेतृत्व में शुक्रवार की रात को मधुबन, सोनारडीह , धमाबांध, कतरास, राजगंज, लोयाबाद सहित कई थानों की पुलिस ने शेख गुड्डू के खरखरी स्थित आवास को देर रात को पूरी तरह घेर लिया. संयोगवश शेख गुड्डू उस समय घर पर नहीं था, पुलिस को उसके घरवालों से पता चला कि शेख गुड्डू बोकारो की तरफ भागा है.पुलिस उसको गिरफ्तार करने के लिए बताए गए स्थान पर बोकारो पहुंची तो गुड्डू वहां भी नहीं मिला.पुलिस फिर एक बार उसके घर खरखरी आयी और इसी बीच नारायण धौडा के आगे राजगंज महुदा फोर लेन एनएच 32 पर उसे गिरफ्तार कर थाने ले आयी.वहां से पूछताछ के लिए पुलिस राजगंज थाना ले गई, जहां पुलिस की एक टीम केस से संबंधित जानकारी ले रही है.

पुलिस ने हिलटॉप आउटसोर्सिंग कंपनी के महा प्रबंधक के शिकायत पर शेख गुड्डू , शेख जहांगीर, उमाशंकर पासवान,विजय साव के विरुद्ध रंगदारी मांगने ,फोन पर धमकी देने का कांड संख्या 55/25 मामला अंकित कर जांच पड़ताल कर रही है.इधर गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने शेख गुड्डू को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है.शेख गुड्डू के साथ कांड संख्या 1/25 के नामजद अभियुक्त सचिन ग्याली को भी जेल भेज दिया है.आपको बता दे कि बीसीसीएल प्रबंधक ने एमडीओ मोड़ से खरखरी कोलियरी की भूमिगत खदानों को निजी कंपनी हिलटॉप आउटसोर्सिंग को दिया है. बीसीसीएल प्रबंधन ने जब से खरखरी कोलियरी को हिलटॉप आउटसोर्सिंग कंपनी को दिया है तब से विवादों से इसका चोली दामन का साथ रहा है.

इससे पूर्व ही 9 जनवरी को धमाबांध थाना अंतर्गत बाबूडीह में आउटसोर्सिंग कंपनी में वर्चस्व स्थापित करने को लेकर गिरिडीह सांसद चंद्रप्रकाश चौधरी समर्थकों और कारू यादव समर्थकों के बीच खूनी संघर्ष हुआ था. जिसमें लगभग दो दर्जन दो पहिया वाहनों को आग के हवाले किया गया था. खरखरी बाजार स्थित आजसू पार्टी के आवासीय कार्यालय में आगजनी भी हुई थी. जिसकी पड़ताल करने गईं पुलिस पर असामाजिक तत्वों पर पथराव भी हुआ था, जिसमें बाघमारा एसडीपीओ पुरुषोत्तम कुमार सिंह भी घायल हुए थे.

अब घर में बैठे कर सकेंगे केस फाइलिंग व जान सकेंगे मुकदमों की स्थिति

धनबाद में अधिवक्ता व अधिवक्ता लिपिकों को दी गई ई -फाईलिंग की ट्रेनिंग

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

धनबादः ई-कोर्ट्स भारत में न्यायिक प्रक्रिया को डिजिटलीकरण और तकनीकी रूप से सक्षम बनाने की एक पहल है.यह परियोजना ई-गवर्नेंस के तहत न्यायपालिका में पारदर्शिता, दक्षता और तेजी लाने के लिए माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा वर्ष 2007 में शुरू की गई है. इसके तहत न्यायालयों में ई-फाइलिंग, ऑनलाइन केस ट्रैकिंग, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और डिजिटल दस्तावेज प्रबंधन को बढ़ावा दिया जा रहा है. उपरोक्त बातें शनिवार को धनबाद सिविल कोर्ट में आयोजित ई कोर्टस ट्रेनिंग प्रोग्राम के दौरान धनबाद के प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश वीरेन्द्र कुमार तिवारी ने कहा. इसके पूर्व कार्यक्रम का

उद्घाटन दीप प्रज्जवलित कर जिला एवं सत्र न्यायाधीश वीरेंद्र कुमार तिवारी , जिला एवं सत्र न्यायाधीश, पारस कुमार सिन्हा, के . के शुक्ला, दुर्गेश चन्द्र अवस्थी , मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी आरती माला ,अवर न्यायाधीश मयंक तुषार टोपनो एवं रजिस्ट्रार आइ जेड खान ने किया.अधिवक्ता एवं लिपिकों को संबोधित करते हुए मास्टर ट्रेनर धनबाद के जिला एवं सत्र न्यायाधीश स्वयंभू ने ऑनलाइन संबोधित करते हुए कहा कि ई कोर्ट सेवा का उद्देश्य लंबित मामलों को कम करने और न्यायिक प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाना,नागरिकों की पहुंच आसान बनाना , लोगों को घर बैठे अपने केस की स्थिति जानने, आदेश डाउनलोड करने और डिजिटल माध्यम से सुनवाई में भाग लेने की सुविधा, पारदर्शी और जवाबदेही तरीके से प्रदान करना है। क्या क्या सुविधा मिलेगी ई कोर्ट से अवर न्यायाधीश सह सचिव डालसा मयंक तुसार टोपनो ने कहा कि मास्टर ट्रेनर डीएसए अतुल वर्मा ,दीप नारायण एवं जय केसरी ने लोगों को ट्रेनिंग देते हुए बताया कि केस इंफॉर्मेशन सिस्टम (सीआईएस) न्यायालयों में मामलों के रिकॉर्ड को डिजिटल रूप से प्रबंधित करना.नेशनल जुडिशियल डेटा ग्रिड(एनजेडीजी) न्यायपालिका में पारदर्शिता लाने के लिए केस डेटा का एक केंद्रीय डेटाबेस तैयार करना। ई-फाइलिंग (ई फाईलिंग) वकीलों और पक्षकारों के लिए ऑनलाइन याचिका दायर करने की सुविधा प्रदान करना.वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग (वी सी) सुनवाई जेलों, पुलिस स्टेशनों और दूरस्थ स्थानों से न्यायालय में पेशी कराना. ऑनलाइन केस ट्रैकिंग और आदेश डाउनलोड करना है।

मजबूरी को कमजोरी नहीं ताकत बनाएं: सांसद ढुल्लू

आरएस फिजिकल मालकेरा को मिला व्यायाम उपकरण

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

कतरास : कोयलांचल क्षेत्र की युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने की दिशा में एक और कदम उठाते हुए धनबाद सांसद ढुल्लू महतो ने आरएस फिजिकल बीटीएम हाई स्कूल, मालकेरा को अपनी व्यक्तिगत निधि से हाई जम्प के लिए गद्दा और विभिन्न व्यायाम उपकरण भेंट किए. इस अवसर पर शनिवार प्रातः सांसद मालकेरा पहुंचे और इन उपकरणों का उदघाटन करते हुए कहा कि मजबूरी को कमजोरी नहीं ताकत बनाएं. सांसद ढुल्लू महतो ने कहा कि आपके भीतर जो जुनून और क्षमता है, वही आपको कामयाबी की ऊंचाइयों तक ले जाएगी. आपके समर्पण और मेहनत को देखकर हम भी संकल्पित हैं कि प्रशिक्षण के लिए किसी प्रकार की कमी नहीं रहने देंगे. अगर और किसी उपकरण की आवश्यकता है तो उसकी सूची हमें दें, हम उसे भी उपलब्ध कराएंगे. सांसद ने कोयलांचल और लोहांचल की किसी भी प्रतिभा को संसाधनों के अभाव में पीछे नहीं रहने देने का भरोसा दिया.उन्होंने युवाओं से ईमानदारी और अनुशासन के साथ तैयारी करने की अपील की और कहा कि मंजिल आपके कदम चूमेगी.

सरस्वती विद्या मंदिर सिनीडीह में कक्षा द्वादश के भैया बहनों को दी गई विदाई

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

कतरासः सरस्वती विद्या मंदिर सिनीडीह के प्रांगण में दीक्षा समारोह का आयोजन किया गया. कक्षा एकादश के भैया बहनों के द्वारा कक्षा द्वादश के भैया बहनों की विदाई दी गई.कार्यक्रम की शुरूआत प्रधानाचार्य राकेश सिन्हा, कोषाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद एवं प्रबंधकार्यकारिणी समिति सदस्य उत्तम ग्याली द्वारा दीप प्रज्वलन करके किया गया. इस अवसर पर रसायन शास्त्र के आचार्य राजेश कुमार ने कहा कि द्वादश के बाद भैया- बहन अपने लक्ष्य को निर्धारित कर उस दिशा में सार्थक रूप से परिश्रम करते रहें. लक्ष्य को साधकर किया गया कार्य आपको सफलता की ओर ले जाएगा. साथ ही कामयाबी प्राप्त करने के बाद अपने संस्कार को अपने अंदर समेटे रहें. अपने अनुभव का लाभ आपके जाने के बाद भी विद्यालय को मिलता रहे.आप विद्या भारती के पूर्व छात्र परिषद से जुड़े रहें.समिति सदस्य उत्तम गयाली ने कहा कि विद्यालय से विदाई तो एक औपचारिकता है, परन्तु आप विद्यालय से पूर्व छात्र के रूप में सतत जुड़े रहें एवं जब भी अवसर मिले विद्यालय आकर भैया-बहनों को अपना अनुभव साझा करते रहें. विद्यालय के संस्कार को सदैव अपने जीवन में धारण कर आगे बढ़ते रहें. प्रधानाचार्य श्री राकेश सिन्हा ने अपने उद्बोधन के क्रम में कहा कि आप जिस प्रकार का अनुशासन का पालन विद्यालय में किया उसे जीवन में धारण कर आगे बढ़ते रहें. मुश्किल परिस्थितियों में भी आप लक्ष्य को प्राप्त करेंगे.

ड्यूटी आने के दौरान यूजी ड्रेसर मजदूर की हार्ट अटैक से मौत

पियोर बेनीडीह खदान में कार्यरत था मृतक सुभाष भूमिज, पत्नी को मिला नियोजन

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

बाघमारा : बरोरा एरिया की एएमपी कोलियरी की पियोर बेनिडीह भूमिगत खदान में कार्यरते यूजी ड्रेसरे` सुभाष भूमिज (47) की मौत शनिवार को ड्यूटी आने के क्रम में हार्ट फेलियर होने उनकी मौत हो गयी. वह दुग्धो कॉलोनी में रहता था. सुबह 7.45 बजे ड्यूटी आने के क्रम वह रास्ते में ही गिरे बेहोश हो गया था. परिजन इलाज के लिए उसे डुमरा रीजनल अस्पताल ले गया. जहां चिकित्सकों ने कंजेस्टिव हार्ट फेलियर होने की वजह से उनकी मौत होने की पुष्टि की. उनके छोटे-छोटे दो लडका एवं दो पुत्री है. संयुक्त मोर्चा का आरोप है कि सुरक्षा में कमी के कारण आये दिन मजदूरों की मौत हो रही है. मजदूरों को सही समय पर उचित इलाज

नहीं हो पा रहा है. गंभीर रोगियों को भी बड़े अस्पताल में रेफर नहीं किया जा रहा है. नियोजन के लिए शव के साथ जीएम कार्यालय में धरना पर बैठे संयुक्त मोर्चा अस्पताल से शव लेकर परिजन जीएम कार्यालय पहुंचे .मृतक की पत्नी को प्रोविजनल नियोजन की मांग को लेकरे संयुक्त मोर्चा शव के साथ धरना पर बैठ गयें. प्रबंधन द्वारो प्रोविजनल नियोजन देने में आनाकानी करने परे युनियन प्रतिनिधियों ने कोलियरी का चक्का जाम करने की चेतावनी दीं. करीब

छह घंटे के बादे मुख्यालय प्रबंधने के हस्तक्षेप पर क्षेत्रीय प्रबंधन युनियन प्रतिनिधियों के साथ वार्ता की. मृतक की पत्नी उर्मिला देवी को दामोदा कोलियरी में ही पदस्थापन करते हुए प्रोविजनल नियुक्ति पत्र दिया गया. इसके अलावो परिजनों द्वारा आवश्यक कागजात जमा करने के उपरान्त अन्य राशि का भुगताने करने का आश्वासन दिया गया. इसके बाद परिजन शव को उठाकर दाह संस्कार के लिए घर ले गया. मौके परे एजीएम जीके मेहता, पीओ काजल सरकार, कार्मिक प्रबंधक हेमंत कुमार हेना, प्रबंधक पंचम पांडेय, सहायक प्रबंधके संतोष कुमार सिन्हा,संदीप शर्मा तथा युनियन प्रतिनिधियों में जेके झा, लगनदेवे यादव, संतोष गोराई, पालचंद महतो, उमाकांते राय, एनडी पांडेय, नवल किशोर महतो, नंदूराम दुसाध, जगदीश रवानी, केशव पासवान, रामस्वरूप मिश्रा,अमरेन्द्र कुमार, मनोज मोदी, दयाल महतो, मनोज साव, एचएन प्रसाद गांधी, प्रेम लाल रजवार आदि मौजूद थे.

उपायुक्त के निर्देश पर एडीएम लॉ एंड आर्डर ने धनबाद प्रेस क्लब के पदाधिकारियों के साथ की वार्ता

दोषियों पर कार्रवाई करने का दिया आश्वासन

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

धनबादः उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी माधवी मिश्रा के निदेर्शानुसार एडीएम लॉ एंड ऑर्डर पीयूष सिन्हा ने शनिवार को धनबाद प्रेस क्लब के पदाधिकारियों के साथ वार्ता की.वार्ता के दौरान धनबाद प्रेस क्लब के पदाधिकारियों ने एडीएम को विगत 16 अप्रैल 2025 को रणधीर वर्मा चौक पर पत्रकारों के साथ हुए दुर्व्यवहार की पूरी घटना से अवगत कराया. साथ ही बताया कि 17 अप्रैल 2025 को घटना में शामिल लोगों के विरुद्ध धनबाद थाना में प्राथमिकी भी दर्ज कराई है.

लेकिन अभी तक आरोपियों की

गिरफ्तारी नहीं हुई है.वहीं एडीएम ने इस संबंध में धनबाद थाना के इंस्पेक्टर राम नारायण ठाकुर से फोन पर बात की और मामले में की जा रही कार्रवाई की प्रगति के बारे में जानकारी प्राप्त की. एडीएम ने आश्वासन दिया कि पत्रकारों के साथ हुई घटना में जिला प्रशासन अपने स्तर से दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई करेगा.बैठक में धनबाद प्रेस क्लब के अध्यक्ष संजीव झा, महासचिव अजय प्रसाद, वरीय पत्रकार प्रियेश सिन्हा, वरीय उपाध्यक्ष शशि भूषण राय, उपाध्यक्ष शरद पांडेय व सुरेंद्र यादव, सचिव संजय चौरसिया, राम मूर्ति पाठक, मोहम्मद शाहिद मौजूद थे.

पहलगाम में आतंकी हमले के खिलाफ बाघमारा नागरिक परिषद ने निकाला आक्रोश मार्च

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

बाघमारा : पहलगाम घटना के विरोध में बाघमारा नागरिक परिषदे के द्वारा शनिवार को शाम लुती पहाड़ी अंबेडकर चौक से बाघमारा इंदिरा चौक तक आक्रोश मार्च निकाला. श्रद्धांजलि सभा कर मारे गये लोगों के चलचित्र पर पुष्प अर्पित श्रद्धांजलि दी. इसके दौरान लोगों ने आतंकवाद व पाकिस्तान मुदार्बाद के नारे लगाये गयें. लोगों ने हाथों में आतंकवाद मुदार्बाद एवं इस नरसंहार का बदला लिया जायेगा, ना छोड़ा है ना छोड़ेंगे, हर मौत का बदला लेंगे.स्लोगन लिखे तख्तिया लेकर पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद के खिलाफ नारा लगाते चल रहे थे. पूरे रास्ते आतंकवाद मुदार्बाद, पाकिस्तान मुदार्बाद के नारे लग रहे थे. इंदिरा चौक पहुंचकर आतंकी हमले में मृत लोगों की आत्मा की शांति के मौन रखा गया.वक्ताओं ने कहा कि आतंकी आतंकी हमला अत्यंत निंदनीय व कायरतापूर्ण है. हम इस घटना

में मृत सभी लोगों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं. इस घटना से पूरा देश मर्माहत व आक्रोशित है. यह हमला देश की एकता और अखंडता पर प्रहार करने का दुस्साहस है. घटना में हमारे जो भी लोग शहीद हुए हैं, उनके प्रति गहरी संवेदना है. देशद्रोही शक्तियां जो पाकिस्तान एवं आइएसआइ के इशारे पर काम कर रही हैं, उनपर कठोर कारवाई सुनिश्चित करने की आवश्यकता है. ऐसी आतंकी घटना के विरोध देश एकजुट है. मौके परे विजय शर्मा, लगनदेव यादव, बैजनाथ यादव, जेके झा, अशोक मिश्रा,गौतम गोप, सीताराम चौधरी, संजय पांडेय, सुरेश चौहाने, पप्पू सिंहे, पोरेश चौबे, दिनेश ठक्कर, संजय पांडेये, गोपाल चंद्र गोप, विपिन ठक्कर, विनोद रवानी, चंदन मिश्रा, खुदु मंडल, विशु रवानी, इंदल सिंह, दिनेश ठक्कर, सत्यनारायण पांडेय,धनेश्वर ठाकुर, मनोज शर्मा, शिवकुमार सिंह, शिवशंकर यादव, राजू केशरी, गोलू शर्मा, पुरूषोत्तम चंद्रवंशी, बचन भुइयां, सौखी मांझी आदि मौजूद थे.

नई पत्र वार्ता पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक *राज किशोर सिन्हा के द्वारा डी.बी. कॉर्प लिमिटेड, भास्कर प्रिंटिंग प्रेस गोविंदपुर मेन रोड, अशोकनगर के जी आश्रम, धनबाद से मुद्रित एवं छठ तालाब विकास नगर कतरास रोड,धनबाद से प्रकाशित। फोन न.7004113115, 9334368784, 7004500339, 7004893985. प्रधान संपादक : अनुज कुमार सिन्हा। *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। निदेशक अनस रहनुमा। ई-मेल - naipatrawartajharkhand@gmail.com.आर.एन.आई नं.JHAHIN/2015/63780.